Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

j Foundation

Gurukul,Kan

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
079409
65 33/23
68 44/18
1944 1958
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद

महासम्मेलन पत्रिका

079409

पौष
२०१४

प्रधान सम्पादक—कविराज स्वामी चेतनानन्द चिदाकाशी
उप सम्पादक—कविराज हरिकृष्ण सहगल
संस्कृत विभाग सम्पादक—कविराज नेत्रपाल शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो हजार से भी अधिक शास्त्रोक्त एवं पेटेण्ट औषधियाँ बनाने वाली उत्तरीय भारत की ८८ वर्ष की प्राचीन रसायन शाला

राजवैद्य शीतल प्रसाद एण्ड सन्स

देहली : नागपुर : कानपुर : इन्दौर

राजवैद्य रसायनशाला में आयुर्वेद के गहरे अनुभवी वैद्यों एवं औषधि निर्माणकला के विशेषज्ञ कैमिस्टों की देखरेख में आयुर्वेद शास्त्रों के मूलभूत सिद्धान्तोंके अनुसार औषधियां तैयार की जाती हैं।

केन्द्रीय और राजकीय मन्त्रियों, संसद सभासदों, डायरेक्टर आफ आयुर्वेद प्रमुख डाक्टरों, वैद्यों एवं आयुर्वेदिक सम्मेलनों द्वारा हमारी औषधियों की प्रशंसा की गई है। विभिन्न प्रदर्शनियों एवं विज्ञान परिषदों ने प्रशंसा पत्र दिए, स्वर्णपदक और रौप्यपदक भेंट किए और कहा है कि "वास्तव में राजवैद्य रसायनशाला की औषधियां बहुत गुणकारी होती हैं" इसके अतिरिक्त राज्य सरकारों, उपराजकीय संस्थाओं, म्युनिसिपल कमेटियों व जनपद सभाओं के दवाखानों में हमारी दवा बड़ी तादाद में प्रयोग की जाती हैं। शहरों व कस्बों में १००,००० से अधिक हमारे औषधि विक्रेता हैं।

हमारी दवाएँ न सिर्फ हिन्दुस्तान व पाकिस्तान में ही बल्कि, नेपाल, बर्मा, सीलोन, दक्षिण अफ्रीका, पर्शियनगल्फ, अदन, फिजीआईलैण्ड आदि में इस्तेमाल की जाती हैं।

वैद्यों एवं औषधि विक्रेताओं से

हम अपनी रसायनशाला द्वारा निर्मित आयुर्वेदिक एवं पेटेन्ट औषधियों की बि के लिए मुख्य-मुख्य स्थानों पर बिक्री केन्द्र खोल रहे हैं।

फरनीचर, दुकान किराया, वैद्य का वेतन आदि समस्त सुविधायें दी जायेंगी। वैद्य बन्धु अथवा औषध-विक्रेता हमें सहयोग देना चाहते हैं, वह अपना पूरा परिचय हुए हम से पत्र व्यवहार करें। बिक्री केन्द्र के लिए सहायक वैद्यों की आवश्यकता हैं। आ दनपत्र भेजें—

राजवैद्य शीतल प्रसाद एण्ड सन्स

चांदनी चौक, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

		पृ० संख्या
...नवारण—सम्पादकीय		१
...ी वायोटिक्स, सल्फाड्रग्ज़ और ऐस्प्रीन के योग	—क० श्री हरिकृष्ण सहगल	७
...ौषधि ...त्रं प्रजायते	—क० श्री उपेन्द्रनाथ दास	९
...मूलभू... और पुराने रोगों के दूष्य सहित नाम को ...ने में एक सरल किन्तु अव्यर्थ उपाय	—श्री ललिताप्रसाद पाण्डेय	१७
...युर्वेद ...ी-बूटियों में पांच अमृत	—श्री मूलनारायण मालवीय	२०
...प्रशंस... प्रतिश्याय	—श्री लेखराम वैद्य	२३
...र्णपद... ...र्वेद की देन	—श्री अत्रिदेव	२५
...ला द... भा० आयुर्वेद महासम्मेलन स्थायी समिति का कार्यविवरण		३३
...जकी... भा० आयुर्वेद विद्यापाठ केन्द्रीय प्रबन्धक समिति के अधिवेशन का ...दवा... विवरण		४०
...हम... ...र्वेद-लोक		४८

१९५७ वर्षीय मतदाता सूची

अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन की १९५७ वर्षीय मतदाता सूची छपकर तैयार हो ...है। इस सूची में महासम्मेलन विद्यापीठ के १४२८ सदस्यों (मतदाओं), १८ प्रादेशिक ...ओं एवं २७ विद्यापीठ सम्बद्ध विद्यालयों के नाम पूरे पते सहित संग्रहीत हैं। आयुर्वेदीय ...ओं, व्यवसाइयों, प्रकाशकों, औषध निर्माणशालाओं एवं विक्रेताओं के बहुत काम की ...है। मूल्य साधारण डाक ले १=) रजिस्टर्ड डाक से १॥=) है।

प्राप्ति स्थान :—

अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन
महालक्ष्मी मार्केट, चांदनी चौक, दिल्ली।

...ार भ्रमोत्पा-
...र्य विवश होना पड़ा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन-विद्यापीठ कार्यालय
महालक्ष्मी मार्केट, चांदनी चौक, दिल्ली।

१९५८ वर्षीय अवकाश सूची

नव वर्षारम्भ	बुधवार	१-१-५८	१ दिन
मकर संक्रान्ति	सोमवार	१३-१-५८	१ दिन
वसन्त पंचमी	शनिवार	२५-१-५८	१ दिन
शिवरात्रि	सोमवार	१७-२-५८	१ दिन
होली	बुधवार	५-३-५८	१ दिन
दुलहण्डी	बृहस्पतिवार	६-३-५८	१ दिन
दुर्गाष्टमी	शुक्रवार	२८-३-५८	१ दिन
रामनवमी	शनिवार	२९-३-५८	१ दिन
सूर्यग्रहण	शनिवार	१९-४-५८	१ दिन
गंगा दशहरा	बुधवार	२८-५-५८	१ दिन
निर्जला एकादशी	वृहस्पतिवार	२९-५-५८	१ दिन
व्यासपूजा	मंगलवार	१-७-५८	१ दिन
स्वतन्त्रता दिवस	शुक्रवार	१५-८-५८	१ दिन
रक्षाबन्धन	शुक्रवार	२९-८-५८	१ दिन
जन्माष्टमी	शनिवार	६-९-५८	१ दिन
अनन्त चतुर्दशी	शुक्रवार	२६-९-५८	१ दिन
गांधी जयन्ती	वृहस्पतिवार	२-१०-५८	१ दिन
दुर्गाष्टमी	सोमवार	२०-१०-५८	१ दिन
दशहरा, भरतमिलाप	मंगलवार-बुधवार	२१-१०-५८ से	
	वृहस्पतिवार	२३-१०-५८ तक	३ दिन
शरद पूर्णिमा	सोमवार	२७-१०-५८	१ दिन
दिवाली तथा गोवर्धनपूजा	सोम०तथा मं०	१०,११-११-५८	२ दिन
भ्रातृद्वितीया	बुधवार	१२-११-५८	१ दिन
गंगा स्नान	बुधवार	२६-११-५८	१ दिन
बड़ा दिन	वृहस्पतिवार	२५-१२-५८	१ दिन
			२७ दिन

सीताराम मिश्र
मंत्री
अ० आयुर्वेद विद्यापीठ

वामनराव दी० वैद्य
प्रधान मन्त्री
अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ धन्वन्तरयेनमः ॥

यत्प्रभापटलोद्भासि भाषतेऽद्यापि भारतम् ।
आयुर्वेदात्मकं ज्योतिः शाश्वतं नः प्रकाशताम् ॥

आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका

(अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन का मासिक मुख-पत्र)

प्रधान सम्पादक—कविराज स्वामी चेतनानन्द चिदाकाशी ।

उप-सम्पादक—कविराज हरिकृष्ण सहगल ।

सम्पादक संस्कृत विभाग—वैद्य श्री नेत्रपाल शर्मा शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य ।

पत्रिका कार्यालय—महालक्ष्मी मार्केट, चांदनी चौक, दिल्ली ।

तार का पता—"आयुर्वेद" दिल्ली

टेलीफोन : २८९०२

वर्ष ४५
अंक १

दिल्ली, पौष २०१४, जनवरी १९५८

वार्षिक ५)
एकप्रति ॥)

सम्पादकीय

भ्रम-निवारण

गत तीन वर्षों से कुछ व्यक्तियों को भ्रान्तिवश या किसी अन्य कारण से कुछ पत्रिकाओं में अनाप-शनाप लिखने की आदत सी पड़ गई है। यद्यपि इसका कुछ मूल्य उन्हें बम्बई में चुकाना पड़ा है तो भी यह रोग बढ़ता ही जा रहा है। उनके यह स्वीकार करने के पश्चात् कि "कुछ व्यक्तियों ने उन्हें उत्तेजित करने का प्रयास किया" तथा विशेषतया दिल्ली के सद्भावना-सम्मेलन के पश्चात् हम आशा रखते थे कि संस्था के मनोनीत पदाधिकारियों के सेवा-कार्य के प्रति उनका यह असौम्य व्यवहार समाप्त हो जायगा परन्तु अब वे एक कदम और बढ़ कर निरर्थक पत्रकबाजी पर उतारू हो गये हैं। ऐसा ही एक उदाहरण हमें एक वक्तव्य ता० १०-१२-५७ (जो वास्तव में झांसी से १४ दिन पश्चात् डाक में डाला गया) द्वारा मिला है। इस लेख के तथ्यरहित और भ्रमोत्पादक विचारों से ओत-प्रोत रहने के कारण हमें पुनः कुछ लिखने के लिये विवश होना पड़ा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताकि "मौनम् स्वीकृति लक्षणम्" वाली उक्ति महासम्मेलन के पदाधिकारियों पर चरितार्थ न हो जाय। ऐसी स्थिति में स्थायी समिति का एक प्रस्ताव भी हमारा पथ-प्रदर्शक है जो इस प्रकार है—"निश्चय हुआ कि कार्यालय से बिना पूछे कार्यकर्त्ताओं के ऊपर जो स्वतन्त्र आक्षेप पत्रिका से बाहर वितीर्ण किये जायें उनका उत्तर कार्यालय की ओर से कार्यकर्त्ताओं को देने का अधिकार स्वीकार किया जावे।"

अब मैं संदर्भाधीन वक्तव्य के मुख्य २ विषयों को लेता हूं। वक्तव्य के पहले चार अनुच्छेदों से यह आशय निकलता है कि उसके लेखक के "साधारण से निवेदन पर" स्थायी समिति की सभा में १५० सदस्य उपस्थित हुये तथा "महासम्मेलन के इतिहास में स्थायी समिति का यह, कदाचित् एकमात्र, ऐसा अधिवेशन हुआ है जिसमें इतनी बड़ी संख्या में सदस्यों की उपस्थिति हुई है जबकि ऐसे उदाहरण भी हैं कि महासम्मेलन के दक्षिण के वार्षिक अधिवेशनों में तक ("तक" से पहिले "में" कहना प्रत्यक्षतः लेखक की भूल है) २० से २५ सदस्यों ने भाग लिया" जो साद्यन्त अशुद्ध, अयुक्त, भ्रमोत्पादक और झूठा है। लेखक का यह भ्रम है जैसा कि परिशिष्ट १ से पाठकों को सुस्पष्ट हो जायगा। पहिले तो स्थायी समिति के विगत दिल्ली अधिवेशन में १५० सदस्यों ने भाग ही नहीं लिया क्योंकि वहां की उपस्थिति १२० सदस्यों की थी, जिनमें ५८ दिल्ली के स्थानीय सदस्य थे। दूसरे इतनी उपस्थिति-संख्या वाला स्थायी समिति का दिल्ली में यह पहिला अधिवेशन था (जिसका सेहरा वह लेखक अपने सिर पर बंधवाना चाहते हैं) यह कहना सरासर गलत है क्योंकि दिल्ली में अनेक ऐसे स्थायी समिति के अधिवेशन हुये हैं जिनमें सदस्य संख्या इससे भी अधिक रही। तीसरे लेखक को श्री प्रधान मन्त्री जी तथा श्री विद्यापीठ मन्त्री जी के निमन्त्रण पत्रों से अधिक महत्व अपने "साधारण से निवेदन" को इस प्रकार देना न्यायोचित प्रतीत नहीं पड़ता। चौथे कविराज श्री कुन्दनलाल जी खेतल के सद्भावना सम्मेलन के हार्दिक एवं अभूतपूर्व बड़े निमन्त्रण और उसके साथ ही प्रीतिभोज, श्री महासम्मेलनाध्यक्ष जी के लिये एक सम्मान समारोह और सहभोज तथा समागत वैद्यबन्धुओं के सम्मान में दो भोजों के निमन्त्रण कुल पांच निमन्त्रण और भी थे जिन्हें दृष्टि से ओझल नहीं किया जा सकता, और इसलिये एक "साधारण से निवेदन" की तथाकथित प्रतिक्रिया का गर्व प्रदर्शित करना शोभाजनक नहीं। पांचवे यह लिखना कि दक्षिण के वार्षिक अधिवेशन में २०-२५ सदस्यों ने भाग लिया नितान्त भ्रमोत्पादक है क्योंकि दक्षिण के ३९ वें, ४० वें, ४१ वें, तथा ४२ वें अधिवेशनों पर प्रतिनिधियों की संख्या बहुत बड़ी और सैंकड़ों रही। यदि वह लेखक दक्षिण, पूर्व और पश्चिम भारत की अपेक्षा उत्तर भारत के सदस्यों को ही महासम्मेलन के वास्तविक सदस्य समझते हैं तो बात दूसरी है—परन्तु ऐसी दूषित धारणा को पुष्ट एवं प्रतिपादित करना महासम्मेलन के वास्तविक अखिल भारतीय स्वरूप को ठेस पहुंचाने की चेष्टा से कम नहीं कहा जायगा।

महासम्मेलन के मूल संगठन पत्र में ये शब्द हैं—"आयुर्वेद महामण्डलं समस्तस्य भारतवर्षस्य" अतएव इसके कार्यसंचालन में दक्षिणोत्तर के भेदभाव खड़े करना और इससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर भारत के वैद्यों की बपौती समझना-समझाना बड़ा दुर्भाग्य होगा और ऐसी मनोवृत्ति संस्था के हितों के लिए घातक सिद्ध हो सकती है। अतएव हम तो ऐसे किसी प्रचार प्रोपैगण्डा की उपेक्षा ही करेंगे। भला हो वैद्यप्रवर श्री पार्थनारायण जी पण्डित का जिन्होंने महासम्मेलन से पिछड़ते हुए दक्षिण भारत के वैद्यसमाज को पुनः इस संस्था के आंचल में ले शास्त्रयुक्त से लाने का सफल प्रयास किया।

संदर्भाधीन पत्रक के चौथे तथा पांचवें पैरा म जो बात सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है वह यह है कि वह लेखक विद्यापीठ का विद्यालय दिल्ली में बनवाना चाहते थे और एतदर्थ उन्होंने ही एक मात्र सबसे बढ़कर प्रेरणा दी, जो युक्तिसंगत नहीं। महासम्मेलन-विद्यापीठ के सभी पदाधिकारी तथा अन्य प्रायः सभी वैद्यबन्धु यह कार्य हृदय से किया चाहते थे और चाहते हैं। यदि पदाधिकारीवर्ग इसका विरोधी होता तो यह विषय ही एजण्डा पर नहीं आ सकता था। पदाधिकारियों ने तो इसमें अपनी पूर्ण सहमति प्रकट की और अब वे एतदर्थ प्रयत्नशील भी हैं। इस योजना की "सर्वसम्मति से स्वीकृति" की बात छिपा कर और उसके स्थान पर "बहुमत" का उल्लेख करना भी उस सभा और उसके वास्तविक कार्यविवरण के प्रति अन्याय करने से कम नहीं। साथ ही उनका यह कहना कि "कुछ माननीय व्यक्तियों ने अधिवेशन में महाविद्यालय के महत्वपूर्ण कार्य को टालने का भी भरसक प्रयत्न किया" नितान्त असत्य है क्योंकि किसी एक सदस्य ने भी ऐसा प्रयत्न नहीं किया। इस प्रकार का निराधार विवरण प्रकाशित करना सभा का घोर अपमान है और इस सब विचार-विमर्श में स्वयं अनुपस्थित रहते हुए इस प्रकार अपनी वीरता का प्रदर्शन करना उस लेखक के लिए शोभनीय नहीं दीखता।

अपने वक्तव्य के छठे पैरा में आगामी वार्षिक अधिवेशन को श्री जगन्नाथ पुरी में सम्पन्न करने के विषय पर कुछ सदस्य महानुभावों के स्वतन्त्र विचार पर जिस प्रकार उस लेखक ने आक्षेप किया है वह नितान्त निन्दनीय है क्योंकि हमारे न्यायप्रिय और निष्पक्ष महासम्मेलनाध्यक्ष जी सहित यह उन सब सदस्यों के स्वतन्त्र विचार और मतपर कुठाराघात है जिन्होंने श्री जगन्नाथपुरी के पक्ष में अपना मत दिया। हम जानना चाहते हैं कि क्या सम्पूर्ण वैद्यसमाज को उस लेखक ने खरीद लिया है जो उनकी हाँ में हाँ ही मिलाई जाय और कोई अपना स्वतन्त्र मत भी व्यक्त न करे अथवा क्या वे लेखक महासम्मेलन के डिक्टेटर बनना चाहते हैं? मैं वैद्यसमाज को ऐसी प्रवृत्तियों से सचेत कर देना अपना पुनीत कर्त्तव्य समझता हूँ। आगामी अधिवेशन कहां हो इस पर सभा एकमत नहीं थी। वास्तव में उत्कल का निमंत्रण ४१ वें महासम्मेलन करनूल पर स्वीकार हो चुका था। ४२वें महासम्मेलन, बंगलोर, पर उत्कल प्रान्तीय वैद्य-सम्मेलन के प्रधानमन्त्री तथा अन्य प्रतिनिधि इन्फ्ल्युऐंजा महामारी से स्वयं ग्रस्त होने के कारण नहीं पहुँच सके थे। अतएव उनका पत्र आने पर उनका निमंत्रण पुनः स्थायी समिति में विधिवत् स्वीकृति के लिए रखा गया। महासम्मेलनाध्यक्ष स्वनाम धन्य श्री पं० अनन्त त्रिपाठी जी शर्मा इस विषय में उत्कल राज्य के मुख्यमन्त्री श्री हरेकृष्ण महताब जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से बात-चीत करके उनसे पूर्ण सहयोग का वचन भी प्राप्त कर चुके थे। महासम्मेलन के अर्द्ध-शताब्दी के इतिहास में अभी तक एक भी वार्षिक अधिवेशन उत्कल प्रदेश में नहीं हुआ था। महासम्मेलन के अधिवेशन पर श्री जगन्नाथजी के दर्शन का भी वैद्यबन्धु लाभ उठायें—ये सब विचार उत्कल के प्रतिनिधियों और इस निमंत्रण के पोषक वक्ताओं ने सभा के समक्ष रखे, जबकि दिल्ली के पक्ष में यही एक मुख्य बात थी कि यह भारत का केन्द्र है। इस स्थिति में यदि सदस्यों में मतभेद था तो यह किसी आक्षेप का विषय कम से कम किसी समतोल बुद्धि वाले व्यक्ति द्वारा तो नहीं बनाया जा सकता था और फिर इस विषय पर ही पदाधिकारियों की नीयत पर सन्देह करना तो उनके प्रति घोर असद्भावना और अन्याय का सूचक है, विशेषतया क्योंकि किसी निश्चय के बाद पदाधिकारियों का निजी कोई मत रहता ही नहीं और जो निश्चय बहुमत या सर्वसम्मति से सभा करे उसे ही कार्यान्वित करना पदाधिकारियों का कर्त्तव्य हो जाता है। सम्भवतः पाठकगण को विदित होगा कि आगामी अधिवेशन को दिल्ली में करने के निश्चय को लेकर कुछ सदस्यगण ईमानदारी से यह अनुभव करने लग गए थे कि दिल्ली और इर्द-गिर्द के लोग अपने अपने बहुमत के बल पर उड़ीसा से यह अन्याय करके महासम्मेलन के अखिल भारतीय स्वरूप को हानि पहुँचा रहे हैं और इस विषय पर जनमतसंग्रह (Referendum) की उन्होंने मांग की। परन्तु श्री सभापति जी तथा अन्य पदाधिकारियों ने उनसे यही अनुरोध किया कि अब इस निश्चय को निःसंकोच मान लिया जाय और दिल्ली में महासम्मेलन की सफलता के लिए प्रयास किया जाय। इतने पर भी पदाधिकारियों की भावनाओं को संदिग्ध और दूषित सिद्ध करने की चेष्टा करना एक अति अनुचित कार्य है।

पत्रक के छठे पैरा में लेखक महोदय एक व्यक्ति द्वारा "पटियाले से तदर्थ लाये गए सदस्य वैद्यबन्धु" का आक्षेपात्मक उल्लेख करते हैं जो प्रत्यक्षतः निराधार है क्योंकि सभी सदस्यों का सभा में उपस्थित होना न होना उनका निजी अधिकार है। परन्तु इस तर्क में सबसे हास्यास्पद बात यह है कि एक ओर तो स्वयं निवेदन करके वह लेखक सदस्यों को सभा में लाने का गर्व प्रकट करता है जबकि दूसरी ओर पटियाले से जो सदस्य अपने अधिकार से स्वयं आये उनके स्वतःसिद्ध अधिकार पर भी वह कटाक्ष करता है। देखिए एक ही स्थिति में विचार की विलक्षण द्विधारा ! एक ओर वे पटियाला के सदस्यों की उपस्थिति दूषित सिद्ध कर रहे हैं जबकि दूसरी ओर स्वयं उनके द्वारा बनी बड़ी संख्या और उनके स्वाभाविक विवेक की सराहना कर रहे हैं—विरोधाभास का नग्न चित्र !

पत्रक के ७ वें पैरा में उसके लेखक एक ओर तो पदाधिकारियों पर विद्यालय योजना को टालने का बिना किसी प्रमाण के घर बैठे आरोप लगा रहे हैं और दूसरी ओर विद्यापीठ-मंत्री श्री पं० सीताराम जी मिश्र को प्रयत्नशील कहते हैं—विकृत विचारधारा का एक और प्रज्वलन्त उदाहरण ! अतएव मैं उस लेखक महोदय से विनम्र निवेदन करूंगा कि पदाधिकारीवर्ग में ही इस प्रकार फूट डलवाकर विद्यालय स्थापना के कार्य को हानि न पहुँचायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तराधीन पत्रक के ८ वें पैरा में लिखित भावनाओं की सफलता की हम भी कामना करते हैं। जो सज्जन विद्यालय के लिए मासिक चन्दा देना चाहते हैं उसकी सूचना महासम्मेलन-विद्यापीठ कार्यालय में भी आनी चाहिए, क्योंकि वह झांसी का लेखक अभी से महासंमेलन कार्यालय पर भार वहन नहीं कर रहा है। उस लेखक महोदय को भी चाहिए कि इन चन्दा दाता शास्त्रयों की नामावली महासम्मेलन कार्यालय में भेज दें क्योंकि केवल अपने पास ही उस सूचना को रखने मात्र से उनके कर्त्तव्य की इतिश्री नहीं हो जाती।

लेखक महोदय ने अपने पत्रक के ९ वें १० वें तथा ११ वें पैरा में जो सन्देह व्यक्त किए हैं वे सर्वथा निराधार और भ्रममूलक हैं। हम सम्पूर्ण वैद्यसमाज को विश्वास दिलाते हैं कि दिल्ली में महाविद्यालय स्थापना की योजना के हम सर्वथा समर्थक हैं और पदाधिकार से और व्यक्तिगतरूप से इसकी सफलता के लिए कोई कसर उठा न रखेंगे। इसी प्रकार दिल्ली में होने वाले वार्षिक अधिवेशन की सफलता के लिए पूरी चेष्टा करते हुए सब से सहयोग की विनम्र प्रार्थना करते हैं।

पत्रक के १२ वें पैरा में व्यक्त किए गए भावों का हम हृदय से समर्थन करते ह। वैद्य समाज से हम आशा रखते हैं कि जागरूक रह कर सभी विषयों की वास्तविकता को समझने की चेष्टा करता रहे। पत्रक के लेखक महोदय से भी हम विनयपूर्वक प्रार्थना करेंगे कि वे अपने समय और धन का व्यर्थ की पत्रक-बाजी में अपव्यय न करें और इनका सदुपयोग आयुर्वेद के वास्तविक उत्थानार्थ ही करें।

वैद्य समाज के भ्रमनिवारणार्थ ही ये दो शब्द मैंने लिखे हैं जिससे महासम्मेलन और इसके पदाधिकारियों के सम्मान की रक्षा हो सके। इस विषय पर परिशिष्ट अन्यत्र देखें।

स्वामी चेतनानन्द चिदाकाशी

ऐन्टी बायोटिक्स, सल्फा ड्रग्ज़ और ऐस्प्रीन के योग

संसार, ऐलोपैथिक पेटेंट औषध—निर्माताओं के वैज्ञानिक प्रोपेगैण्डा के कारण ऐन्टी-बायोटिक्स, सल्फा ड्रग्ज़ और ऐस्प्रीन के योगों के चामत्कारिक प्रभाव की चकाचौंध में खो गया। रोगी को चिकित्सक की आवश्यकता न रही। आठ आने की पैन्सलीन अनेक रोगों को दूर करने के लिये, रोगी अपनी इच्छा से लगवाने लगा। सल्फाड्रग्ज़ युनानी के अर्क शर्बतों और मुरब्बों की तरह हर कोई खरीद कर खाने लगा। वेदना नाश के लिये ऐस्प्रीन का सर्वत्र व्यवहार होने लगा। जानते हो इससे क्या हुआ ?

अमेरिका में जनगणना की तरह रोगी गणना भी होती है, इस रोग गणना में ज्ञात हुआ कि लगभग २ करोड़ अमेरिकन अर्थात् कुल जनता का छठा भाग किसी न किसी दीर्घकालीन कष्टसाध्य व असाध्य रोग से पीड़ित है। अमेरिका में ३० लाख व्यक्ति इन रोगों के कारण पंगु हो गये हैं। १५ लाख शैयाशायी होकर पड़े हैं इनमें से ५० प्रतिशत की आयु ४५ वर्ष से कम है और १५ प्रतिशत की आयु २५ वर्ष से नीचे। इन कष्टसाध्य रोगों में हृद्रोग, उच्च रक्तचाप, स्नायविक व मानसिक रोग, मूत्र यन्त्र की बीमारियां, कैंसर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुमेह, दमा तथा गांठों की सूजन प्रधान है। अमेरिका में एक करोड़ एक लाख व्यक्ति केवल गठिया से पीड़ित हैं।

कितना आश्चर्य है कि अमेरिका जैसा धनी देश, फोर्ड राकफैलर जैसे सैकड़ों फौंडेशनों वाला भूभाग और वैज्ञानिको, विशेषज्ञों, ऐलोपैथिक रिसर्च स्कालरों का [illegible] ऐलोपैथिक औषधियों की पराजय, ऐलोपैथिक सिस्टम की दुर्बलता को स्वीकार [illegible] के लिए बाध्य हुआ। जहां नवरोग शीघ्र शमन हुए, वहां उपरोक्त कष्टसाध्य रोगों में शतांव वृद्धि हुई।

सन् १९५१ में अमेरिका के संयुक्तराष्ट्र में २ लाख लोगों की मृत्यु कैंसर से हुई। सन् १९१५ में जितने व्यक्ति कैंसर से मरे थे, यह संख्या उससे दुगनी है। यह निश्चित हो चुका है कि अमेरिका के निवासियों के अन्दर ५५ वर्ष के होने पर प्रत्येक आठ पुरुषों में से एक और प्रत्येक चौदह महिलाओं में से एक की मृत्यु कैंसर रोग से होती है।

आप जानते हैं कि कुछ ऐलोपैथिक टिकियों की डिबियों तथा इंजैक्शनों के पैकटों पर लाल स्याही से छपा होता है विष (Poison)। कैंसर रोग की उत्पत्ति और संख्या वृद्धि में इन औषधियों का भारी हाथ है। इन रोगों की उत्पत्ति में कुछ सहायता यह ऐस्प्रीन के योग भी करते हैं। इन औषधियों द्वारा शरीर में प्रविष्ट विष, जब काफी मात्रा में संचित हो जाता है तो यह बाहिर निकलने के लिये मार्ग चाहता है। जब यह पाचक रसों के साथ आमाशय में पहुँचता है तो आमाशयिक कैंसर, लाला ग्रन्थियों के रस द्वारा मुख कैंसर, दुग्ध द्वारा स्तनों में पहुँच कर स्तन कैंसर, मासिक रक्त द्वारा योनि में पहुँच कर योनि कैंसर, यकृत व वृक्कों में पहुँच कर उनके कैंसर को करता है। यही कारण है कि अब हालैण्ड, जर्मनी, फ्रांस आदि देशों में जनता का झुकाव इन औषधियों के त्याग की ओर बढ़ रहा है और इन देशों में वनस्पतियों के स्वरसों द्वारा चिकित्सा प्रसार पा रही है। अब कुछ जर्मन औषधियों के पत्रों में आप यह शब्द पढ़ सकते हैं, "वनस्पतियों के ताजह स्वरस से तैयार।"

आयुर्वेदिक चिकित्सा में वनस्पतियों के स्वरस, शीत कषाय, फाण्ट, क्वाथ और वानस्पतिक चूर्णों का प्रयोग होता है। इंग्लैण्ड में एक कम्पनी की औषधियों का नाम बायोगोल्ड मैडिसन्ज़ है। यह औषध केवलमात्र खाई जाने वाली वनस्पतियों के इस प्रकार सूखे स्वरस हैं कि उनके विटामिन नष्ट न हुए हों। शरीर शक्ति और रोग नाश के लिये इन बायोगोल्डों का व्यवहार होता है।

लेखक को इस सितम्बर मास में हरिद्वार जाने का तथा गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के निरीक्षण का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अपने विशेष स्नेही मित्र श्री रामेश बेदी जी ने फार्मेसी के औषध निर्माण विभाग में हमें स्टेनलेस स्टील के ५-५ हजार की कीमत के भाप से स्वरस सुखाने के यन्त्र दिखाये और बताया कि इनमें स्वरस सुखाने से उसके विटामिन नष्ट नहीं होते और अब वहां पर जितना भी च्यनप्राश बनता है, वह इन्हीं पात्रों में बनाया जाता है। हम समझते हैं कि बायोगोल्ड भी इसी प्रकार बनाये जाते होंगे।

(शेष पृष्ठ ४४ पर देखिये)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुत्र मूत्रं प्रजायते ?

शास्त्रयः

लेखकः—कविराज श्री उपेन्द्रनाथदासः

आदौ प्रार्थना—सिद्धान्तमार्षं वचनं तथार्षं बुभुत्सते यः खलु लब्धविद्यः।
प्रत्येकवर्णं परिचिन्त्य सम्यग् यथार्थमर्थं प्रतिपत्तुमीष्टे ॥
स्वबुद्धिगम्यं यदि नार्षवाक्यमसङ्गतं तत् सहसा न वाच्यम्।
भूयोऽपि बोधाय विशेषयत्ने कृते यतः स्यादतिसङ्गतं तत् ॥

"मनुष्यदेहे कुत्र मूत्रं प्रजायते" विषयेऽस्मिन् प्राचीनार्वाचीनतन्त्रकाराणामापाततो वैमत्यमुपलभ्यते। आर्षतन्त्रे विश्वासिनो वैद्या विद्यार्थिनश्च सुश्रुतादि वर्णितं मूत्रजनन-सञ्चयनिर्गमनादिकमेव विश्वसन्ति। यद्यपि सर्वे ते प्राचीनोक्तानां सूत्राणामेतादृशीं व्याख्यां कर्तुं न प्रभवन्ति यथा नवीनशारीररचना-शारीरक्रिया-विज्ञानविदामपि सन्तोषः स्यादिति। केवलं नवीनतन्त्रविदो नायुर्वेदं विश्वसन्ति न वा ज्ञातुमिच्छन्ति किमुक्तमायुर्वेदाचार्यैरिति। प्राचीनार्वाचीनोभयतन्त्रविश्वासिनो नवीनसिद्धान्तस्य परीक्षासिद्धत्वात् प्रत्यक्षसिद्धत्वाच्च तत्रैव वद्धश्रद्धा अपि आर्षसूत्राणामप्रामाणिकत्वं स्पष्टमुद्घोषयितुं भीता-लज्जिता वा प्रतिसंस्कर्तृणां लिपिकाराणां वाऽप्यविज्ञातशारीरतत्तत्वमुद्घोष्य प्रकारान्तरेणाऽधुना लभ्यमानसंहितासूत्राण्यसङ्गतानीति तिरस्कुर्वन्ति, संहितासूत्रपाठेषु वा तथा परिवर्तनमुपदिशन्ति यथा तानि सूत्राणि नव्यमतेन कथञ्चित् संवदन्तीति। महाविद्यालय विद्यार्थिनस्तु शरीरस्य रचनाविज्ञानं क्रियाविज्ञानञ्च नव्यतन्त्रविज्ञादधीयन्ते प्रत्यक्षञ्च कुर्वन्ति यन्त्राणां रचनादिकमतस्ते प्राचीनसंहितासूत्रवर्णितानामर्थानामप्रत्यक्षत्वात् प्रत्यक्षत्वाच्च नवीनवर्णितानां तत्रैव वद्धश्रद्धाः सञ्जायन्तेऽविश्वासिनश्च प्राचीनतन्त्रसूत्रेषु।

यद्यपि वयं नवीनतन्त्रे नाविश्वासिनस्तथाऽपि यत्र प्राचीनार्वाचीनतन्त्रसिद्धान्तेषु विरोध आभासते तत्र सम्यग्विचार्यैव पक्षस्यैकस्य समर्थनमयुक्तमेव मन्यामहे महाकविना कालिदासेनाप्युक्तं—सन्तः परीक्ष्याऽन्यतरद् भजन्ते मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिरिति। अतएव सर्वैरेव विबुधैर्नवीनप्राचीनमतयोर्युक्तायुक्तत्वं सम्यग् विचार्य यत्रार्थोऽर्थोऽवबोद्धव्योऽभिप्रायश्चाचार्याणां प्राचीनार्वाचीनानाञ्चेति।

तत्रायुर्वेदमते विन्मूत्रयोराहारमलत्वात् तयोरुत्पत्तिरपि आमाशये पक्वाशये च भवितुमर्हतीति सुतरां सिध्यति। अत्रामाशयपक्वाशयशब्दयोः पारिभाषिकार्थग्रहणेऽर्थसङ्गतिर्न स्यादिति तयोर्यौगिकोऽर्थो ग्राह्यस्तत आमस्याऽपक्वस्थान्नस्य आशय आमाशयस्तथा पक्वस्थान्नस्याशयः पक्वाशय इति निरुक्त्या शब्दाभ्यामेताभ्यां सम्पूर्णं महास्रोतोऽवगन्तव्यं तत्रैवान्नपानादीनां परिपाकः, पाकशब्दस्याऽपि रसमलविभाजनरूपोऽर्थश्चरकेणाभिहितः "एवं रसमलायान्नमाशयस्थ" मित्यादिना। मलोऽपि द्विविध एव चरकाचार्येणाभिहितः-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलाख्यो धातुर्मलभूतश्चेति । तयोर्मलाख्यास्ते ये मलसंज्ञां विभ्रतोऽपि कथञ्चित् शरीरपोषका एव मलधातुसंज्ञां लभन्ते। मलभूतास्तु शरीरस्य नोपकारका बहिर्गमनशीलाः शरीराद् यथाकालमनिर्गता दुःखमेव जनयन्ति । यदुक्तं चरकाचार्येण—तत्राहारः प्रसादाख्यं रसं किट्टञ्च मलाख्यमभिनिर्वर्तयति । किट्टात् स्वेद-मूत्र-पुरीष·····नखादयश्चावयवाः पुष्यन्ति । ते खल्वे एव धातवो मलाख्याः प्रसादाख्याश्च रसमलाभ्यां पुष्यन्तः स्वमानमनुवर्तन्ते यथावयः शरीरम् । च० सू० २८ ।

तथा—शरीरधातवस्त्वेवं द्विविधाः संग्रहेण—मलभूताः प्रसादभूताश्च, तत्र मलभूतास्ते ये शरीरस्य बाधकरास्युस्तद् यथा—शरीरच्छिद्रेषूपदेहाः पृथग्जन्मानो बहिर्मुखाः परिपक्वाश्च धातवः । च०शा० ६ । अत एव मूत्रमपि द्विविधं मलाख्यं मलभूतञ्चेति, मलाख्यं मूत्रन्तु न तूर्णमेव निर्गच्छति शरीरात्, किन्तु कियन्तं कालंयावत् शरीरपोषणं कृत्वा यदा मलभूतं सञ्जायते तदैव शरीरान्निर्गच्छति, कारणवशादनिर्गछत्तु नानाविधं व्याधिं जनयतीति ।

आहारपरिपाकादुत्पन्नो विडाख्यो मलधातुरपि शरीरं धारयत्येव । यदुक्तम् "शुक्रायत्तं बलं पुंसां मलायत्तं हि जीवितम्" स यदा मलभूतः सञ्जायते तदा गुदमार्गेण निर्गच्छति । मूत्राख्यो मलधातुस्तु महास्रोतसो जलशोषिभीरसशोषिभिश्च स्रोतोभिः प्रविश्य शरीरं कथञ्चित् पुष्णाति, यदा तु मलभूतः सम्पद्यते तदैव शरीरान्निर्गच्छति शरीरात्तस्य निर्गमनप्रकारस्तु नायुर्वेदसंहितासु तथा विशदं वर्णितः परिदृश्यते यथा विस्तृतो नवीनतन्त्रेषु । किन्तूत्पत्तिर्मूत्रस्य (मूत्र घटकद्रव्याणां) महास्रोतसि, वस्तौ सञ्चयो, मूत्रप्रसेकमार्गेण निर्गमनमिति स्पष्टमभिहितान्यायुर्वेदाचार्यैर्यदुक्तम्—पक्वाशयगतास्तत्र नाड्योमूत्रवहास्तु याः ।

तर्पयन्ति सदा मूत्रं सरितः सागरं यथा ।
सूक्ष्मत्वान्नोपलभ्यन्ते मुखान्यासां सहस्रशः ॥
नाडीभिरुपनीतस्य मूत्रस्याशयान्तरात् ।
जाग्रतः स्वपतश्चैव स निःस्पन्देन पूर्यते ॥
आमुखात् सलिले न्यस्तः पार्श्वेभ्यः पूर्यते नवः ।
घटो यथा तथाविद्धि वस्तिर्मूत्रेण पूर्यते ॥ (सुश्रुत नि० ३)

सूत्रेष्वेषु स्पष्टं यन्मूत्राख्यो मलधातुरामाशयात् पक्वाशयाच्च (महास्रोतसः) नाडीभिः शरीरं प्रविशति तासां नाडीनां मुखानि नोपलभ्यन्ते सूक्ष्मत्वात् । एवं मूत्राख्यो मलधातुर्यदा शरीरे स्वकार्यं साधयित्वा मलभूतः सम्पद्यते तदा बहिर्गमनाय क्रमशो वस्तौ सञ्चीयते, स च वस्तिः—नाभिपृष्ठकटिमुष्कगुदवंक्षणशेफसाम् ।

एकद्वारस्तनुत्वक्को मध्ये वस्तिरधोमुखः ।
अलाब्वा इव रूपेण सिरास्नायुपरिग्रहः ॥ (सु० शा० ३)

तस्मिन् वस्तौ मलभूतं मूत्रं सञ्चीयते कदेति प्रश्नस्योत्तरं जाग्रतः स्वपतश्चैव प्रतिक्षणमित्यर्थः । केन प्रकारेणेति प्रश्नस्योत्तरम्—आमुखात् सलिले न्यस्तो नवो (मृन्मयः) घटो यथा प्रतिक्षणं स्तोकशः पार्श्वेभ्यः पूर्यते तथैव वस्तिरयं प्रतिक्षणं पार्श्वलग्नाभ्यां गवीनीभ्यां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तोकश एव पूर्यते न तु तूर्णमित्युपमार्थः। घटः पार्श्वेभ्यः पूर्यते वस्तिस्तु पार्श्वाभ्यामिति विरोधो नाशङ्कनीयो यतो, नोपमायां सर्वथा साम्यमपेक्ष्यते किन्तु साधारणधर्मसाम्यमात्रमेव। चन्द्रवन्मुखमित्युपमायामाह्लादकत्वमात्रसाधारणधर्मसाम्यमात्रमेव न तु चन्द्रवन्नासाकर्णनेत्रादिराहित्यमपीति। आमाशयात् पक्वाशयाच्च मूत्रं साक्षादेव नाड़ीभिर्वस्तिं प्रविशतीत्येवं हि शास्त्रयुक्तिप्रत्यक्षादिविरुद्धमर्थं सुश्रुतसूत्राणां कल्पयितारो विस्मरन्ति मूत्रस्य मलधातुत्वं तथा स्वकीयेनैव भ्रमेण शास्त्रकारं दूषयितुमिच्छन्तीति महदाश्चर्यम्।

प्रत्यक्षशारीरकृता श्रीमता सेनमहोदयेनाऽपि पक्वाशयगतास्तत्रेत्यादि सुश्रुतसूत्राण्युद्धृत्य तत् सर्वथा प्रामादिकमित्याक्षिप्तम्। कथं प्रामादिकमित्यपि स्पष्टीकृतं प्रागेव यथा—मूत्रं हि नाम वृक्कयोः सहस्रशोऽवस्थितेष्वतिसूक्ष्मेष्वान्त्राख्येषु मूत्रस्रावि सूक्ष्मप्रणालीमखेषु नियतं सञ्चीयते ततश्च वृक्कद्वयविनिर्गताभ्यां गवीनीसंज्ञकाभ्यां स्रोतोभ्यां प्रसरति मूत्राशये वस्त्यपरपर्याये इत्येतदसन्दिग्धं सत्यं प्रत्यक्षसिद्धं परीक्षासिद्धञ्च। प्र० शा० उ० ७४। तत एव सुश्रुतपाठः प्रामादिक इति।

तेनैव महाभागेन वृक्कवर्णनाऽवसरे लिखितम्—सूक्ष्मनिर्माणन्तु वृक्कस्यातिविचित्रम्—वृक्कपरिधिस्थं हि बहिर्वस्तु मूत्रनिर्मापकैः सूक्ष्मैर्वर्तुलप्रायैर्जालकमयैर्यन्त्रकैरेव भूम्ना निर्मितम्, तेषां मूत्रोत्सिकेति संज्ञा·····। ता ऋजुकाख्यानां सूक्ष्मसिराधमनीनामन्तरालेषु सूक्ष्मतरशाखाधमनीभिरालम्बिताः फलगुच्छवदवतिष्ठन्ते। एकैकाञ्चोत्सिकां प्रविशत्येकैका सूक्ष्मा धमनी गुच्छमुखी। ताञ्च वर्तुलप्रायगुच्छे परिणतां प्रावृणोति विचित्रनिर्माणं कलामयं पुटकमुत्सिकापुटकं नाम। **पुटकान्तश्च शनैः शनैः सूक्ष्मकणैः क्षरति शोणितस्य त्याज्यो भाग आप्यो मूत्रं नाम।** तदुत्सिकापुटकनिर्गतेन सूक्ष्मेण मूत्रवहस्रोतसा वृक्कान्तर्नीयते इत्यादि। (प्र० शा० आशयखण्डे २३३)

अत्रेदं विचार्यम्—किं नाम मूत्रम् ? स्वाभाविके मूत्रे कानि द्रव्याणि कियत्परिमाणानि भवन्ति ? मूत्रघटकानां द्रव्याणां शरीरे कुत्र समुत्पत्तिर्भवति ? तेषु किं द्रव्यं केन मार्गेण शरीरं प्रविश्य किं किमुपकारं कृत्वा कदा केन मार्गेण शरीरान्निर्गच्छति ? रुधिरेऽपि मूत्रं वर्तते न वा ? वर्तते चेद् वस्तितो निर्गतान्मूत्राद्रुधिरस्थस्य मूत्रस्य को भेदः ? यदि रुधिरेऽपि मूत्रमस्ति तन्मूत्रं कुत्रसमुत्पद्यते ? यदि नास्ति तर्हि वृक्के तस्यागमनं कुतो भवति कथं वा पुटकान्तश्च शनैः शनैः सूक्ष्मकणैः क्षरति शोणितस्य त्याज्योभाग आप्यो मूत्रं नाम ? एतेषां प्रश्नजातानां समाधानमन्तरा न सम्भवति यथार्थार्थाऽवबोध आर्षसूत्राणां पक्वाशयगतास्तत्रेत्यादि सुश्रुतोक्तानाम्।

नव्याः शारीरतन्त्रपारङ्गता विपुलसाधनसम्पन्नाः कृतभूरिपरिश्रमाश्चास्मिन् विषये ततस्तेषामेव मतेन विचार्यते—स्वस्थस्य हि मनुष्यस्य प्रत्यहोरात्रं पञ्चविंशत्युत्तरशततोलकप्रायं (1500 C.C.) मूत्रं प्रवर्तते तत्र विंशत्युत्तरशततोलकमात्रो (९६ प्रतिशकं) जलीयो भागः शिष्टस्तु पञ्चतोलकप्रायो (४ प्रतिशकं) (६० ग्राम) घनभागः। घनभागं स्वान्तर्विलानं कृत्वा बहिर्नयनमेव जलीयभागस्य मुख्यं कार्यम्। प्रयोजनाऽतिरिक्तं शारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलमप्यंशेन मूत्रमार्गेणैव निर्गच्छति। मूत्रस्य षण्णवतिभागप्रायमुदकं महास्रोतस एव समायाति पक्वाशयामाशयसमुद्गताभिर्नाडीभि (स्रोतोभिः) रिति परीक्षकैरङ्गीक्रियते, अत्यम्बुपानान्मूत्राऽधिक्यमल्पाम्बुपानादनम्बुपानाच्च मूत्राल्पत्वं दृष्ट्वा लौकिकोऽप्यनुमातुं शक्नोति यन्मूत्रस्य जलीयो भागो महास्रोतस एव शरीरं प्रविशतीति।

पञ्चतोलकप्राये (६० ग्राम) घनभागेऽपि किञ्चिदधिकद्वितोलकभागो (२५ ग्रा-ऽजैवभागस्त्रितोलककल्पो (३५ ग्राम) जैवभाग इति स्थूलतया विभज्यते।

मूत्रे दृश्यान्यजैवद्रव्याणि

(१) क्लोराईडाख्यानि (Chloride) साधारणलवणस्य सोडियम् क्लोराईड आख्यस्याङ्गभूतमिदं प्रत्यहोरात्रं षोडशग्रामप्रायं मूत्रमार्गेण निर्गच्छति। लवणस्य भोज्याङ्गत्वाद् भोज्यद्रव्ये लवणमात्राया न्यूनाऽधिक्यवशात् मूत्रेऽपि क्लोराईडाख्यस्य मात्राया न्यूनाधिक्यं सञ्जायते। स्वास्थ्यरक्षार्थं रुधिरे लवणस्य मात्रा प्रतिनियतैव, भोज्ये यदि तस्माल्लवणमात्राऽल्पा स्यात् तर्हि महास्त्रोतसोऽप्यल्पमेव लवणं प्रविशति रुधिरम्। तत्तु रुधिरायावश्यकं लवणं दत्वा स्वल्पमेवाऽवशिष्यते। ततो मूत्रेऽपि क्लोराईडाख्यस्य लवणस्य मात्राऽपचीयते। अधिकलवणभोक्तुर्महास्रोतसोऽधिकं लवणं रुधिरं प्रविश्यावश्यकं लवणं दत्त्वाऽपि अधिकमवशिष्यते ततो मूत्रेऽपि क्लोराईड़ाख्यस्य मात्रा विवर्धते।

भोज्यस्य पच्यमानावस्थायां भोज्यपाकायामाशये लवणाम्लस्या (Hydrochloric acid) वश्यकता भवति तदानीं रुधिरात् साधारणं लवणं सोडियम् क्लोराईडाख्यमागच्छति आमाशयगात्रस्थानम्लजनकाणून्। लवणस्य क्लोरीनाख्यं घटकद्रव्यं हाईड्रोजनाख्येन जलस्य घटकांशेन मिलितं सत् लवणाम्लं रचयति, सोडियमाख्यं क्षारद्रव्यं पुनः प्रत्यावर्तते रुधिरं ततः सोडियम् वाई कर्बोनेटाख्यं सोडियम् क्लोराईडाख्यम्वा लवणं भूत्वा मूत्रेण सह निर्गच्छति। एतेन स्पष्टं यन्मूत्रस्य घटकं द्रव्यमेतदामाशयादेव नाडीभिः (स्रोतोभिः) यानिमूत्रसंपूतनसंस्थानं वृक्कयन्त्रमिति। अत्रेदमवधेयं यत्-लवणस्य विघटनात् पृथग्भूतेन क्लोरीनाख्येन सह हाईड्रोजनाख्यस्य विशिष्टसंयोगाज्जायत इति यस्य लवणाम्लसंज्ञाऽनुवादकैः कृता तस्मिन् द्रव्ये लवणस्य मिश्रणं नास्ति। एतदम्लद्रव्यमाधुनिकतन्त्रे हाईड्रोक्लोरिक् एसिडाख्यमिति।

(२) गन्धकितम् (Sulphates) मूत्रेऽस्य मात्रा भोज्यद्रव्यस्थस्य प्रोटीनसंज्ञकस्य मात्रामनुसरति। तथाहि प्रोटीनाख्यस्य घटकेन गन्धकेन सह ओक्सीजनाख्यस्य संयोगविशेषात् सलफेटाख्यं (S.o 4) द्रव्यं विरच्यते, मूत्रेऽस्य दैनिकी मात्रा माषत्रय-(३ ग्राम) कल्पा। भोज्यद्रव्यस्थे प्रोटीनाख्ये द्रव्ये ऽवस्थितो गन्धकस्तु हानिकारक एव शरीरस्य किन्तु गन्धकोऽयं यकृद्गत्वा ओक्सीजनाख्येन संयोगविशेषमासाद्य सल्फेटाख्यां प्राप्य हानिरहितो जायते। गन्धकोऽपि पच्यमानाशयात् (यौगिकार्थे आमाशयान्तरात्) नाडीभिः (सिराभिः) प्रतिहारिण्या सिरया यकृत् संप्राप्य तत्र द्रव्यान्तररूपेण परिणम्य याकृतीभिः सिराभिरधरमहासिरामार्गेण हृदयं गत्वा क्रमशो वृक्कौ याति। शरीरस्थस्य प्रोटीन् संज्ञकस्य विघटनाद्यो गन्धकः पृथग् भवति स तु साक्षादेव वृक्कं यातीति विशेषः।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीयेऽवस्थापाके पक्वाशयं प्राप्तस्यावशिष्टस्यान्नस्य यः प्रोटीनाख्यो भागस्तस्य विघटनादपि गन्धकः पृथग्भवति सोऽतिहानिकारकस्ततस्तूर्णमेव विपरिवर्तते। तस्य क्रियानंश इसिडकेनाख्यो मूत्रेण सह निर्गच्छति। मूत्रे तस्य समुपस्थितिः पक्वाशये विघटनक्रियां (Putrefection) सूचयति। इण्डिकेनाख्यं मलं पक्वाशयगता नाड्य एव मूत्रं प्रापयन्ति।

(३) फस्फेटाख्यं द्रव्यं (Phosphates) मलोऽयमाधिक्येन भोज्यद्रव्यात् साक्षात् समायाति मूत्रमंशेन च शारीतन्तुभ्यः। यदि भोज्ये द्रव्ये फस्फेटाख्यादतिरिक्तं कैलसियमाख्यमप्यधिकमवस्थितं मैग्नेशियाख्यञ्च तर्हि ताभ्यां मिलितं फस्फेटाख्यमविलेयं सम्पद्यते निर्गच्छति चान्त्रादेव पुरीषेण सह। यदि भोज्ये तयोरल्पता तर्हि विलेयमेव फस्फेटाख्यं प्रविश्य रुधिरं मूत्रेण सह निर्गच्छति। मूत्रस्याम्लीयतायामेतद् विलीनमेव निर्गच्छति किन्तु क्षारीयतायां मूत्रस्य पुनरविलेयमेतन्मूत्रेऽधःस्थं परिदृश्यते। वृक्कादावतिसञ्चितमेतत् कठोरतामासाद्याश्मरीसंज्ञां लभते।

मूत्रस्थेषु जैवद्रव्येष्वेतानि मुख्यानि

(१) युरिकाख्यं (Uric) प्रात्यहिक मूत्रे सार्धद्वितोलंक प्रायम् (३० ग्राम)

(२) युरिकाम्लम् (Uric acid) प्रात्यहिकमूत्रे त्रिचतुर्थमाषकल्पम् (०·७ ग्राम)

(३) क्रियाटीनीन् (Creatinine)·····माषक प्रायम् (१ ग्राम)

(४) हिप्युरिकाम्लम् (Hippuric acid)···त्रिचतुर्थमाषकल्पम् (०. ७ ग्राम)

मूत्रस्थाः सर्वे जैवा मलाः प्रोटीनाख्यस्य विश्लेषणादेव पृथग् भवन्ति तत्तु प्रोटीनाख्यं भोज्ये द्रव्ये शारीरतन्तुषु च विद्यते।

भोज्यद्रव्यस्य प्रोटीनाख्यस्य परिपाकात् परं तस्य विभाजनात् परमपि शरीरस्य हानिकरं किञ्चिद्वस्तु परिशिष्यते शरीरे तस्य शोषणं न सम्भवति किन्तु तदेव प्रतिहारिण्या सिरया यकृत् प्रविश्य तत् क्रियया तथा परिवर्तते यथा हानिकरं न स्यात्ततो वहिर्गच्छति च मूत्रमार्गेण। एतदेव युरिकाख्यं युरिकाम्लाख्यञ्च, तयोः युरिकाख्यः साक्षादेवाहारमलः शरीरे तस्याति सञ्चयात् युरिमियाख्य उग्रो रोगः सञ्जायते प्रशाम्यति च मूत्रलैरेव भैषजैरन्नपानैश्च। युरिकाम्लन्तु शरीराणुघटकस्य प्रोटीनाख्यस्य मलधातोर्विभाजनात् सम्भूतो मलभूतो मलह इति विशेषः। शरीरे सञ्चितोऽयं मलोऽश्मरीं शर्करामाम्लवातादिकं वा जनयति ते चाऽपि रोगा मूत्रलैरेवौषधान्नैः प्रशाम्यन्ति। भोज्यद्रव्ये प्रोटीनाख्यं द्रव्यमपि द्विविधं साधारणं न्युक्लीयाख्यञ्च। तयोः साधारणं परिणमत्यन्ते युरिकाख्यरूपेण, न्युक्लीयाख्यन्तु युरिकाम्लरूपेणेति विशेषः।

साधारणाख्ये प्रोटीनसंज्ञके अमोनियाख्यं द्रव्यमप्यंशेन वर्तते यकृति विश्लिष्टमिदं प्रोटीनाख्यं अमोनिया रहितं तत् सहितञ्चेति द्विभागविभक्तं सञ्जायते-तयोराद्यो भागः आक्सीजनाख्यस्य सम्पर्कात् प्रज्वलितो जनयति शरीरे कियन्तं तापं परिवर्तते च जलरूपेण कार्बन् डाईओक्साईड् रूपेण चेति द्वितीयो हानिकरो भागो यकृति आर्जीनीनाख्यस्य ओर्नीथीनाख्यस्य च सहायतया युरिकाख्यरूपेण परिणम्य वृक्कपथेन मूत्रेण सह निर्गच्छ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीति। तस्मादेव मूत्रस्थस्य युरियाख्यस्य मात्रया भोज्यस्थस्य साधारणप्रोटीनाख्यस्य मात्राऽनुमातुं शक्यते।

न्युक्लीयो प्रोटीनाख्यं द्रव्यं विहङ्ग-मांसेषु यकृति डिम्बेषु चाधिकमुपलभ्यते। तस्मादेतत्प्राशिनां भोज्येषु तदधिकं दृश्यते तस्य पाकादनन्तरं मुख्ये शिष्टभागे प्यूरीनाख्यमवशिष्यते, तस्मादपि यकृति अमोनिया पृथग् भवति, अमोनिया युक्तभागस्तु युरिकाम्ल रूपेण परिवर्तते।

यदि मूत्रे युरिकाम्लं युरेटाख्यरूपेण संहन्यते (निक्षिप्तं जायते) तर्हि जनयत्यश्मरीम्। मूत्रेण सह सम्यगनिर्गत्य सञ्चीयते चेत् क्षुद्रसन्धिषु तर्हि जनयति ग्रन्थिवातम्, स खलु ग्रन्थिवातोऽपि मूत्रलैरौषधान्नैरुपशाम्यति।

हिप्युरिकाम्लम्--शाकानि फलानि चाधिक्येनोपयज्जानानामनावश्यकं प्रोटीनाख्यं यकृद्वृक्कौ चौभौ प्राप्य हिप्युरिकाम्लरूपेण परिवर्तते।

क्रियाटीनीनाख्यो मलः प्रात्यहिकमूत्रे स तृतीयमाषप्राय (१. ३ ग्राम) उपलभ्यते। तन्तुस्थाद् विशेषतः पेशीतन्तुस्थात् प्रोटीन् संज्ञकादस्य समुत्पत्तिर्भवति। तस्मा पेशीनां कार्याऽधिक्ये मूत्रेऽप्यस्य मात्रा विवर्धते। तदेतत् पेशीतः साक्षादेव वृक्कौ याति निर्गच्छति च मूत्रमार्गेण। पेश्यामस्यागमनन्तु यकृत एव वर्णितरीत्येति।

एतद्वर्णनकलापादवगम्यते यत् स्वाभाविकमूत्रेण सह निर्गच्छदधिकमेव द्रव्यं भुक्तान्नात् समायाति तदपि भुक्तान्नानां परिपाकादनन्तरमवशिष्टं मलरूपमेव तत एवोक्तं महर्षिणा चरकेण--किट्टमन्नस्यविन्मूत्रमिति। मलोऽयं द्विविधो मलधातुर्मलभूतश्चेति, तत्र ये मलभूताः शरीरस्य साक्षादावाधकरास्ते महास्रोतसः समुत्पन्नाभिः सिराभिः प्रतिहारिणीं सिरां प्राप्य तया यकृत् प्रविश्य कथञ्चिन्निर्विषा याकृतीभिः सिराभिरधरां महासिरां ततश्च हृदयं गत्वा धमनीपथेन वृक्कौ प्राप्य रुधिरात् पृथग्भूय गवीनीमार्गेण वस्तौ स्तोकशः सञ्चीयन्ते परिपूर्णे च वस्तौ मूत्रप्रसेकमार्गेण बहिर्यान्ति। भुक्तद्रव्यान्मलधातुरूपेण ये महास्रोतसः शरीरं प्रविशन्ति तेऽपि कियन्तं कालं यावत् शरीरधारणे साहायकं कृत्वा यदा मलभूताः सञ्जायन्ते तदा सिराभिर्लसिकावाहिनीभिर्वा हृदयं गत्वा रुधिरेण सह धमनीमार्गेण वृक्कौ गत्वा तत्र पृथग् भूय गवीनीमार्गेण वस्तौ स्तौकशः सञ्चीय मूत्रप्रसेकमार्गेण निर्गच्छन्ति। मूत्रमार्गेण बहिर्गच्छन्तो ये मला यथाकालं शरीरादनिर्गता नानाविधावाधकराः स्युस्ऽपि मूत्रसंज्ञा एव तेषां मुत्रत्वाऽनङ्गीकारे वृक्कयोर्मूत्रोत्पत्तिर्न सम्भवति एतत्तु सर्वथा सत्यं परीक्षितञ्च यद् वृक्कयोर्मूत्रं न सञ्जायते किन्तु रुधिरेण सहागतान् यान् मलान् वृक्कौ पृथक् कुरुतस्तेषां समुदितानां मलानां व्यवहारिकी मूत्रसंज्ञेति। तस्माद् वृक्कौ न जनयतो मूत्रं किन्तु रुधिरात् पृथक् कुरुत इति ध्येयम्। मूत्रलानि द्रव्याण्यपि न केवलं वृक्कावुत्तेजयन्ति किन्तु केवलाच्छरीरान्मूत्रोपादानानि सिरामार्गेण लसिकामार्गेण च हृदयं प्रापयन्ति ततो धमनीमार्गेण रुधिरेण सह वृक्कौ प्रापयन्ति पृथक् करणायेति स्वीकर्तव्यमेव, कथमन्यथा मूत्रलैः सर्वशरीरशुद्धिरिति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमता सेनमहोदयेन स्वमतसमर्थनाय तथा सुश्रुतसूत्राणां प्रामादिकत्वनिरसनाय यद् यत् पाठपरिवर्तनं प्रस्तावितं तत् तदपि युक्तमुक्तं नवेति विचार्यते ।

(१) "यदान्त्रेषु गवीन्योर्यद् वस्तावधिसंश्रितम्" इत्यस्मिन्नाथर्वणमन्त्रे उक्तस्यान्त्रस्य वृक्कस्थानि आन्त्राख्यानि मूत्रस्रोतांसीति कर्तुमभिलसद्भिर्महोदयैः स्वमतसमर्थनाय सायणभाष्यमुद्धृतम् किन्तु सायणभाष्ये—आन्त्रेषु—उदरान्तर्गतपुरीतत्सु इति व्याख्यानं दृष्ट्वाऽपि आन्त्रशब्दस्य वृक्कगतमूत्रस्रोतसोऽवबोधः कथं समीचीनः सम्भवतीति नावबुध्यते । सायणव्यख्यानेन तु पक्वाशयगतास्तत्र नाड्यो मूत्रवहास्तु या इत्यस्यैव समर्थनं स्यात्, यतः पुरीतत्शब्द अन्त्रस्यैव पर्यायवाचकस्तत्राऽपि उदरान्तर्गत इति विशेषणमपि दृष्ट्वा वृक्कगतमूत्रस्रोतोभिस्तस्य सम्बन्धकल्पनं कथमपि सङ्गतं न स्यात् । प्रस्तुतमन्त्रे पक्वाशय स्रोतःसु आहारमल स्वरूपं भाविमूत्रमुत्पन्नं मूत्रं गवीन्योस्तथा वस्तौ सञ्चितं मूत्रमिति सरलार्थ एव सुसङ्गतः स्यात् । तस्मादाथर्वणमन्त्रेण सायणभाष्येण वा सेन महोदयस्य सिद्धान्तो न समर्थित इति स्पष्टम् ।

वृक्कस्थानां मूत्रस्रोतसामपि कथञ्चिदन्त्राकारत्वादान्त्रसंज्ञा अन्त्रसंज्ञा वा कामं क्रियतां किन्तु प्रदर्शितार्थवर्णमन्त्रस्थेनान्त्रशब्देन अन्त्रस्थानि (महास्रोतःस्थानि) स्रोतांस्येव बोध्यानीति सायणभाष्यादायुर्वेदसिद्धांताच्च निश्चीयते ।

पक्वाशयगतास्तत्रेत्यादि सार्धश्लोकत्रयी वर्णितमर्थजातं प्राक् "तत् सर्वथा प्रामादिक" मित्युल्लिख्य पश्चात् स्वयमेव स्वकीय वचनं निराकरोति सेन महोदयः—अथवा लिपिकरप्रमाद एवात्र स्वीक्रियताम् । तथाहि प्रथम श्लोके "तर्पयन्ति सदा मूत्र" इत्यत्र "तर्पयन्ति सदा वृक्कौ" इति पाठ एव साधीयान् प्रतिभाति । सरितः सागरं यथा तथा मूत्रं तर्पयन्तीत्युक्तौ सागरमूत्रयोरुपमानोपमेयभावाऽसंगतेः । शेषतश्च "घटो यथा तथा विद्धि वस्तिर्मूत्रेण पूर्यते" इत्यत्र स्थाने "घटो यथा तथा वृक्कौ ततो वस्तिश्च पूर्यते" इति पठनीयम् । "विद्धि" इति पदस्य वृथागर्भितत्वादन्यथाऽर्थाऽसंगतेश्च ।

अत्रेदं विचार्यम्—पक्वाशयगता इत्यादि यत् सूत्रं सेनमहोदयमते प्राक् सर्वथा प्रामादिकमसङ्गतं प्रत्यक्षविरुद्धं प्रयोगविरुद्धञ्चेति सर्वदोषयुक्तमासीत् तस्मिन्नेव सूत्रे "मूत्र" शब्द स्थाने "वृक्क" शब्द सन्निवेशादेव सुसङ्गतमप्रामादिकं प्रयोगसिद्धं प्रत्यक्षसिद्धञ्च सञ्जातमिति विज्ञायते यत् सूत्रस्यास्य मूत्रशब्द एव प्रमादिकोऽन्यत् सर्वं सुसङ्गतमेव, तस्मात् प्रामादिकस्य मूत्रशब्दस्याऽपनयनाद् "वृक्कौ" शब्दस्य सन्निवेशाच्च सर्वं सुसङ्गतं जातम् ।

अत्र विचार्यं यत्—पक्वाशयगता नाड्यो मूत्रोपादानभूतं युरियादिकं यं यं मलं वृक्कौ प्रापयन्ति तैर्मूत्रस्य तर्पणं वृक्कयोस्तर्पणं वेति मध्यस्थबुद्ध्या विवेचनीयम् । सुश्रुताचार्यमते तु रस एव तर्पयति वृक्कावपि यतस्तेन स्पष्टमेवोल्लिखितं स (रसः) हृदयाच्चतुर्विंशति धमनीरनुप्रपद्य··· कृत्स्नं शरीरमहरहस्तर्पयति··· । न हि वृक्कौ कृत्स्नशरीरादतिरिक्तं किञ्चित् । किञ्च मलद्रव्येण मलद्रव्यस्यैवाप्यायनं सम्भवति न तु कस्यचित् शारीरयन्त्रस्येति । किञ्च "रक्तमेदः प्रसादजौ वृक्कौ" तयोस्तर्पणं मूत्रवहा नाड्यः कया रीत्या कुर्वन्तीति प्रयोग-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वादिभिः प्रत्यक्षदर्शिभिरेवाऽवबुध्यते श्रीमता चरकेण तु ते सर्वं एव धातवः प्रसादाख्या मलाख्याश्च रसमलाभ्यां पुष्यन्तः स्वं मानमनुवर्तन्ते यथा वयः शरीरमिति लिखितम् ।

सरितः सागरं यथा तथा नाड्यो मूत्रं तर्पयन्तीत्युक्तौ सागरमूत्रयोरुपमानोपमेयभावाऽसंगतेरिति यद् दूषणमुद्भावितं श्रीमद्भिस्तस्य दूषणत्वेऽपि साहित्यं यथा दूषयत्यलङ्कारदोषो न तथा विज्ञानस्वरूपमायुर्वेदमिति । विज्ञाने हि वस्तुस्थितेः प्राधान्यं नालङ्कारमात्रस्य । पक्वाशयगता नाड्यो युरियादिमलद्रव्यैर्मलस्वरूपं मूत्रमेव तर्पयन्ति न तु रक्तमेदःप्रसादजौ वृक्काविति वस्तुस्थितिमुल्लंघ्यालङ्कारानुरोधात् तद्विपरीतार्थकल्पनं वास्यादिभिः करौ विलिख्य कङ्कणधारणमिव दुःखाकरमेव । किञ्च सरितो यथा स्वान्तः प्रसरता जलेन सागर सलिलं तर्पयन्ति तथा नाड्योऽपि स्वान्तः प्रसरता मूत्रांशेन मूत्रं तर्पयन्तीति सुतरां सङ्गच्छते उपमानोपमेयभावोऽपीति मूलपाठे लिपिकप्रमादः पाठपरिवर्तने वा प्रमाद इति सुधीभिरेवाऽवधारणीयमिति । नहि सरितः स्वस्थानं हित्वा सागरं यान्ति न वा तर्पयन्ति जलाधारखातं किन्तु नदीजलं सागरजलं तर्पयतीत्येतावदेव सत्यम् ।

आमुखात् सलिले न्यस्तः पार्श्वेभ्यः पूर्यते नवः ।
घटो यथा तथा विद्धि वस्तिर्मूत्रेण पूर्यते ॥

श्रीमता सेन महोदयेन श्लोकेऽस्मिन् "घटो यथा तथा वृकौ ततो वस्तिश्च पूर्यते" इत्येवं पाठपरिवर्तनमिष्यते तत्रकारणमपि प्रदर्श्यते—"विद्धि" इति पदस्य वृथागर्भितत्वादन्यथाऽर्थाऽसङ्गतेश्चेति । अत्रेदं विचार्यम्—"नवो घटः (मृन्मयः) सलिले आमुखान्न्यस्तो यथा पार्श्वेभ्यः स्तोकशः पूर्यते तथा वस्तिरपि पार्श्वाभ्यां (पार्श्वलग्नाभ्यांगवीनीभ्यां) स्तोकश एव पूर्यते इति विद्धि" एवम्विधे व्याख्याते श्लोके न तु गर्भितत्वदोषो न वाऽर्थाऽसङ्गतिः किन्तु परिवर्तितपाठे वृक्कौ केन पूर्येते वस्तिश्च केन पूर्यते इति शङ्कैव न केवलं समुदेति किन्तु घटो यथा सलिलेन पूर्यते तथा सलिलेनैवैतेऽपीति विरुद्धमतिकारितादोषोऽपि प्रसज्यते ।

किञ्च श्लोकेऽस्मिन् पूर्यत इत्येकैव क्रिया, तत्र पूरणं नाम शून्यगर्भस्य पात्रस्याशयस्य वा बहिर्देशादागतेन द्रवेण शून्यस्थानाऽधिकार इति बहिर्देशादागतस्य तरलस्यान्तःसञ्चयादेव पूरणं सम्भवति नान्यथेति सर्वैरेव बुध्यते । प्रस्तुते सिद्धान्ते रुधिराद् वृक्कयोरन्तर्यावन्मूत्रं विन्दुशः पृथग् भवति तावदेव मूत्रं गवीनीभ्यां गत्वा वस्तौ सञ्चीयते तेन वस्तेरेव स्तोकशः पूरणं भवति । वृक्कयोः पृथग् भूतस्य मूत्रस्य कियन्मात्रस्यापि वृक्कयोः सञ्चये महती पीडा भवतीति नाऽविदितं भिषजां तस्माद्वस्तिरेव मूत्रेण पूर्यते न तु वृक्कौ कदाऽपि मूत्रेण पूर्येते इत्यपि परीक्षितं सत्यं परीक्षकाणामिति । तस्मान्नात्राऽपि लिपिकरप्रमादः कश्चित् किन्तु पाठे परिवर्तित एव महान् प्रमादः सञ्जायत इति ।

अयमर्थः श्रीमता चरकेणेतोऽपि स्पष्टीकृतस्तथाहि वस्ति वर्णने चरकः—वस्तिस्तु... मूत्राधारोऽम्बुवहानां सर्वस्रोतसामुदधिरिवापगानां प्रतिष्ठा । च० चि० ९-४ । यथा समुद्रो नदीनां प्रतिष्ठाऽन्तिमसञ्चयस्थानं तथा वस्तिरप्युदकवहानां स्रोतसां प्रतिष्ठा । अस्याऽयमभि-

(शेष पृष्ठ ४२ पर देखिये)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri.

पुराने रोगों के दूष्य संहित

नये और पुराने रोगों के दूष्य सहित नाम को जानने में एक सरल किन्तु अव्यर्थ उपाय

ले०—वैद्य श्री ललिता प्रसाद पांडेय, हुसनपुर (गाजीपुर)

कहा जाता है कि कुछ नवीन रोग ऐसे हैं जिनका नाम और चिकित्सा आयुर्वेद शास्त्र में है ही नहीं। प्रायः सभी ऐसा कहते हुए डाक्टरी की शरण ले लेते हैं। इसलिए इससे बढ़ कर आयुर्वेद का दूसरा अपमान और क्या हो सकता है ?

इस विषय में महर्षि चरक की प्रतिज्ञा है—

चिकित्सितं वह्विवेश स्वस्थातुरहितं प्रति।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्॥

इस बात पर पूर्ण ध्यान और विश्वास रख कर ही तो आयुर्वेद का पठन-पाठन सुलभ हो सकता है।

यद्यपि दोषदूष्य और निदान उपशय की दृष्टि से संसार के किसी भी रोग की नवीन नहीं कहा जा सकता, क्योंकि अनादि-काल से दोष-दूष्य के संयोग से शरीर की रचना होती आयी है उसी दोष-दूष्य को वर्तमान काल में भी पाया जाता है तो नवीन रोग होने की कल्पना कैसी ? अतः नवीन दोष-दूष्य हों तो नवीन रोग की कल्पना करना भी सत्य माना जा सकता है। इसके अलावा महर्षि ने स्वयं सूत्र-रूप से कह दिया है कि—संसार में रोगों के बहुत नाम और रूप हैं, इसलिए जिन रोगों के नाम और रूप को न कहा गया हो उसमें क्या करना चाहिए—

रोगा येऽप्यत्र नोद्दिष्टा बहुत्वान्नामरूपतः,
तेषामप्येतदेव स्याद्दोषादीन् वीक्ष्य भेषजम्।
दोष-दूष्य निदानानां विपरीतं हितं ध्रुवम्,
उक्तानुक्तान् गदान् सर्वान् सम्यग्युक्तं
नियच्छति।

इसलिए दोष-दूष्य और निदान उपशय को समझने वाला चतुर वैद्य डाक्टरी के अन्धकार में न पड़कर चिकित्सा मार्ग में भी कदापि भटक नहीं सकता।

यह सब होते हुए भी चरक सू० स्था० अ० ११ व्या० ४७ से ५० तक और ५५-५६ में एक ऐसी अचूक तालिका दी गयी है जिसके द्वारा प्रत्येक रोग के नाम दूष्य और चिकित्सा को बड़ी सरलता के साथ बिना श्रम के शीघ्र ही समझा जा सकता है। जैसे—

त्रयो रोगमार्गा इति शाखा, मर्मास्थि-संधयः, कोष्ठश्च। तत्र शाखा रक्तादयो धातवस्त्वक् च, स बाह्यो रोगमार्गः। मर्माणि पुनर्बस्ति-हृदय-मूर्धादीनि अस्थिसंधयोऽस्थि-संयोगाः, तत्रोपनिबद्धाश्च स्नायु-कण्डराः स मध्यमो रोगमार्गः। कोष्ठः पुनरुच्यते महा-स्रोतः शरीरमध्यं महानिम्नमामपक्वाशय-श्चेति—पर्यायशब्दैस्तन्त्रे स रोगमार्ग आभ्यन्तरः। (४८)

अर्थात्-रोगों की उत्पत्ति केवल तीन मार्ग से होती है जैसे—शाखा, मर्म और हड्डियों का जोड़ तथा कोष्ठ। इसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाखा का अर्थ है—रक्त, मांस, मेदा, हड्डी, मज्जा और शुक्रादि धातु व चमड़ा। इनमें प्राप्त दोषों से होने वाले रोग शरीर के ऊपर चमड़ा पर देखे जाते हैं जिससे इन रोगों का नाम शाखानुसारीवहिर्मार्गी रोग है। इसी प्रकार मर्म का अर्थ बस्ति, हृदय, शिर तथा अस्थिसंधि का अर्थ हड्डियों का जोड़ है, इसी में स्नायु कण्डरा का भी अन्तर्भाव है। इनमें प्राप्त दोषों से होने वाले रोगों का नाम मध्यममार्गी है। इसके पश्चात् कोष्ठ नाम है महास्रोत का, जो शरीर के मध्य भाग पेट के गड्ढे में होता है। शास्त्र में इस महास्रोत को आमाशय और पक्वाशय कहा गया है। इनमें प्राप्त दोषों से होने वाले रोगों का नाम कोष्ठानुसारी अन्तर्मार्गी रोग है।

अब दिग्दर्शन मात्र के लिए उदाहरण रूप से पृथक्-पृथक् तीनों मार्ग में होने वाले मुख्य-मुख्य रोगों का नाम दे रहे हैं जिससे रोग और दूष्य को समझने में सुगमता प्राप्त हो—जैसे—शाखानुसारी वहिर्मार्गजा रोगों का नाम—

तत्र गण्डपिडकालज्यपचीचर्मकीलाधिमांसमपककुष्ठव्यंगादयो विकारा वहिर्मार्गजाश्च विसर्पश्वयथु गुलमार्शोविद्रध्यादयः शाखानुसारिणो भवन्तिः।

मध्यममार्गी रोगों का नाम—पक्षवधग्रहापतानकार्दितशोषराजक्ष्मास्थिसंधिशूलगुदभ्रंशादयः शिरहृद्वस्तिरोगादयश्च मध्यममार्गानुसारिणो भवन्ति रोगाः।

कोष्ठानुसारी अन्तर्मार्गी रोगों का नाम—ज्वरातिसारछर्द्यलसकविसूचिकाकासश्वासहिक्काऽऽनाहोदरप्लीहादयोऽन्तर्मार्गजाश्च विसर्पश्वयथुगुल्मार्शोविद्रध्यादयः कोष्ठमार्गानुसारिणो भवन्ति रोगाः।

विशेष वक्तव्य—यहां जिन रोगों का नाम नहीं आया है उनको भी स्वबुद्धि से इन्हीं तीन मार्गों में समझ लेना चाहिये जैसे—

ग्रंथि, अर्बुद, भगन्दर, श्लीपद, उपदंश, शीतपित्त, उदर्द, प्रमेहपिडिका तथा समस्त क्षुद्र रोगों आदि को शाखानुसारी वहिर्मार्गजा रोग, तथा स्वरभेद, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, अश्मरी, प्रमेह, उदावर्त, वातरक्त, आमवात तथा समस्त वातव्याधि, कर्ण, नेत्र, मुख रोगादि को मध्यम मार्गी और ग्रहणी, अरोचक कृमिरोग, अम्लपित्त, रक्तपित्त आदि को कोष्ठानुसारी अन्तर्मार्गजा ही रोग समझना चाहिए।

यहाँ विशेष ध्यान देने की बात यह है कि—विसर्प, शोथ, गुल्म, अर्श, विद्रधि का नाम शाखानुसारीवहिर्मार्गजा रोगों में और कोष्ठानुसारी अन्तर्मार्गजा रोगों में दोनों स्थान में है इससे इनका नाम शाखाकोष्ठानुसारी वहिःअन्तर्मार्गजा रोग है क्योंकि शाखा और कोष्ठ दोनों को दूषित करके वातादिदोष बाहर और भीतर के दोनों रोगों को करते हैं। इसमें मूर्छा, प्रलाप, उन्माद, प्रभृति रोग मध्यम-मार्गी हैं अतः जिन रोगों में यह उपद्रव रूप से पाये जायं उनको कष्टसाध्य या असाध्य समझ कर त्रयमार्गी रोग समझना चाहिए जैसे संधिक सन्निपातज्वर में पाया जाता है।

अब यहां हम सर्पविष की भांति आशुकारी तथा कष्टसाध्यासाध्य भयंकर प्लेग रोग को उदाहरण के लिए इस तालिका पर साधेंगे जिससे प्रत्येक रोग को साधने की विधि सब को ज्ञात हो जाय। फिर भी इस रोग के प्रति वैद्य समाज में अभी पूर्ण अन्ध-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार है जिससे इस रोग का भी नाम नवीन रोग ही है।

प्लेग का मुख्य लक्षण ज्वर युक्त ग्रंथि है जिससे इसको भी शाखाकोष्ठानुसारी बहिःअन्तर्मार्गजा रोग कहने में कोई कठिनाई न होगी। अब हम को विसर्प रोग पर ध्यान देना चाहिए कि प्लेग और विसर्प में क्या अन्तर है ? यदि ध्यान-पूर्वक देखा जाय तो दोनों के रूप दोष-दूष्य में कोई अन्तर न मिलेगा जिससे निदान और उपशय में भी कोई अन्तर नहीं माना जा सकता। अतः दोनों एक हैं जिससे चिकित्सा भी एक ही है।

विस्फोटक मसूरिका और अग्निरोहिणी तथा सन्निपात ज्वर के पश्चात् कर्णमूल में शोथ होना आदि सब विसर्प के ही भेद हैं जिससे इन सब में भी विसर्पोक्त ही चिकित्सा करने का आदेश है। यह लेख पूरे अध्ययन और अनुभव के बल पर लिखा गया है जिससे इसमें सन्देह करने की पाव-रत्ती भी गुंजाइश नहीं है। इसमें जो कुछ सन्देह की गुंजाइश हो सकती है उसे इस लेख के प्रकाशित हो जाने के पश्चात् पुनः दिया जा सकता है।

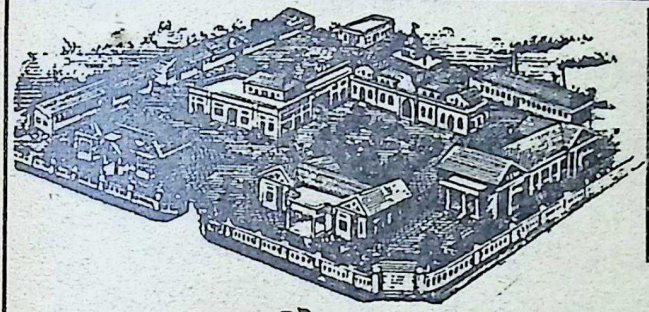

४५ वर्षों से विश्व भर में प्रतिष्ठा प्राप्त भारत की प्रमुख आयुर्वेदिक औषध निर्माणशाला

रसशाला औषधाश्रम REGD. गोंडल, सौराष्ट्र।

गोंडल रसशाला के कारखाने में विविध प्रकार की भस्में, रसरसायन, कूपिपक्व रसायन, पर्पटी, गुटिका, चूर्ण, वगैरह सैकड़ों प्रकार की हाथ से बनी औषधियाँ तैयार रहती। हिन्दुस्तान के प्रत्येक प्रदेश में और चीन, फीजी, अफ्रीका, अमेरिका, युरोप में भी जाती। सब भाषा के सूचीपत्र मुफ्त भेजते हैं।

ऋद्धिखडः—वादिखडः मूल्य ३) रुपया

नित्यनाथ सिद्ध का यह धातुवाद सुवर्ण सिद्धिका अद्भुत अप्राप्य ग्रन्थ संवत १७८५ साल की हस्त लिखित प्रति के आधार से प्रसिद्ध किया है। पत्र २०० पक्का जिल्द २० उपदेश हैं। धातुवाद में रस लेने वालों के लिए संग्राह्य है। मूल श्लोक मात्र है।

गोंडल रसशाला औषधाश्रम शाखा नं० १
वसंत वाडी के सामने, ४१६ कालबा देवी रोड, मुम्बई २।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जड़ी बूटियों में पांच अमृत

लेखक —पं० मूलनारायण मालवीय

संसार में भारतवर्ष ही एक ऐसा देश है जहां औषधियों के काम में आने वाली जड़ी-बूटियों का बाहुल्य है। वनस्पतिशास्त्र के विद्वानों का मत है कि संसार की सभी प्रकार की जलवायु, ऋतु और मिट्टी केवल भारत में ही उपलब्ध है। यही कारण है कि दुनिया के किसी भी देश की अपेक्षा भारत में सबसे अधिक प्रकार की वनस्पतियां मिलती हैं। सुनने में यह भी आया है कि अभी हाल में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक गवेषणा परिषद ने एक पुस्तिका प्रकाशित की है जिनमें तीन हजार से अधिक पौधों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की गई है। सन् ५२ में स्विट्जरलैंड के प्रसिद्ध वनस्पति विज्ञानवेत्ता प्रो० आर्थर बम्बई आये थे और आपने बड़े जोरदार शब्दों में कहा था कि "भारत औषधीय जड़ी-बूटियों का भण्डार है।" इतना ही नहीं सन् ५२ के दिसम्बर में लंदन का एक समाचार भारतीय पत्रों में प्रकाशित हुआ था जिसमें पढ़ने को मिला था कि लीवरपूल में जड़ी-बूटियों का एक संग्रह मिला है। वहां ब्रिटिश विशेषज्ञों के अतिरिक्त फ्रांस, स्वीडन तथा लिस्बन के विज्ञानवेत्ताओं ने जड़ी-बूटियों की जानकारी प्राप्त करने की भी इच्छा की थी।

इन जड़ी-बूटियों में गुड़ूची, गोखरू, मुसली, मुंडी और शतावरी ऐसी गुणकारी हैं कि आयुर्वेद शास्त्र में उन्हें अमृत की संज्ञा इस प्रकार दी गई है —

गुड़ूची गोक्षुरं चैव, मुसली मुन्द्रिका तथा।
शतावरीति पंचनां, योगः पंचामृताभिधः ॥

इन पांचों अमृतों में गुरिच की गणना सर्वप्रथम है, इसलिए सबसे पहिले यहां पर गुरिच का ही परिचय देना आवश्यक है। गुरिच, को गुडूची, अमृता, छिन्ना इत्यादि के नाम से पुकारा जाता है। इसकी उत्पत्ति की एक कथा प्रसिद्ध है कि जब भगवान् राम और रावण के बीच युद्ध हुआ था, उस समय रावण द्वारा बानर, भालू इत्यादि मारे गये थे, उन्हें देवराज इन्द्र ने अमृतवर्षा करके जिला दिया था। अमृत की बूंदें जो इधर-उधर गिरीं उससे गुरिच की उत्पत्ति हुई थी। वास्तव में देखा जाय तो इसमें अमृत के समान गुण पाये जाते हैं। इसके गुणों के सम्बन्ध में निघंटुकार का मत है कि यह तृषा, दाह, धातुक्षीणता, जीर्णज्वर, खांसी, पांडुरोग, कामला, कोढ़, वातरक्त, कृमिरोग, बवासीर, मूत्र कृच्छ्र, हृदयरोग और बादी इत्यादि रोगों को दूर करती है। गुरिच को कूट कर पानी में भिगो कर इसका सत्व निकालते हैं। गुरिच का सत भी ऊपर लिखे हुए रोगों को दूर करता है। बहुत दिनों की बात है कि यूरोप के वनस्पति शास्त्र के जानकार डा० वाइट ने गुरिच के सम्बन्ध में लिखा था कि गुरिच पाचन शक्ति को बढ़ाती है और गुरिच की डंडी को कूटकर कई बार सर्प काटे हुए व्यक्ति को पिलाने से सर्प का विष उतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है। ध्यान रहे कि आध घण्टे के भीतर इसे तीन-चार बार पिलाना चाहिये।

आजकल गो जाति के अभाव और उनके पालन की असुविधाओं के कारण घी, दूध, दही का मिलना कठिन हो रहा है। पौष्टिक वस्तुओं के अभाव से एक प्रकार से निर्बलता का साम्राज्य है। ऐसी दशा में निर्बल मनुष्यों के लिए गुरिच का सेवन करना बहुत उपयोगी होगा। निर्बलता दूर करने के लिये गुरिच, आँवला और गोखरू को सम मात्रा में लेकर कूट पीस कर थोड़ा घी मिश्री मिलाकर प्रातः सायंकाल ६ माशा की फंकी जल या दूध से लेनी चाहिये। सभी प्रकार की गुरिच अच्छी होती है, किन्तु नीम पर की गुरिच का अधिक महत्व है।

(२) गोखरू

गोखरू दो प्रकार के पाये जाते हैं, एक बड़ा और दूसरा छोटा। एक प्रकार से दोनों के गुण एक समान हैं किन्तु छोटे की अपेक्षा बड़ा गोखरू अधिक महत्व रखता है। गोखरू के गुणों की प्रशंसा में वैद्यक शास्त्र का मत है कि यह शीतल, बलकारक, वस्तिशोधक, शुक्र जनक, वायुनाशक और पुष्टिकारी होता है। इसका प्रयोग पथरी, प्रमेह, श्वांस, खांसी बवासीर और कठिन हृदयरोग पर किया जाता है। गुरिच की तरह इसे भी रसायन माना गया है।

उ० प्र० शिक्षा विभाग के भूतपूर्व डिप्टी डाइरेक्टर स्व० नेहपाल सिंह जी गोखरू की चाय पीते थे और उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा किया करते थे। गोखरू के लेने से मूत्र बहुत जल्दी उतरता है, इसलिए मूत्र कृच्छ्र की भी यह अच्छी औषधि है। गोखरू के सेवन से शरीर की निर्बलता दूर होती है और प्रमेह का शमन होता है। गोखरू चूर्ण में लौंग, इलायची, शक्कर और घी मिलाकर लेने से शरीर पुष्ट होता है। गोखरू के चूर्ण की मात्रा कम से कम ३ माशे की होनी चाहिये।

(३) मुसली

मुसली, जिसे मुसलीकन्द भी कहते हैं, दो प्रकार की होती है। एक काली दूसरी सफेद। सफेद की अपेक्षा काली बहुत गुण करती है। मुसली बलकारक, वातनाशक और गुदा सम्बन्धी रोगों को दूर करती है अर्थात् बवासीर को भी लाभ पहुँचाती है। मुसली का चूर्ण करके चीनी की चासनी में मिलाकर इसका अवलेह बनाकर लेने से ताकत बढ़ती है। इसकी ८ मासे चूर्ण की फंकी मिश्री मिलाकर दूध के साथ लेने से पुरुषार्थ बढ़ता है। कांजी के साथ इसकी फंकी लेने से तिजारी का ज्वर दूर होता है। सर्प के विष को दूर करने की भी इसमें शक्ति होती है। पागल कुत्ते के विष को उतारने के लिए काली मुसली के चूर्ण में पीपल का चूर्ण मिला कर लेने से बड़ा लाभ होता है और पीपल के साथ इसको पीस कर पागल कुत्ता जहां काटे हुए हो वहां लगाना लाभप्रद है, जायफल के साथ लेने से बहुमूत्र का शमन होता है।

(४) मुण्डी

मुंडी दो प्रकार की पाई जाती है। इसे गोरखमुंडी भी कहते हैं। बहुधा लोग इसके फूलों का प्रयोग करते हैं किन्तु इसका सर्वाङ्ग भी काम में आता है। यह गलगंड, अपची, मूत्रकृच्छ्र, कृमि, योनिरोग, पांडु, श्लीपद, मृगी और गुदा की पीड़ा को दूर करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्त शोधक भी होती है। साथ ही स्मरण शक्ति को बढ़ाने वाली और बुद्धिवर्धक होती है। मुण्डी के पुष्पों के अर्क अथवा काढ़े के सेवन से रक्त शुद्ध होता है। इसके पुष्पों के चूर्ण को मधु के साथ लेने से बल बढ़ता है। मुण्डी के चूर्ण में लौंग मिला कर लेने से कम्पवायु दूर होती है। शक्कर के साथ लेने से वीर्य पुष्ट होता है। नीबू के रस के साथ देने से मृगी दूर होती है। जायफल के साथ लेने से नपुंसकता मिटती है। ऐसा अनुभवी लोगों का मत है कि इसकी २० पुड़ियों को केवल एक दिन निगलने से नेत्र पीड़ा एक वर्ष तक नहीं होती। एक भाग मुण्डी और आधा भाग समुद्र सोख का चूर्ण बनाकर १ माशा से ९ माशे तक लेने से श्वेत कुष्ट वाले को. बड़ा लाभ होता है। मुण्डी की मात्रा ६ माशे की होनी चाहिये।

(५) शतावरी

शतावरी के पेड़ बहुधा लोग अपने घरों में लगाते हैं। इसकी बेल होती है। केवल इसकी जड़ काम में लाई जाता है। यह स्मरण शक्ति को बढ़ाने वाली, हृदय को बल प्रदान करने वाली और बवासीर, संग्रहणी और नेत्र रोग नाशक होती है। इसके अतिरिक्त वह वीर्यवर्धक, स्तनों में दूध बढ़ाने वाली, वातनाशक तथा गोला, अतिसार, रक्त-पित्त और प्रमेह रोग को दूर करती है। गीली शतावर को दूध के साथ पीसकर पीने से रक्तातिसार मिटता है। शतावर का प्रयोग करने से चेचक के व्रण आपस में नहीं मिलते। शतावर की ताजी जड़ को कूट कर रस निकाल कर उसमें बराबर का तिल्ली तेल मिलाकर पकाये और जब तेल मात्र रह जाये उसे शीशी में भरकर रख ले। इसके लगाने से आधा शीशी और मस्तक की पीड़ा दूर होती है। इसके स्वरस में मधु मिलाकर पिलाने से पित्त का प्रदर दूर होता है। दूध के साथ इसके चूर्ण की फंकी लेने से स्त्रियों के दूध की वृद्धि होती है। इसकी जड़ का रस दूध में मिलाकर पिलाने से सभी प्रकार के विष की शान्ति होती है। मात्रा इसकी ६ माशे की है।

———

तार—इंजैक्शन—झाँसी ला० नं० २/ एस० सी० / पी० फोन नं० ५६३

मिश्रा आयुर्वेदिक इन्जैक्शन्स तथा आ० पेटेन्ट औषधियां

सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

वैज्ञानिक रसायनशाला में सरकारी मान्यता प्राप्त ट्रेन्ड वैज्ञानिकों, कैमिस्टों की देख रेख में निर्मित होते हैं। लाखों रु० की पूंजी द्वारा आधुनिक विद्युत यंत्रों से सुसज्जित विशुद्ध, प्रमाणिक, निरापद, असली और चमत्कारिक गुणकारी हैं। विवरण पत्रिका मुफ्त मंगायें। सर्वप्रथम आविष्कर्ता व लाइसेन्स प्राप्त :—

जी० ए० मिश्रा आयुर्वेदिक फार्मेसी
श्री भैरवनिकुंज, झांसी नं० १०३

हमारे देहली के सोल ऐजेन्ट—मैसर्स रायल स्टोर्स, गोलमार्केट, नई देहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुष्ट प्रतिश्याय

❋ वैद्य श्री लेखराम, शंकर आयुर्वेद भवन, संगरिया

आजकल लगभग ७५ प्रतिशत व्यक्ति प्रतिश्याय (जुखाम) से ग्रस्त दिखाई पड़ते हैं। इससे बड़ी बड़ी व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

मल मूत्र का वेग रोकने से, अजीर्ण से, अधिक बोलने से, क्रोध से, ऋतुओं के विपरीत आहार करने से, शिर पर धूप आदि के लगने से, अधिक जागने से, अधिक सोने या घूमने से, मैथुन से, भाप एवं धुवां लगने से, जमे हुए कफ से युक्त शिर में बढ़ा हुआ वायु प्रतिश्याय उत्पन्न करता है।

पूर्वरूप—छींक आना, शिर भारी होना, शरीर में जकड़न, अंगों का दुखना, रोमांच होना आदि अनेक लक्षण उत्पन्न होते हैं।

भेद—प्रतिश्याय (१) वात (२) पित्त (३) कफ (४) सन्निपात (५) रक्त (६) दुष्ट प्रतिश्याय आदि के भेद से मुख्यतः ६ प्रकार का होता है। इनमें सभी प्रतिश्याय की यदि उचित चिकित्सा न की जावे तो दुष्ट प्रतिश्याय में परिणत होकर असाध्य हो जाते हैं।

सर्व एव प्रतिश्याया नरस्याप्रतिकारिणः।
दुष्टतां यांति कालेन तदासाध्या भवन्ति हि॥

लक्षण—प्राचीन आचार्यों ने इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार से की है—वातं प्रति अभिमुखं श्यावो गमनं कफादीनां यत्र स प्रतिश्यायः।

घ्राणमूले स्थितः श्लेष्मा रुधिरं पित्तमेव वा।
मारुताध्मात शिरसः श्यायते मारुतं प्रति॥

अतः प्रतिश्याय होते ही तुरन्त उसका उपचार करना चाहिये। आजकल भारत में व्याप्त क्षय रोग भी प्रतिश्याय से ही आरम्भ होता है (प्रतिश्यायादथ कासः कासात् संजायते क्षयः। क्षयरोगस्य हेतुत्वे शोषश्चाप्युपजायते) दुष्ट प्रतिश्याय में प्रतिश्याय के लक्षण उग्रतर हो जाते हैं। अतः एव इसमें सभी इन्द्रियों को त्रास पहुँचता है। जैसे कि-

अग्निमांद्य ज्वरश्वासकासोरःपार्श्ववेदना।
कुप्यत्यकस्माद् बहुशो मुखदौर्गन्ध्यशोफ कृत्।
नासिकाक्लेदसंशोषशुद्धिरोधकरो मुहुः।
पूयोपमा सिता रक्तग्रथिता श्लेष्मसंस्रुतिः।
मूर्च्छन्ति चात्र कृमयो दीर्घस्निग्धसिताणवः।

इसमें अग्निमान्द्य, ज्वर, कास, श्वास, के साथ असंफलकों में दर्द होता है। मुंह से दुर्गन्धि आती है। मुंह सूखा हुआ सा प्रतीत होता है। कभी नाक सूख जाती है तथा नाक से कफ स्राव होने लगता है, कभी नाक रुक जाती है, तथा कभी खुल जाती है। नाक से जो कफ निकलता है वह काला लाल गाँठदार आता है। उस कफ के साथ लम्बे चिकने और सफेद छोटे-छोटे कृमि आते हैं। ऐसा दुष्ट प्रतिश्याय बड़ी कठिनता से ठीक होता है। चरक के मत से इसमें बारम्बार छींक आती है, नाक सूखना. प्रतिनाह, प्रतिस्राव, अपीनस, नाशा पाक, नाशार्बुद, पूयरक्त आदि नाक की अनेक व्याधियां उत्पन्न हो जाती हैं। मुंह और नाक से दुर्गन्ध निकलती है और नाक में फुंसियां पैदा हो जाती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, शिरोरोग, कर्ण रोग और नाक रोग भी हो जाते हैं। नाक से पूय आती है, सिर में गंजापन हो जाता है, सिर के बाल झड़ने लगते हैं और बालों का रंग सफेद हो जाता है। प्यास अधिक लगती है। ज्वर, श्वास कास के अतिरिक्त रक्त-पित्त, स्वरभेद और शोष रोग हो जाता है। नाक में घाव हो जाते हैं। ऐसा प्रतिश्याय असाध्य ही समझना चाहिये। किन्तु पथ्य पूर्वक रहने तथा साधारण योगों के सेवन से यह अधिक कष्टप्रद नहीं होता है तथा मनुष्य अपना जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करता है।

चिकित्सा—दुष्ट प्रतिश्याय के रोगी प्रायः निराश हो जाते हैं। ऐसे रोगियों को पहिले चिकित्सा के प्रति विश्वास दिलाना आवश्यक है तथा कुछ चमत्कार भी दिखाया जावे तो उचित होता है। इस रोग में नासिका की सुरंगें कफ से भरी हुई होती हैं और इन सुरंगों की खराबी से ही बार बार दुष्ट प्रतिश्याय का वेग होता है अतः सुरंग शुद्धि के लिये पंच तैलों का उपयोग अत्यन्त ही लाभप्रद सिद्ध हुआ है जैसे कि :—

(१) जैतून तैल ३ माशा, यूकलिप्टिस तैल ३ माशा, महानारायण तैल ३ माशा, महालाक्षादि तैल ३ माशा और लवंग तैल ३ माशा। इन पांचों तैलों को एक शीशी में रख लें और प्रातः सायं नाक में ड्रापर से टपकावें। इससे नाक की सुरंग साफ होने से प्रतिश्याय का वेग नहीं होगा।

(२) नौसादर १ तोला, चूना कली १ तोला इन दोनों को घोट कर एक शीशी में भर कर उस पर कार्क लगा दें। इसके सुंघाने से भी नाक की सुरंगें छींक आकर साफ हो जाती हैं। यह उत्तम शिरोविरेचन है।

(३) खशखश १ तोला को घोंटकर दूध में पकावें तथा घी को गर्म करके आधा सेर दूध में एक छटांक डालें, इसको प्रातः सायं पीने से दुष्ट प्रतिश्याय में आशातीत लाभ होता है।

यह अनुभूत चिकित्सा का दिग्दर्शन कराया है। इसके अतिरिक्त ब्राह्म रसायन, च्यवन प्राश, अगस्त्य हरीतकी, वासावलेह, कट्फलादिनस्य, मृत्युञ्जय रस, कफकेतु रस, कस्तूरी अम्बर, गोरोचन, स्वर्ण रजत, ताम्र लोह, अभ्रक आदि भस्में तथा द्राक्षावलेह, मुक्तावलेह आदि शास्त्रीय योग भी लाभप्रद हैं। दशमूलारिष्ट, बबूलारिष्ट भी लाभ करते हैं।

———

ऐजेन्सी लीजिये !! कन्वेसर चाहियें !

मार्तण्ड के आयुर्वेदिक इंजेक्शन्स

मार्तण्ड फार्मेस्युटिकल्स भारत की सर्वसाधन सम्पन्न इलेक्ट्रिक ऑटोमेटिक मशीनों द्वारा सुसज्जित एक मात्र लैबोरेट्री है जिसमें उत्तर प्रदेशीय सरकार द्वारा प्रदत लाइसेंस के आधीन, सरकार द्वारा क्वालिफाइड कैमिस्टों के भारी उत्तरदायित्व में उच्च कोटि के आयुर्वेदिक इंजेक्शनों का निर्माण होता है जिनका असर फौरन होता है। निरापद सुलभ, सस्ती और स्वदेशी चिकित्सा के लिये हमारे प्रसिद्ध और आशुगुणकारी इंजक्शनों को प्रयोग में लाकर एक बार अवश्य ही देखिये। इंजेक्शनों का वृहत सूचीपत्र तथा रिसर्च का रोचक, सचित्र साहित्य मुफ्त भेजा जाता है, तुरन्त लिखने पर आयुर्वेद की प्रगतिशील मासिक पत्रिका "मार्तण्ड" की एक प्रति भी साथ २ मुफ्त भेजी जाती है, अतः तुरन्त लिखिये।

निर्माताः—मार्तण्ड फार्मेस्युटिकल्स,
बड़ौत (मेरठ) उत्तर प्रदेश।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद की देन

ले०—श्री अत्रिदेव, आयुर्वेदिक फार्मेसी, वाराणसी

आयुर्वेद शब्द का अर्थ—प्रत्येक शास्त्र की अपनी विशेषता होती है, ऋग्वेद ज्ञान को, यजुर्वेद कर्म को और सामवेद उपासना को बताता है। कौटिल्य ने इनको त्रयी नाम दिया है, अथर्ववेद और इतिहास को 'वेद' नाम दिया है। 'वेद' का अर्थ ज्ञान हैं, इसी के नाम के आगे 'आयु' विशेषण लगा है। आयु का लक्षण अत्रिपुत्र ने शरीर इन्द्रिय मन और आत्मा का संयोग कहा है। इसी का एक पर्याय जीवित है। इसलिये आयुर्वेद का क्षेत्र शरीर, मन, इन्द्रिय और आत्मा इन चारों का ज्ञान है। केवल शरीर का ज्ञान आयुर्वेद नहीं है, इसी प्रकार केवल आत्मा का ज्ञान भी आयुर्वेद नहीं। इस प्रकार से यह जहाँ आधुनिक चिकित्सा ज्ञान से भिन्न है, उसी प्रकार उपनिषद् जैसे पवित्र गम्भीर ज्ञान से भी पूर्णतः अलग है। इसीलिए इसको पृथग् उपवेद की शाखा में रखा गया है। कुछ विद्वान् इसे ऋग्वेद का उपवेद मानते हैं, परन्तु आयुर्वेद की संहितायें इसे अथर्ववेद का ही उपवेद स्वीकार करती हैं।

यह आयुर्वेद-आयु का ज्ञान अनादि है। लोगों की मान्यता है कि ज्ञान पहिले हुआ और सृष्टि रचना, मनुष्य, प्राणी पीछे बने। इसमें केवल इतनी ही आपत्ति रहती है कि जब प्रजा ही नहीं थी तब ज्ञान किस को हुआ। इसलिए लोगों की दूसरी मान्यता यह है कि सृष्टि रचना के पीछे ज्ञान हुआ। यह ज्ञान धीरे-धीरे विकसित होता गया। तीसरी मान्यता यह है कि ज्ञान और सृष्टि रचना साथ-साथ हुई, क्योंकि मनुष्य को पता होना आवश्यक है कि कौनसी वस्तु आयु के लिए हितकारी है, कौनसी वस्तु अहितकारी है, किससे सुख है, और किस से दुःख है। इस आयु का मान-परिमाण क्या है, यह ज्ञान होना आवश्यक है। प्रत्येक व्यक्ति देर तक जीना चाहता है, इस दीर्घ जीवन की चाह वेदों में मिलती है 'जीवेम शरदः शतम्' की ध्वनि बराबर अनादिकाल से चली आ रही है। यह जिससे ज्ञान मिलता है, उस ज्ञान का नाम आयुर्वेद है।

आयुर्वेद का ज्ञान संक्षिप्त या सरल नहीं था, इसके लिए जीवक ने सात साल तक निरन्तर तक्षशिला में अध्ययन किया परन्तु फिर भी इसका समाप्ति नहीं पाई। इसीलिए इस विद्या का प्रचार करने वाले चरक थे जिनके द्वारा प्रतिसंस्कार की हुई संहिता का पठन-पाठन आज सर्वत्र है।

चरक-शिष्यों का एक भेद है। शिष्य तीन प्रकार के होते थे—पहिले दण्ड माणवक या माणवक—यह संज्ञा तब तक थी जब तक कि इनका उपनयन नहीं होता था। उपनयन होने के पीछे इनकी संज्ञा अन्तेवासी होती थी। गुरू गृह में विद्या समाप्त करके भी जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग घूम-घूम कर विद्या उपार्जन करते थे या विद्या देते थे वे चरक कहे जाते थे। इस प्रकार के प्रसिद्ध चरक वैशम्पायन हुए जिनके शिष्य पीछे से चरक शब्द से कहे जाने लगे। वैशम्पायन का सम्बन्ध कृष्ण यजुर्वेद से है, इसी शाखा से सम्बन्धित होने से अत्रिपुत्र का नाम भी कृष्णात्रेय है। यजुर्वेद का सम्बन्ध याज्ञवल्क्य से भी है, इसी याज्ञवल्क्य के नाम से बनी स्मृति में अस्थियों की संख्या तीन सौ साठ, त्वचा की संख्या छः अत्रिपुत्र के अनुसार ही मिलती है, जब कि सुश्रुत में यह संख्या तीन सौ और त्वचा सात कही हैं।

जिस प्रकार से स्मृति में शरीर ान का परिचय सामान्य रूप से मिलता है, इसी प्रकार तथा इससे कुछ अधिक विस्तार से आत्मा, मन, इन्द्रिय की विवेचना आयुर्वेद में है। अत्रिपुत्र का यह कहना है—

यावन्तो हि भावविशेषः अस्मिन्लोके तावन्तः पुरुषे।
यावन्तः पुरुषे तावन्तो लोके इति बुद्धास्त्वेनं द्रष्टुमभि सोम्महन्ते॥

लोक में प्रसिद्ध इस कथानक की याद दिलाता है कि जो ब्रह्माण्ड में वह इस मुण्ड में (मनुष्य के सिर में) है। इसी से अथर्व वेद में इसको 'देवकोश' देवताओं का खजाना कहा है। इसलिए प्रकृति और पुरुष की समता-विरूपता सांख्य दर्शन में विचारी गई है। दोनों की समता देख लेने पर ही 'सत्या बुद्धि' उत्पन्न होती है। इस बुद्धि के उत्पन्न होने से अन्धकार मिटता है, और सच्चा ज्ञान होता है।

यही सच्चा ज्ञान आयुर्वेद शास्त्र की आधार शिला है, प्रकृति एवं शरीर की विकृति को देखकर दोनों की समता-विषमता का निर्णय करके ऋषियों ने वनस्पतियों तथा अन्य वस्तुओं के गुण दोषों की विवेचना की। उनकी बड़ी लैबोरेटरी यही प्रकृति थी और उनका सूक्ष्मज्ञान पैनी बुद्धि इनके साधन थे। इस बात को स्पष्ट करने के लिए मैं एक ही चित्र लेता हूँ।

यह चित्र महादेव-शिव का है, जो कि सृष्टि का संहार करने पर भी लोक में शिव-कल्याणकारी कहे जाते हैं। इनके सिर पर गंगा की अविरल धारा गिर रही है, माथे पर द्वितीया का चान्द है। गले में हलाहल और सांप हैं। यह चित्र पुर्णतः आयुर्वेद से सम्बन्धित है। आयुर्वेद में कहा जाता है कि स्थावर विष को जंगम विष नष्ट करता है, क्योंकि स्थावर विष अधोगामी है, और जंगम विष ऊर्ध्वगामी है, इसलिए दंष्ट्री विष जो जंगम है, उसे मौली विष-अफीम आदि नष्ट करती है, और मौलि को जंगम विष नष्ट करता है। यह बात और स्थानों पर ठीक है या नहीं, यह मैं नहीं जानता। परन्तु शिव के जीवित होने में जरूर सत्य है, उन पर हलाहल का जो प्रभाव नहीं होता उसका कारण ये सांप ही हैं, जिन्होंने स्थावर विष को अक्रियाशील बनाया है। विष का प्रभाव-गरमी मस्तिष्क में पहुँची, उसको दूर करने के लिए शिर पर ठण्डे पानी के लिए हिमालय से उत्पन्न गंगा की शीतल धारा गिराई जा रही है। विष से उत्पन्न मुख की कालिमा को दूर करने के लिए चन्द्रमा की द्युति बनाई गई। इस प्रकार से ये शिव पूर्णतः आयुर्वेद के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आराध्यदेव बने, जिनके कोप से ज्वर इस लोक में आया और जिनकी कृपा से ईश्वर-पार्वती के रूप में रस-गंधक के में रसशास्त्र मिला। शिव की इस कल्पना की पुष्टि महर्षि व्यास का "स्थावरं जंगमेन तु" वाक्य पुष्ट करता है, जो कि दुर्योधन द्वारा भीम को विष देकर गंगा में फेकने तथा वहां पर सर्पों के काटने से विष उतरने की घटना से समर्थित होता है।

इसमें ऋषियों ने इतना ही देखा कि एक विष की प्रक्रिया ऊर्ध्वगामी है और दूसरे विष की प्रक्रिया ठीक इससे विपरीत। इसलिए इनमें एक दूसरे का काट होना चाहिए। इसी से लोक में प्रसिद्ध है कि अफीमची को विष नहीं चढ़ता।

मैं आप से थोड़ा प्रसंगान्तर होने की आज्ञा चाहता हूँ। यह विशेष महत्व की बात है, आपको इस पर उदार दृष्टि से विचार करना होगा। अफीम खाना आज व्यसन माना जाता है, और हेय समझा जाता है। परन्तु मैं आप के सामने कुछ तथ्य रखता हूँ आप इन पर भी विचारें।

तथ्य रखने से पूर्व मैं अफीम के सम्बन्ध में कुछ बातें स्पष्ट कर दूं तब आप इस को ठीक प्रकार से समझेंगे। आज हमको जो अफीम सरकार से मिल रही है, यह अफीम प्राचीन काल में घरों में तैयार की हुई अफीम से पूर्णतः भिन्न है। यह ठीक है कि यह भी अफीम के पौदे से बनाया रस है। परन्तु बनाने का ही अन्तर है। इसे बनाने की प्रक्रिया का नाम 'अत्रिपुत्र' ने संस्कार दिया है। संस्कार से वस्तु के गुण बदल जाते हैं। दूध से दही, लस्सी, मक्खन, क्षीर सर्पि, सर्पि, मक्खन, रबड़ी, मावा सब बनाते हैं, परन्तु सब के गुण अलग हैं, ठीक यही बात अफीम के साथ है। प्राचीन काल में अंग्रेजों के आने से पूर्व जब अफीम और नील की खेती पर कोई प्रतिबन्ध नहीं था, यह खेती स्वतन्त्र रूप से होती थी, उस समय अफीम का रस घरों में निकाल कर दूध के साथ पकाकर गाढ़ा करके घड़ों में रक्खा जाता था। यह रस ही अफीम का काम देता था। अमीर लोग इसमें केशर, जाफरान, कस्तूरी, सोने चांदी के वर्क, अम्बर आदि मिला लेते थे।

दूध के साथ पका यह अफीम रस शरीर में खुश्की नहीं करता। अफीम एक ऐसी वस्तु है, जिसमें विरोधी तत्त्व हैं। इसके एलकोलायड़ के गुण बहुत विचित्र हैं। परन्तु सम्पूर्ण अफीम एक दम भिन्न वस्तु है। राजपूताना में अफीम खाने का रिवाज है, अफीम को घोलकर या सुखा लेते हैं। राजपूताने के लोग बहुत समय से लड़ने वाले रहे हैं। इनकी परम्परा सिकन्दर के समय के युद्ध जीवियों के साथ है। लड़ाई में चोट लगना, खून बहना, दर्द होना मामूली बात है। अफीम इन सब से बचाती है। अफीम दर्द को कम करती है, इसे कोई भी इनकार नहीं कर सकता, अफीम स्तम्भक एस्ट्रीनजैन्ट है, इसलिए खून को देर तक बहने नहीं देती। अफीम विष है, इसलिए इन्फैक्शन उत्पन्न करने वाले जर्म्स के लिए उसी प्रकार से विष है, जिस प्रकार से मनुष्य के लिए। इसलिए अफीम खाने वाले का घाव-व्रण कभी पकता नहीं। क्योंकि विष तो जैसे मनुष्य के लिए है, उसी प्रकार जर्म्स के लिए भी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी आधार पर मैंने एक जानकारी टाटा कैन्सर इन्स्टीच्यूट बम्बई, पटना हौस्पीटल से मांगी थी कि आपके यहाँ अफीम के आदि अभ्यासी कितने रोगी कैन्सर के आए। इनमें से टाटा इन्स्टीच्यूट का उत्तर यही आया था कि उनके पास इस तरह का कोई रिकार्ड नहीं है। फिर मैंने एक मित्र की मदद से लन्दन लिखा परन्तु दौर्भाग्य मेरा—आज तक उत्तर की प्रतीक्षा में हूँ। परन्तु मेरी आपसे प्रार्थना है कि आपके बहुत से परिचित कैन्सर के रोगी होंगे। मुझे एक रोगी ऐसा बताइए जो अफीम का अभ्यासी हो और उसे कैन्सर हुआ हो। मेरा विश्वास है कि आपको टार्च लेकर ढूंढने पर एक सौ में पाँच भी नहीं मिलेंगे। यह क्यों ? इसका उत्तर सरलता से नहीं दूंगा इसलिए इसके लिए क्षमा चाहता हूँ।

परन्तु इतना स्पष्ट कर देता हूँ कि इसका सम्बन्ध चाणक्य की विषकन्या बनाने की प्रक्रिया से है जो कि आज के House Serum का ही एक रूप है, जिसके द्वारा चाणक्य ने राज्य के आधे हिस्सेदार पर्वतेश्वर को मार दिया था।

इस अप्रासंगिक बात के लिए क्षमा चाहता हूँ परन्तु इतना जरूर कहता हूँ कि जो चमकता है वह सब सोना नहीं होता। इतिहास को विगाड़ा गया है, हमको इसी माटी में सोचना है, और इसी परम्परा से रास्ता निकालना है।

एक और छोटा सा उदाहरण देकर मैं फिर प्रकृत में आऊँगा। मध्यकाल में शिव और पार्वती की मिलित मूर्तियां भी मिली हैं। यही मिलित रूप रस शास्त्र की जड़ है। रस अर्थात् पारद का सम्बन्ध शिव से है और गन्धक का सम्बन्ध पार्वती से है। ये दोनों जिस प्रकार से मिलकर सृष्टि करते हैं, कभी अलग नहीं होते; इसी प्रकार पारद और गन्धक हैं। रस शास्त्र में कहा गया है कि पारद कितना भी शुद्ध क्यों न हो उसे बिना गन्धक के नहीं देना चाहिए। इस आयुर्वेद में गन्धक के बिना के पारद के योग नहीं हैं, यह कहना अनुचित नहीं। जो एक दो हैं, वे बहुत प्रयोग में नहीं आते। इसके विपरीत ऐलोपैथिक में गन्धक वाला पारद का कोई भी योग नहीं। इसी कारण से इस चिकित्सा विज्ञान में पारद का एक भी योग नहीं जिसे लगातार पन्द्रह, बीस, पच्चीस, तीस या साठ दिन दिया जा सके। आयुर्वेद में पारद के ऐसे योग अनेक हैं, जो कि महीनों तक दिए जाते हैं, और कोई विकार नहीं करते—इसका उदाहरण रस पर्पटी है। इसी प्रकार ब्राइटज़ डिजीज़ में जिसमें वृक्क रुग्ण होते हैं, वैद्य आरोग्यवर्धनी लगातार बहुत समय तक देते हैं। मधुमेह में वसन्त कुसुमाकर को लगातार महीनों खाने वाले व्यक्ति आज भी हैं, उनको और जो हुआ हो परन्तु पारद का दोष नहीं हुआ। इस बात को चमकते हुए सूर्य की तरह तोला और जांचा जा सकता है।

अब मैं प्रकृत में आता हूँ—ऋषियों का जीवन जंगल में अधिक बीता—उनका परिचय हमारी अपेक्षा वृक्ष, वनस्पति, लता, गुल्म से अधिक था, वे ही इनके पड़ौसी थे। इनसे ही उनका आहार एवं उपचार चलता था इसलिए इनके प्रति पूजनीय भाव होना स्वाभाविक है, इस से उनका कहना—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धत्ते भरं कुसुमपत्रफलावलीनां।
घर्मव्यथां वहतिशीतभवां रुजञ्च॥
यो देहमर्पयति चान्य सुखस्य हेतोः।
तस्मै वदान्य गुरवे तरवे नमोऽस्तु॥

वृक्ष के लिए वदान्य और गुरू शब्द सिवाय इस संस्कृति के अन्यत्र नहीं मिलेगा। ठीक भी तो है; इसलिए अन्न को उपनिष में ब्रह्म कहा है। बिना उसकी निन्दा या कुत्सना किए उसे खाना चाहिए। क्योंकि इसीसे यह मानव शरीर पुष्ट होता है। अन्न से पंच महाभूत पुष्ट होते हैं और अन्न से ही जीते हैं। इसीलिए इसके लिए वदान्य और गुरू शब्द से सम्मान प्रदर्शित करना उचित ही है।

उपनिषत् में मन को अन्नमय कहा है; वहां पर कहा है कि आहार की पवित्रता से ही मन की पवित्रता है, मन की पवित्रता से बुद्धि की पवित्रता है। गीता में सत्व, रज और तम की दृष्टि से आहार मन, बुद्धि की विवेचना मिलती है। मन का आहार से क्या सम्बन्ध है इस विषय में मैं राष्ट्रपति, माननीय डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जी के शब्द उद्धृत करता हूँ, जो कि उन्होंने मेरी पुस्तक 'हमारे भोजन की समस्या' की भूमिका में लिखे है—

"फिर एक चीज और है—जिस पर कविराज अत्रिदेव जी ने बहुत जोर दिया है, और वह भी बड़े मार्के की बात है। भोजन का सम्बन्ध केवल शरीर से ही नहीं, मन से भी है, और किस भोजन का कैसा असर मन पर पड़ता है, बहुत ही विचारणीय वस्तु है। यह ऋषियों की एक देन है; जिसका महत्व अभी पूरी तरह लोगों ने नहीं पाया है।"

भोजन की पवित्रता की तुलना हवन के साथ अत्रिपुत्र ने की है, शरीर के अन्दर जठराग्नि है—जिसके लिए गीता में वैश्वानर शब्द आया है, और सुश्रुत में ईश्वर शब्द आया है; उस अग्नि में आहाररूपी समिधा से दोनों समय हवन करना चाहिए। इसमें जो हवन नहीं करता, वह भी ठीक नहीं [गीता में उनको आसुर शब्द से कहा है] और जो अधिक लाद देता है वह भी ठीक नहीं। इसके लिए बौद्ध कवि अश्वघोष की तराजु की उपमा ठीक है, कि भोजन इतना होना चाहिए कि दोनों पलड़े बराबर रहें।

इनको बराबर रखने का एक साधन बहुत सरल अत्रिपुत्र ने बताया है कि चालीस पैंतालीस वर्ष की आयु पर अत्रिपुत्र ने बताया कि एक समय इतना भोजन करना चाहिए जिससे प्राण धारण हो सके। शैवल सिस्टम और क्लिनिकल मैडिसिन के लेखक ने लिखा है कि हमको स्वयं समझ नहीं आती कि बड़ी आयु में आहार जितना कम लिया जाये उतनी शक्ति बढ़ती है। यह बहुत सरल और सस्ता उपाय अत्रिपुत्र ने बताया है। साथ में यदि शय्या सख्त, तख्ता-चौकी या भूमि करली जाये तब तो सोने में सुगन्ध हो जाता है। कितना सरल और आसान उपाय सुझाया है।

आहार के विषय में कहे हुए अत्रिपुत्र के वचन यदि मैं आपको नहीं सुनाता तो एक तरफ मैं अपने कर्त्तव्य से च्युत होता हूँ और दूसरी तरफ आप और ऋषि के प्रति अपराधी होता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिताभिर्जुहुयान्नित्यमन्तराग्नि समाहितः ।
अन्नपान समिद्भिर्ना मात्राकालौ विचारयन् ॥
आहिताग्निः सदा पथ्या नान्तराग्नौ जुहोति यः ।
दिवसे दिवसे ब्रह्म जपत्यथ ददाति च ॥
नरं निःश्रेयषे युक्तं सात्म्यज्ञं पानभोजने ।
भजन्ते नामंयः केचिद् भाविनोऽप्यन्तराहते ॥
प्राणः प्राणभृता मन्नं अन्नं लोकोऽभिधावति ।
वर्णः प्रसादः सौस्वय जीवितं प्रतिभा सुखम ॥
न रागान्नाप्य विज्ञानादाहारमुपयोजयेत् ।
परीक्ष्य हितमश्नीयात देहो ह्याहार संभवः ॥

इनका एक एक अक्षर, एक एक वाक्य रचना-भारतीय संस्कृति में डूबी हुई है—आहार के विषय में मैं समझता हूँ कि ये स्वर्णसूत्र आपको अन्यत्र कहीं भी इस रूप में या इससे अच्छे रूप में नहीं मिलेंगे ।

आहार के विषय में सबसे महत्व की बात मात्रा Quantity की है, इस विषय में अत्रिपुत्र का सूत्र फिर सबसे अग्रणी है, उनका कहना है कि आहार की मात्रा अग्नि बल के ऊपर निर्भर करती है, इसके ही आधार पर आहार की मात्रा, इसके गुरु और लघु की समीक्षा होती है । भारी और हल्का ये दोनों शब्द आज भी हमारे घरों में वृद्धा माताओं से सुनने में आते हैं । जिन वस्तुओं में पृथ्वी और जल का अंश अधिक रहता है, वे भारी हैं, जैसे उड़द, तरबूज, ककड़ी, आदि । जिनमें वायु अग्नि और आकाश की प्रधानता रहती है वे हल्के हैं, तथा कांजी जिसमें राई पड़ती है; सोडावाटर जिसमें वायु रहती है, अथवा जिनको खाकर डकार आती है, वे वस्तुयें अग्नि, वायु वाली होने से हल्की हैं, अग्नि और वायु का स्वभाव ऊपर जाना है और पृथ्वी और जल का स्वभाव नीचे जाना है । लोहे का गोला नीचे आयेगा । हवा से भरा गुब्बारा ऊपर उड़ेगा । कितना सरल विज्ञान है ।

इसी तुलना को लेकर पृथ्वी, अप, तेज, वायु और आकाश इन पांच तत्त्वों से सब पदार्थों की समीक्षा की है । ये पदार्थ शरीर के समान हैं । शरीर भी इन पांच भूतों से बना है, ये अदृश्य हैं इसीसे भूत कहे जाते हैं । मृत्यु के बाद यही पांच बचे रहने से पञ्चत्व नाम दिया जाता है ।

इस प्रकार पंचमहाभूतों से बने इस शरीर का पोषण पांचभौतिक आहार से ही किया गया और मरने के पीछे भी पांचभूत ही शेष बचे । यह दोनों का साधर्म्य था जिसे अत्रिपुत्र ने समझाया ।

कृमि-जर्म्स—

इसी साधर्म्य को आजकल के प्रसिद्ध ज्ञान कृमि-जर्म्सथ्युरी में भी देख लीजिए । वेद में इनके लिए भले ही राक्षस, निशाचर, या तुधान शब्द आए हों परन्तु सुश्रुत में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन शब्दों से कृमि-जर्म्स ही कहे हैं। शिष्य को समझाते हुए स्पष्ट कहा है कि क्षतातुर-व्रणरोगी की सदा निशाचरों से रक्षा करनी चाहिए, क्योंकि मांस और रक्त इनको प्रिय है, इसलिए ये सदा रोगी के पास पहुँचते हैं। इसके लिए जो रक्षा के उपाय कहे हैं, उनसे तथा यम और नियमों से रोगी की रक्षा करें। यम और नियम योग दर्शन में स्पष्ट हैं। रक्षाविधान-दोनों समय प्रातः और सायं रोगी के पास सरसों, नीम के पत्ते, घी और सैन्धानमक द्वारा होम करें। सैन्धानमक को अग्नि में जलाने से क्लोरीन गैस निकलती है, यह निर्विवाद है। क्लोरीन गैस एन्टीसैप्टीक है, इसमें भी दो मत नहीं हैं। सरसों का नाम रक्षोघ्न है, राक्षसों से बचाने वाली। बाण ने विलासवती के सूतिका गृह में सरसों को बिखेरने का उल्लेख किया। अत्रिपुत्र ने सरसों और अजवायन-भूतिहा का भी उल्लेख किया है। सरसों में कृमिनाशक गुण उसके तैल के कारण ही है। तैल में डूबा आचार खराब नहीं होता, तेल लगी लकड़ी को घुण नहीं लगता। इसी से मंत्रियों ने राजा दशरथ का शव भरत के आने तक तैल द्रोणी में रखकर सुरक्षित किया था। इसी प्रसंग में एक अनुभव आपके सामने रख देता हूँ। सन् १९२८ में जब मैं रंगून में प्रैक्टिस करता था तो एक बार मैंने शहद खरीदा जो बहुत सस्ता था। परन्तु था शुद्ध। मैंने प्रसंगवश वह शहद और यह भ्रुव अपने एक मित्र को बताया। मित्र एक बड़े प्रोवीजन स्टोर के मालिक थे, वे भी अस्ट्रेलिया का शुद्ध मधु बेचते थे। उन्होंने इसके सस्ते होने का एक कारण बताया। वह सुनने योग्य है, उन्होंने बताया कि यदि कोई प्रसिद्ध भिक्षु मर जाता है, तब उसका शव कुछ महीनों के लिए शहद में रख दिया जाता है जिससे कि दूर दूर के भिक्षु आकर दर्शन कर सकें। पीछे से यह शहद बाजार में बिक्री के लिए आ जाता है। सम्भवतः यही कारण इसके सस्तेपन का है। यहाँ पर स्मरण रखना चाहिए कि बर्मा में सरसों का तैल नहीं होता।

पीछे मुझे अपने गांव में भी पता लगा कि यहां के मुसलमान रईस अपने बाग के आमों को शहद में सुरक्षित करते हैं, शहद उनको जमींदारी में से मुफ्त पर्याप्त मिलता था।

प्राचीन काल में कृमियों से जर्म्स से बचाने वाली दो वस्तुयें थीं तैल और मधु। जर्म्स में भी पूयोत्पादक जीवाणु वायवीय 'एरविक' है, इनको जीवन के लिए वायु चाहिए। शुद्ध तैल एवं शुद्ध मधु जिसमें पानी का अंश नहीं, उनके कारण इनको वायु नहीं मिलती जिससे वे अधिक जी नहीं सकते। इनमें सांघुता घट्टत्त्व होने से ये आगे-आगे बढ़ नहीं सकते।

राक्षस और जर्म्स एक ही प्रन्तति के हैं, दोनों को मांस और रक्त प्रिय हैं, दोनों अंधेरा पसन्द करते हैं सूर्य का प्रकाश दोनों को नहीं भाता। दोनों नाना प्रकार का रूप बदलते हैं [मलेरिया के जीवाणु का जीवनचक्र इसमें उत्तम उदाहरण है] दोनों आंखों से अदृश्य हैं, दोनों को यज्ञ, हवन, धूम से द्वेष हैं, उससे भागते हैं, दोनों ही अपवित्रता को, गन्दगी को पसन्द करते हैं।

इस स्थूल साधर्म्य से आयुर्वेद में कृमियों की तुलना राक्षसों से करके उनके लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राक्षपू, निशाचर, यातुधान शब्द बरता है, जो कि इस संस्कृति का प्राचीन एवं प्रचलित शब्द था—और राक्षसों के मारने का जो उपाय था, वह भी स्पष्ट था।

साधर्म्य के और भी उदाहरण ढूंढ़े जा सकते हैं, जैसे जमें हुए कफ को स्वेदन स निकालना, जिस प्रकार कि जमी बर्फ को गरमी में पिघलाते हैं। अभिप्राय यह कि आयुर्वेद शास्त्र की प्रेरणा उनको प्रकृति से मिली, उसी के धर्म-कर्म को समझकर उसीके अनुरूप तुलना में आयुर्वेद शास्त्र का विकास किया। मुर्गा पांव से बखेर कर खाता है, इसलिए उसे विष्किर समूह में रखा; तोता ठोंग मार कर खाता है, उसका प्रतुद समूह में उल्लेख किया। यह वर्गीकरण कितना सरल-बुद्धिगम्य है। दालों में द्विदल होते हैं, इनको शमीवर्ग में लिया; नोक वाले धान्य को शूकवर्ग में लिया जिनके लिये आधुनिक शब्द डायक्रोटिक और मोनोक्रोटिक हैं।

सारभूत यही है कि आयुर्वेद-प्रणेता ऋषियों का जीवन प्रकृति के अधिक समीपस्थ था, निवास जंगल में था, खान-पान शुद्ध सात्त्विक था। उन्होंने जब इसका परित्याग किया तभी वे भारी शरीर आलसी, मन्द-चेष्टा, कार्यों में उपेक्षा वाले बने। इसके लिए उनको इन्द्र के पास जाने की जरूरत हुई। इन्द्र ने उस शहरी-कृत्रिम आहार और जीवन के लिए ग्राम्य आहार और ग्राम्य जीवन इन दो शब्दों का प्रयोग किया। यही जीवन रोग का, अस्वाथ्य का कारण बताया।

इसके लिए उसने रसायन सेवन का उपदेश दिया। रसायनों में सरल रसायन-शीतोदक, दूध, दही, घी हैं। इनमें ठण्डा पानी प्रातः उठने में तुरन्त पीना और दूध गृहस्थ रात में सोते समय और सामान्य जन प्रातः पिये। ये भी उत्तम रसायन हैं। इस प्रसंग में मैं यदि यह स्पष्ट कर दूँ कि ताम्बे के पात्र में क्या गुण है, तो अनुचित न होगा। विशेषतः जब मैं इस देश पर तीन सौ वर्ष तक शासन करने वाले सर्वगुण-सम्पन्न जिनकी कि वेश-भूषा एवं अन्य बातों की नकल करने में रामकृष्ण की यह संतति गौरव अनुभव करती है, उसी के शब्दों का सारांश सुना दूं "आसाम के नागा इलाके में एक बार हैजा बुरी तरह फैला, उस समय बंगाल के जो डायरैक्टर सर्जन जनरल थे उन्होंने उस क्षेत्र का निरीक्षण किया, उन्होंने लिखा था कि उस क्षेत्र में जिन लोगों ने अपनी भुजाओं पर, बाहुओं पर ताम्बे का पैसा बांधा हुआ था वे इस रोग से बच गये। ताम्बा पसीने के साथ मिलकर शरीर में पहुँचता था। सम्भवतः इसी प्रतिक्रिया का यह फल हो।

ताम्र में कुछ गुण हैं जो औरों में नहीं है। अत्रिपुत्र ने ताम्रको विष कहा है, यह विष है इसलिए हैजे के जर्म्स इससे मरते हैं। रसशास्त्र में कहा है कि विष से बढ़कर ताम्र विष है; इसलिए सम्भवतः पानी में रहने वाले सामान्य सूक्ष्म-कृमि इस पात्र में मर जाते हों; इसी से हिन्दु ताम्र के पात्र को पानी के लिए अधिक पसन्द करते हैं। इस पात्र में रखा ठण्डा पानी रसायन है। यह सरल और सस्ती है, इससे आगे आंवला है।

(शेष पृष्ठ ४३ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन स्थायी समिति के अधिवेशन का कार्यविवरण

स्थान:—श्री स्वामी चेतनानन्द चिदाकाशी का सत्यधर्म मन्दिर, (स्वामी हेमराज मिशन) ७/५, पूर्वी पटेल नगर, नई दिल्ली—१२।

समय—ता० २८ नवम्बर, १९५७, दिन वृहस्पतिवार, अपराह्न २ बजे से।

उपस्थिति—

(१) वैद्य श्री अनन्त त्रिपाठी शर्मा, वरहामपुर, (महासम्मेलनाध्यक्ष) (२) वैद्य श्री वी० बी० नटराज शास्त्री, त्रिचनापल्ली (विद्यापीठाध्यक्ष), (३) सर्व श्री वैद्य पं० शिवशर्मा, बम्बई (४) प्यारेलालशर्मा, बम्बई (५) ब्रह्मदत्त शर्मा, भुसावल, (६) कन्हैयालाल भेड़ा, बम्बई, (७) कान्तीनारायण मिश्र, पटियाला, (८) प्रेमचन्द, लजवाना, (९) हरिवंश, पटियाला, (१०) हरीन्द्र, पटियाला, (११) कीर्ति शर्मा, पटियाला, (१२) ओम्प्रकाश इन्दु, फगवाड़ा, (१३) ज्ञानचन्द जैन, जींद, (१४) सरजीत सिंह, पटियाला, (१५) अमरनाथ शास्त्री, पटियाला, (१६) मोहनकृष्ण, भिवानी, (१७) उमादत्त शर्मा, पटियाला, (१८) रामगोपाल, पटियाला, (१९) मामचन्द वत्स, रामराय, (२०) चेतनानन्द, फगवाड़ा, (२१) देवराज मिश्र, अमृतसर, (२२) नवीनचन्द्र भारद्वाज, जगराओं, (२३) मुन्शीराम शर्मा, भटिण्डा, (२४) रामस्वरूप, पटियाला, (२५) मस्तराम कौशल, पटियाला, (२६) यशवन्तराय, नाभा, (२७) आनन्दप्रकाश गौतम, टोटू, (२८) सोमप्रकाश शर्मा, दयालपुर सोढ़ियां, (२९) विश्वेश्वरनाथ शास्त्री, पटियाला, (३०) रामस्वरूप शास्त्री, पटियाला, (३१) हरवंशलाल, पटियाला, (३२) मित्र सिंह महन्त, चीमां, (३३) रामस्वरूप, लोगोंवाल, (३४) भक्तराम शर्मा, उचाना मण्डी, (३५) प्यारेलाल शास्त्री, खैरामज्जा, (३६) वन्तराम, पटियाला, (३७) पारब्रह्म, गड़खल, (३८) राधाकृष्ण, पटियाला, (३९) परमानन्द वैद्यरत्न, दिल्ली (४०) कविराज प्रतापसिंह, नई दिल्ली, (४१) उपेन्द्रनाथ दास, दिल्ली, (४२) घनानन्द पन्त, दिल्ली, (४३) स्वामी चेतनानन्द चिदाकाशी, दिल्ली, (४४) वैद्यनाथ सरकार, दिल्ली, (४५) कैलाशचन्द्र अग्रवाल, दिल्ली, (४६) रामस्वरूप चक्रवर्ती, दिल्ली, (४७) हजारीलाल शर्मा, दिल्ली. (४८) रामचन्द्र शर्मा, दिल्ली, (४९) शान्तिप्रसाद जैन, दिल्ली, (५०) केशवप्रसाद आत्रेय, दिल्ली, (५१) बालकृष्ण शर्मा, दिल्ली, (५२) काशीनाथ शर्मा, दिल्ली, (५३) अमृतलाल हंस, दिल्ली, (५४) जगदीशप्रसाद शर्मा, दिल्ली, (५५) हरगोविन्द शर्मा, दिल्ली, (५३) खुशहालचन्द शर्मा, दिल्ली, (५७) हरिचरण, दिल्ली, (५८) कुन्दनलाल खेतल, दिल्ली, (५९) चन्द्रकान्त दीक्षित, दिल्ली, (६०) दरयाईमल, नई दिल्ली, (६१) अमरनाथ चोपड़ा, दिल्ली, (६२) दौलतराम शर्मा, दिल्ली, (६३) नानकचन्द शास्त्री, दिल्ली, (६४) यशपाल, नई दिल्ली, (६५) शिवनाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर्मा, दिल्ली, (६६) देशराज कपूर, नई दिल्ली, (६७) दयानन्द राजपाल, नई दिल्ली, (६८) चन्द्रप्रकाश शास्त्री, दिल्ली, (६९) बन्सरीलाल साहनी, दिल्ली, (७०) टेकचन्द दीवान, नई दिल्ली, (७१) सन्त सारंगहरि, दिल्ली, (७२) बलराम शर्मा, दिल्ली, (७३) भानुदत्त मुलतानी, नई दिल्ली, (७४) गुरुदत्त, नई दिल्ली, (७५) लखवीर सिंह, दिल्ली, (७६) मक्खन सिंह, दिल्ली, (७७) मोहनलाल शास्त्री, दिल्ली, (७८) गणपति सिंह, दिल्ली, (७९) ज्ञानचन्द दुग्गा, नई दिल्ली, (८०) नेत्रपाल शास्त्री, नई दिल्ली, (८१) राजवैद्य सुधन्वा, नई दिल्ली, (८२) रामगोपाल शास्त्री, दिल्ली, (८३) भुवनचन्द्र जोशी, दिल्ली, (८४) रामदास, नई दिल्ली, (८५) ओंकारप्रसाद शर्मा, दिल्ली, (८६) हरिकृष्ण सहगल, दिल्ली, (८७) ओमप्रकाश, दिल्ली, (८८) ब्रह्मस्वरूप, दिल्ली, (८९) नानकचन्द शर्मा, दिल्ली, (९०) मेहता सीतारामदत्त, दिल्ली, (९१) गोविन्दसहायदत्त, दिल्ली, (९२) बलदेवराज, दिल्ली। (९३) कृष्णदत्त मुलतानी, नई दिल्ली। (९४) रामलाल मल्होत्रा, नई दिल्ली। (९५) आशुतोष मजुमदार, नई दिल्ली, (९६) राधाकृष्ण उपाध्याय, दिल्ली, (९७) बनमालीदास, कटक, (९८) सीताराम मिश्र, जयपुर, (९९) मणिराम शर्मा, रतनगढ़, (१००) जयरामदास स्वामी, जयपुर, (१०१) चिमनलाल शर्मा, रतनगढ़, (१०२) रमेशचन्द्र व्यास, अजमेर, (१०३) कृष्णगोपाल, बारां, (१०४) रामकिशोर शर्मा, जयपुर, (१०५) रामप्रकाश स्वामी, जयपुर, (१०६) मंगलदास स्वामी, जयपुर, (१०७) विरंचीलाल शर्मा, इस्लामपुर, (१०८) आचार्य नित्यानन्द, पिलानी, (१०९) बद्रीविशाल त्रिपाठी, कानपुर, (११०) लक्ष्मीनारायण मिश्र, मेरठ, (१११) लक्ष्मीनारायण, गाजियाबाद, (११२) लीलाधर शर्मा, गाजियाबाद, (११३) अमरनाथ, देहरादून, (११४) सागरदत्त, हरिद्वार, (११५) रामजीलाल शास्त्री, फिरोजाबाद, (११६) जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, प्रयाग (११७) दुर्गादत्त शास्त्री, बनारस, (११८) त्रिपाठी कमलाप्रसाद मणि, पटना, (११९) रामप्रसाद यादव, छपरा, (१२०) वामनराव दी० वैद्य, बम्बई।

निम्नलिखित महानुभावों की ओर से सम्मतिपत्र प्राप्त हुए :—

सर्व श्री वैद्य पं० रामगोपाल मिश्र, गोंदिया। सरयूकान्त झा, मुजफ्फरपुर। रामनारायण वैद्य, झांसी। वैद्यनाथ मिश्र, मुजफ्फरपुर। चन्द्रकुमार द्विवेदी, शामली। जनार्दन शर्मा, रायगढ़। लालमणि मिश्र, रगौल। घासीराम गणपतराम जोशी, देवास। मदनमोहन पुष्करणा, अमृतसर। रमणीकलाल जेठालाल दवे, अहमदाबाद। पंढरीनाथ गणपत सा, गोगांव। दत्तात्रेय शास्त्री जलूकर, नसीराबाद। नारायणदत्त शास्त्री, इन्दौर। हीरालाल शास्त्री, फरूखाबाद। ताराशंकर, वाराणसी। माधवगणेश जोशी, पूना। हरिदत्त शास्त्री, बम्बई। सत्यनारायण मिश्र, कानपुर। उमाशंकराचार्य, वाराणसी। जी० जी० वामनाचार्य, कोल्हापुर। रामगोपाल शर्मा, किन्हीराजा। शम्भूनाथ पाण्डे, कानपुर। ज्वालाप्रसाद, नागपुर। भि० वि० डेग्वेकर, जबलपुर। भ्रमरदत्त मिश्र, केकड़ी। माधवप्रसाद, जोधपुर। वीरलभाया वैद्य, छत्तरपुर। श्री चरणतीर्थ जी, गोंडल। ठाकुरदत्त शर्मा, देहरादून,।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रतिलाल गिरजाशंकर, भावनगर। छोटनलाल, पटना। गिरिजाशंकर पाठक, बरौनी। ऋषिराम शर्मा, होशियारपुर। कैलाशप्रसाद गुप्त, पिरो। रामेश्वरसिंह कंवर, जालन्धर। कालीदास चट्टोपाध्याय, कलकत्ता। वैद्यनाथ उपाध्याय, पानापुर। जानकीप्रसाद, शिवपुरी। मोतीलाल त्रिवेदी, लोसल। गयाप्रसाद शास्त्री, हैदराबाद। विद्यानारायण शास्त्री, ईशीपुर। [illegible]लोकीनाथ शास्त्री, स्याना। जगदीशचन्द्र, कोटकपूरा। चिमनलाल, पोरबन्दर। उदयलाल महात्मा, देवगढ़।

कार्य विवरण

वैद्यराज श्री अनन्त त्रिपाठी शर्मा, अध्यक्ष, अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन, के सभापतित्व में कार्यवाही प्रारम्भ हुई।

१—अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन के भूतपूर्व अध्यक्ष, आयुर्वेद के प्रकाण्ड विद्वान् प्राणाचार्य श्री पं० गोवर्धन शर्मा, छांगाणी, भिषक्केसरी, के असामयिक देहावसान पर श्री सभापति जी द्वारा उपस्थित निम्नलिखित शोक-प्रस्ताव सर्वसम्मति से खड़े होकर तथा दो मिनिट मौन रखकर स्वीकार हुआ:—

"अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन की स्थायीसमिति का यह अधिवेशन अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन के भूतपूर्व अध्यक्ष, प्रकाण्ड आयुर्वेद विद्वान्, प्राणाचार्य श्री पं० गोवर्धन शर्मा छांगाणी, भिषक्केसरी, नागपुर, के असामयिक निधन पर शोक सहानुभूति प्रकट करता है और भगवान श्री धन्वन्तरि से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं उनके शोकाकुल परिवार को शान्ति प्रदान करें।"

२—नवीन सदस्यों की स्वीकृति का विषय उपस्थित हुआ और निम्नलिखित सदस्यतायें सर्वसम्मति से स्वीकार हुईं :—

आश्रयदाता सदस्य:—वैद्य श्री मोतीशंकर सनाढ्य, कोटा।

आजीवन सदस्य

कविराज श्री भुवनचन्द्र जोशी, दिल्ली।
वैद्य श्री सुरेशचन्द्र चतुर्वेदी, बम्बई।
वैद्य श्री वी० एम० गोगटे, नासिक।
वैद्य श्री प्यारेलाल शर्मा, बम्बई।
वैद्य श्री देवदत्त शर्मा, बम्बई।
वैद्य श्री एन० वी० उपाध्याय, मंगलोर।
वैद्य श्री एस० एस० शास्त्री द्विवेदी, पवन्जे।
वैद्य श्री आर० जानकीराम, बंगलोर।
वैद्य श्री हनुमान शास्त्री, संग्रामगढ़।
वैद्य श्री रंगनाथ शास्त्री, जयपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्य श्री चिमनलाल, रतनगढ़ ।
वैद्य श्री पी० टी० के० नाम्बियर, मैसूर ।
वैद्य श्री ए० एस० अब्दुल हकीम, बंगलोर ।
वैद्य श्री आर० रामाचार्लू, बंगलोर ।
वैद्य श्री रामस्वामीचार्लू, बैटाहल्ली, मैसूर ।
वैद्य श्री पण्डित नीलप्पा, माण्डया, मैसूर ।
वैद्य श्री जी० एन० पटवर्धन, सिरसी, मैसूर ।
वैद्य श्री जी० एस० जल्लाटी, बेलगाम ।
वैद्य श्री एम० एस० कलकाण्डी, बेलगाम ।
वैद्य श्री पी० सी० हिरेमठ, गुडीगेरी (धारवाड़) ।

मान्य सदस्य :—वे सभी मान्य सदस्य जिनका सदस्यता शुल्क २८ नवम्बर १९५७ तक कार्यालय में प्राप्त हो चुका है ।

३—नि० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ की केन्द्रीय प्रबन्धक समिति के ता० २७-११-५७ के अधिवेशन द्वारा स्वीकृत दिल्ली में विद्यापीठ द्वारा आयुर्वेद महाविद्यालय स्थापना सम्बन्धी प्रस्ताव तथा श्री धन्वन्तरि मन्दिर, रतनगढ़, श्री दयानन्द कन्या आयुर्वेद विद्यालय, दिल्ली, श्री बुन्देलखण्ड आयुर्वेदिक विश्वविद्यालय, झांसी, को विद्यापीठान्तर्गत लेने तथा ऋषिकेश में आयुर्वेद विश्वविद्यालय स्थापनार्थ श्री स्वामी दयानिधि जी, ऋषिकेश, द्वारा निजी सम्पत्ति विद्यापीठ को देने के प्रस्ताव पर विचार प्रारम्भ हुआ ।

पर्याप्त वाद-विवाद एवं विचारविमर्श के अनन्तर श्री महासम्मेलनाध्यक्ष जी द्वारा प्रस्तुत निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार हुए :—

(१) निश्चय हुआ कि (क) अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन-विद्यापीठ की ओर से दिल्ली में एक आयुर्वेदिक संस्था स्थापित की जाये, (ख) इस प्रस्ताव को कार्यान्वित करने के लिए निम्नलिखित पांच सदस्यों की एक उपसमिति बना दी जाय :—

१. श्री महासम्मेलनाध्यक्ष ।
२. श्री विद्यापीठाध्यक्ष ।
३. श्री विद्यापीठ मन्त्री ।
४. कविराज श्री उपेन्द्रनाथ दास, दिल्ली ।
५. वैद्य श्री कान्तिनारायण मिश्र, पटियाला ।

तथा (ग) इस प्रस्तावित संस्था के संचालनार्थ संगृहीत (पूर्व संगृहीत तथा भविष्य में संग्रह किये जाने वाले) धन को केवल इस संस्था के निमित्त ही उपयोग में लिया जाय ।

यह भी निश्चय हुआ कि समिति को इस प्रस्ताव को यथासम्भव शीघ्र कार्यरूप में परिणत करने का अधिकार होगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन की यह स्थायी समिति प्रस्ताव करती है कि श्री पं० मणिराम शर्मा, रतनगढ़, श्री स्वामी दयानिधि जी, ऋषिकेश, श्री आर० बी० धुलेकर, झांसी, तथा श्री दयानन्द कन्या आयुर्वेद महाविद्यालय के दानों को सधन्यवाद स्वीकार करने पर विचार किया जाय।

निश्चय हुआ कि निम्नलिखित सदस्यों की एक उपसमिति का निर्माण किया जाय जो उपर्युक्त विभिन्न दानों की शर्तों पर विचार करके स्वीकृति के लिए सिफारिश करे :—

१—श्री महासम्मेलनाध्यक्ष।

२—श्री विद्यापीठाध्यक्ष।

३—श्री विद्यापीठ मंत्री।

४—श्री कविराज उपेन्द्रनाथदास, दिल्ली।

५—श्री वैद्य बाबूराम मिश्र, हापुड़।

इस उप समिति को यह अधिकार होगा कि यह सम्बन्धित स्थानों के स्थानीय व्यक्तियों को भी आवश्यकतानुसार अपने में सम्मिलित कर ले।

४—सरकार द्वारा आसव-अरिष्टों के निर्माण पर लगाये गए प्रतिबन्ध के निषेधार्थ उपाय-निर्धारण का विषय विचारार्थ उपस्थित हुआ।

निश्चय हुआ कि आसव-अरिष्टों पर मद्य-निषेध कानून के अन्तर्गत लगाये गये प्रतिबन्धों को हटाने के लिए सरकार से अनुरोध किया जाय क्योंकि आसव-अरिष्ट आयुर्वेदिक चिकित्सा के लिए अनिवार्य हैं और उनमें मादक पेयों के समान मद्य नहीं होती।

यह भी निश्चय हुआ कि निम्नलिखित सदस्यों का एक शिष्टमण्डल उपर्युक्त विषय पर वार्तालाप के लिए सम्बन्धित अधिकारियों से मिले :—

१. कविराज श्री बी० एन० सरकार, दिल्ली।

२. कविराज श्री उपेन्द्रनाथ दास, दिल्ली।

३. कविराज श्री शान्ति प्रसाद जैन, दिल्ली।

उपर्युक्त प्रस्ताव श्री सभापति जी द्वारा उपस्थित किया गया तथा सर्वसम्मति से स्वीकार हुआ।

५—आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका को आल इण्डिया न्यूज पेपर्ज एडीटर्ज कांफ्रेन्स का सदस्य बनाने पर विचार प्रारम्भ हुआ। निश्चय हुआ कि आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका को आल इण्डिया न्यूज पेपर्ज एडीटर्ज कान्फ्रेंस का सदस्य बनाया जाय किन्तु ऐसा करने से पूर्व विषय से सम्बन्धित सब बातों पर भली प्रकार विचार कर लिया जावे ताकि इससे संस्था पर किसी प्रकार का दूसरा आर्थिक व्यय या दुःसाध्य कानूनी प्रतिबन्ध लागू न हो जाय।

६—अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन एवं नि० भा० आयुर्वेद विद्यापीठ के सन् १९५७-५८ वर्षीय आनुमानिक आय-व्यय पत्रों के निर्माण एवं स्वीकृति का विषय उपस्थित हुआ तथा कुछ चर्चा के अनन्तर निम्नलिखित प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकार हुआ :—

"निश्चय हुआ कि अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन एवं नि० भा० आयुर्वेद विद्या-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीठ के सन् १९५७-५८ वर्षीय प्रस्तावित आनुमानिक आय-व्यय पत्रों को स्वीकार करने का अधिकार श्री महासम्मेलनाध्यक्ष जी को दिया जाय। इन प्रस्तावित आनुमानिक आय-व्यय पत्रों को पत्रिका के आगामी अंक में प्रकाशित किया जाय। उन पर सदस्य महानुभाव अपनी सम्मति श्री महासम्मेलनाध्यक्ष जी के पास भेजें जिनके निरीक्षण के पश्चात् श्री अध्यक्ष महोदय आनुमानिक आय-व्यय पत्रों को स्वीकार करें।"

(विशेष सूचना—उपर्युक्त प्रस्ताव के अनुसार महासम्मेलन-विद्यापीठ के सन् १९५७-५८ के उक्त प्रस्तावित आनुमानिक आय-व्ययपत्र पत्रिका के गतांक में प्रकाशित हो चुके हैं। उनके सम्बन्ध में जो सदस्य महानुभाव सम्मति भेजना चाहें वे अपनी सम्मति श्री महासम्मेलनाध्यक्ष जी के पास २० जनवरी तक अवश्य भेज देने का कष्ट करें।)

७—४३ वें अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन को श्री जगन्नाथ पुरी में सम्पन्न करने के लिए निखिल उत्कल वैद्य सम्मेलन के निमंत्रण पर विचार का विषय उपस्थित हुआ। श्री इन्द्रप्रस्थीय वैद्य सभा, दिल्ली, के ४३ वें अधिवेशन को दिल्ली में करने के निमंत्रण को भी, जो अजण्डे के प्रकाशन एवं प्रेषण के पश्चात् कार्यालय में प्राप्त हुआ था और विषय सूची में सम्मिलित नहीं था, श्री सभापति जी ने अपने विशेष अधिकार से सभा के विचारार्थ उपस्थित किया।

निखिलोत्कल वैद्य सम्मेलन की ओर से श्री त्रिपाठी जी ने कहा कि हमने यह निमंत्रण करनूल अधिवेशन के अवसर पर दिया था और यद्यपि उस समय अधिकांश सदस्य हमारे निमंत्रण को स्वीकार करने के पक्ष में थे किन्तु तत्कालीन अध्यक्ष महोदय के विशेष अनुरोध पर और इस आश्वासन पर कि आगामी ४२ वां अधिवेशन पुरी में किया जायेगा, हमने बंगलौर के पक्ष में अपना निमंत्रण एक वर्ष के लिए स्थगित कर दिया था। आपने आशा व्यक्त की कि ४१ वें अधिवेशन के बहुमत का आदर करते हुए उत्कल वैद्य सम्मेलन का निमंत्रण स्वीकार किया जायेगा। श्री अध्यक्ष जी ने सभा को बताया कि वे प्रदेश के मुख्य मंत्री डा० श्री हरेकृष्ण महताब आदि से महासम्मेलन को निमंत्रित करने के सम्बन्ध में बातचीत करके तय भी कर चुके हैं।

श्री इन्द्रप्रस्थीय वैद्य सभा की ओर से कविराज श्री कैलाशचन्द्र अग्रवाल ने वर्तमान परिस्थितियों में केन्द्र में प्रचार की आवश्यकता को दृष्टि में रखते हुए दिल्ली में अधिवेशन करने के निमंत्रण को स्वीकार करने का अनुरोध किया। आपने कहा कि उत्कल में अधिवेशन हो इस बात से हमारा विरोध नहीं किन्तु इस वर्ष अधिवेशन दिल्ली में ही होना चाहिए—आगामी वर्ष अधिवेशन उत्कल में किया जा सकता है।

श्री पं० शिवशर्मा जी ने स्थिति का स्पष्टीकरण करते हुए श्री त्रिपाठी जी के कथन का समर्थन किया और कहा कि यद्यपि ४३ वें अधिवेशन को उड़ीसा में करने की उत्कल वैद्यसम्मेलन की मांग न्यायपूर्ण है और उन्हें यह अधिकार मिलना चाहिए तथापि सभा का बहुमत दिल्ली के पक्ष में प्रतीत पड़ता है।

श्री ब्रह्मदत्तशर्मा, भुसावल, तथा श्री बद्रीविशाल त्रिपाठी, कानपुर, ने उत्कल वैद्य सम्मेलन के निमंत्रण का समर्थन किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री वनमाली दास, मंत्री, निखिलोत्कल वैद्य सम्मेलन, ने कहा ४१ वें अधिवेशन के बहुमत को ध्यान में रखते हुए हमारा निमंत्रण स्वीकार होना चाहिए। आपने बताया कि ४२ वें अधिवेशन में रुग्णता के कारण वे पुनः निमंत्रण नहीं दे सके थे—इसलिए अब स्थायी समिति में यह निमंत्रण दिया गया है। आपने अपने निमंत्रण के स्वीकार करने पर बल दिया।

इसी बीच श्री कान्ति नारायण मिश्र द्वारा पटियाला में तथा श्री रामजीलाल शास्त्री, उपप्रधान आगरा जिला वैद्य सभा द्वारा आगरा में तथा वैद्य श्री विरंचीलाल शर्मा, इस्लामपुर, द्वारा राजस्थान में अधिवेशन करने के प्रस्ताव उपस्थित किए गए किन्तु श्री अध्यक्ष जी द्वारा अनुमति न मिलने के कारण इन पर विचार नहीं किया गया। श्री कान्ति नारायण मिश्र ने बाद में पटियाला का निमंत्रण दिल्ली के पक्ष में वापिस ले लिया।

श्री केशव प्रसाद अत्रेय, दिल्ली, तथा श्री आशुतोष मजुमदार, दिल्ली, आदि महानुभावों ने दिल्ली में अधिवेशन करने के पक्ष में भाषण दिए।

जब विषय पर पर्याप्त वाद-विवाद हो चुका और सभा किसी सर्व-सम्मत निर्णय पर न पहुंच सकी तब श्री अध्यक्ष जी ने दोनों निमंत्रणों के पक्ष-विपक्ष में सभा का मत जानने के लिए हस्तोत्तोलन द्वारा मतदान कराया। दिल्ली में अधिवेशन करने के पक्ष में ५३ तथा पुरी में अधिवेशन करने के पक्ष में ११ मत आये। इस प्रकार ४३ वां अधिवेशन दिल्ली में किया जाना स्वीकार हुआ।

इस पर श्री बद्रीविशाल त्रिपाठी ने प्रान्तवार मत गणना की मांग की किन्तु सभापति जी ने इसे अस्वीकृत कर दिया। तदनन्तर श्री बद्रीविशाल त्रिपाठी ने कहा कि क्योंकि यह एक प्रान्त के सदस्यों द्वारा महासम्मेलन के अखिल भारतीय स्वरूप का तिरस्कार है अतः मैं विषय पर रिफ्रेंडम की मांग करूँगा।

८—४२ वें अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन के प्रकाशित कार्य-विवरण के विषय पर वैद्य श्री दीनदयालु तिवारी, नागपुर, के पत्र ता० २९-७-५७ पर विचार हुआ और निश्चय हुआ कि इस में उल्लिखित स्थायी समिति के अधिवेशन की उपस्थिति में उनका नाम भूल वश रह जाने तथा उनके स्थान पर एक अन्य व्यक्ति के नाम के प्रकाशित हो जाने आदि के विषय पर संशोधन पत्रिका में प्रकाशित किया जा चुका है और अन्य विषय विशेष महत्वपूर्ण नहीं है अतः इस पत्र को फाइल किया जाय।

९—दिन-प्रतिदिन बढ़ती हुई मंहगाई के कारण मंहगाई भत्ते में वृद्धयर्थ कार्यालय के कर्मचारियों के प्रार्थना-पत्र पर विचार का विषय उपस्थित हुआ और निश्चय हुआ कि इस पर विचार करके अन्तिम निर्णय करने का अधिकार श्री महासम्मेलनाध्यक्ष जी को दिया जाय।

समय अधिक हो जाने से अजण्डे के विषय संख्या १० पर विचार नहीं हो सका और सभापति जी तथा अन्य समागत वैद्य महानुभावों का धन्यवाद करके सभा विसर्जित हुई।

अनन्त त्रिपाठी शर्मा
सभापति
अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन

वामनराव दी० वैद्य
प्रधानमंत्री
अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निखिलभारतवर्षीयायुर्वेदविद्यापीठकेन्द्रीयप्रबन्धकसमितेः प्रथमाधिवेशनस्य कार्यविवरणम्

स्थानम्—प्र० भा० आयुर्वेदमहासम्मेलन-विद्यापीठकार्यालयः, महालक्ष्मी मार्केट, चान्दनी चौक, दिल्ली।

समयः—२७ नवम्बर, १९५७, बुध वासरे मध्यान्होत्तर, द्विवादनतः।

उपस्थितिः—

वैद्य श्री बा० वा० नटराज शास्त्री, त्रिचनापल्ली, (अध्यक्षः), वैद्य श्री अनन्त त्रिपाठी शर्मा, बरहामपुर (महासम्मेलनाध्यक्षः)।

सर्व श्री वैद्य श्री उपेन्द्रनाथ दास, दिल्ली। मनोहरलाल, दिल्ली। (विशेषतया आमन्त्रितः), नानकचन्द्र शास्त्री, दिल्ली। बालकृष्ण शर्मा, दिल्ली। केशवप्रसाद आत्रेय, दिल्ली। रामस्वरूप चक्रवर्ती, दिल्ली। भुवनचन्द्र जोशी, दिल्ली। कैलाशचन्द्र अग्रवाल, दिल्ली। शिवनाथ शर्मा, दिल्ली। स्वामी चेतनानन्द चिदाकाशी, दिल्ली। प्रेमचन्द शर्मा, दिल्ली। जगदीशप्रसाद शर्मा, दिल्ली (विशेषतया आमंत्रितः)। मोहनलाल शास्त्री, दिल्ली (विशेषतया आमंत्रितः)। राजवैद्य सुधन्वा, नई दिल्ली (विशेषतया आमंत्रितः)। जयरामदास स्वामी, जयपुर। मणिराम शर्मा, रतनगढ़। आचार्य नित्यानन्द, पिलानी। कृष्णगोपाल, बारां। विरंचीलाल शर्मा, इस्लामपुर। श्रीधर मायाधारी शास्त्री, अमृतसर। जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, प्रयाग। जयभगवान शर्मा, खुर्जा। गणेशदत्त, मेरठ। बद्रीविशाल त्रिपाठी, कानपुर। बाबूराम मिश्र, हापुड़। ब्रह्मदत्त शर्मा, भुसावल। वामनराव दी० वैद्य, बम्बई। वनमाली दास, कटक। सीताराम मिश्र, जयपुर।

सम्मति प्रेषकाः—

सर्व श्री वैद्य (१) भि० वि० डेग्वेकर, जबलपुर (२) हरिदत्त शास्त्री, बम्बई, (३) शम्भूनाथ शास्त्री, कानपुर। (४) जी० वी० पुराणिक, बीजापुर। (५) अध्यक्ष, श्री दिगम्बर जैन संस्कृत कालेज, जयपुर। (६) ज्वालाप्रसाद शर्मा, नागपुर। (८) पी०वी०एस० शर्मा, कुरनूल। (९) एम० वेंकट शास्त्री, विजयवाड़ा। (१०) वैद्यनाथ मिश्र, मुजफ्फरपुर। (११) कवि० विजयकाली भट्टाचार्य, कलकत्ता। (१२) माधवप्रसाद आचार्य, रतलाम। (१३) लक्ष्मीकान्त दामोदर पुराणिक, नागपुर। (१४) पां० शि० शेडये, दमोह।

कार्य विवरणम्।

वैद्यराज श्री वा० ना० नटराज शास्त्रिणां विद्यापीठाध्यक्षाणां साभापत्य कार्यवाही समारब्धा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१—विद्यालयानां सम्बद्धताविषये विचारः सम्पन्नः। अधोलिखितानां विद्यालयानां सम्बद्धता स्वीकृता च:—

क—आयुर्वेदगुरुकुलाश्रमं, शिक्षाकेन्द्रं, वुन्डराजवरम्।

ख—बिरला आयुर्वेदशिक्षाकेन्द्रम्, पिलानी।

ग—रामकृष्णसंस्कृतविद्यालयः, नाथद्वारा, केवलं १९५८ वर्षीयपरीक्षापर्यन्तमस्थायिनी सम्बद्धता स्वीक्रियते। स्थायिसम्बद्धताया निर्णयस्तु विद्यालयस्यामूलं निरीक्षणात् परं भवेत्।

२—परीक्षाकेन्द्राणां स्थापनाविषये विचारः सम्पन्नः निश्चयश्च कृतः, यत् अयं विषयः परीक्षासमित्यै समर्पणीयः।

३—सन् १९५८ वर्षीय परीक्षासमितिसंगठनार्थं विद्यापीठाध्यक्षाद् विद्यापीठमन्त्रिणश्चातिरिक्तमेकस्येतरस्य सदस्यस्य निर्वाचने विचारः संजातः, तदर्थं कविराज श्री उपेन्द्रनाथदासः विद्यापीठोपाध्यक्षः १९५८ वर्षीय परीक्षासमितेः सदस्यः सर्वसम्मत्या निर्वाचितः।

४—विचार्यविषयान्तर्गतेषु ४,५,६,७,८ संख्याकेषु विषयेषु समकालमेव विचारः सम्पन्नः। होरात्रयं विचारविनिमयानन्तरं निम्नलिखितः प्रस्तावः स्वीकृतः—

विद्यापीठाधीनतया देहल्यामायुर्वेदमहाविद्यालयस्य प्रतिष्ठापनाविषये कविराज श्री उपेन्द्रनाथदासेन प्रस्तुतः प्रस्तावः—तथैव विद्यापीठाधीनतया महाविद्यालयः स्थापनीय इति सर्वसम्मत्या स्वीकृतः।

अन्यासां संस्थानां दानानां च अन्येषां प्रतिश्रुतानां आदानविषयं निश्चेतुं एकोपसमितिः स्थापिता। अस्याः सदस्या इमे।

सम्मेलनाध्यक्षः, विद्यापाठाध्यक्षः, विद्यापीठमन्त्री चेति त्रयः। कविराज श्री उपेन्द्रनाथदासाः, हापुरनिवासिनः श्री बाबुराममिश्राः, इति आहृत्य पंच।

विचार्यविषयसूचेरवशिष्ठविषयाः आगामिदिवसभाविनि स्थायिसमित्यधिवेशने विचारार्थं प्रेषणीया इति निश्चितम्।

श्री सभापतिमहोदयेभ्यः समागतवैद्यमहानुभावेभ्यश्च धन्यवादं वितीर्य सायं ६-३० मिते काले सभाविसर्जनं जातम्।

वा० बा० नटराजशास्त्री
विद्यापीठाध्यक्षः

वैद्य सीताराममिश्रः
विद्यापीठमन्त्री।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—कुत्र मूत्रं प्रजायते—

(पृष्ठ १६ का शेष)

प्रायः—उदकवाहिभिः स्रोतोभिर्याविज्जलं शरीरं प्रविशति तद् भ्रमति केवलं शरीरं श्वास-मार्गेण स्वेदनमार्गेण च किञ्चिन्निःसरति किन्तु प्रतिष्ठाऽन्तिमसञ्चयो वस्तावेव नान्यत्र कुत्रचिदिति। वृक्कयोः पृथग्भवत्युदकं रुधिरादन्नमलेन सह किन्तु न तत्रोदकसञ्चयो न वाम्बु-वहानां सर्वस्रोतसां प्रतिष्ठा यतः"ष्ठा" धातोर्गतिनिवृत्तिरूपोऽर्थः सन्ततगतिनिवृत्तिरुदकवहानां स्रोतसां वस्तावेव नान्यत्र कुत्रचिदिति ।

एवं प्रतिपादितं यत्--मूत्रे सलिललवणादिकं यद्यद्वस्तु विद्यते तेषां सर्वेषां शरीर-प्रवेशो महास्रोतस एव किन्तु वृक्कयोर्नोत्पद्यते मूत्रं मूत्रस्य घटकं वा किञ्चित् द्रव्यम्। रुधिरान्मूत्रस्य संपूतनयन्त्रभूतौ वृक्कौ नैव मूत्रमुत्पादयतो न वा वृक्कयोर्मूत्रस्य सञ्चयः। महास्रोतस्येव मूत्रस्योत्पत्तिर्वस्तावेव तस्य सञ्चय इति सर्वथा सत्यसिद्धान्तः। तस्मात्

आर्षे हि स्रौश्रुते सूत्रे दोषलेशो न विद्यते।
अर्थबोधस्तु सूत्रस्य यत्नेन महता ध्रुवम्।

———

महर्षि चरक का अपूर्व योग

* ब्राह्म रसायन *

मानसिक शक्ति, स्फूर्ति, उत्साह, बुद्धि, स्मृति ओज
एवं दीर्घायुष्य प्राप्ति के लिए
अत्युत्तम कल्प है।

नवशक्ति आयुर्वेदालय (प्रा.) लि.
भुसावल - जबलपुर - नागपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ ३२ का शेष)

रसायन तक का प्रश्न न हो, इसलिए इन्द्र के कहे ग्राम्य आहार और ग्राम्य जीवन से यथासम्भव अपने को बचाकर प्राकृतिक एवं अत्रि-पुत्र से बताये मुमुक्षु साधन। प्रकृति पुरुष की साम्यता का अनुभव वही आयुर्वेद का दीर्घायु प्राप्त करने का सूत्र है। आयुर्वेद की सच्ची देन, आयु-ज्ञान का सच्चा अर्थ शरीर, इन्द्रिय, मन, आत्मा का ज्ञान है। इन्द्रिय, मन और आत्मा का ज्ञान शरीर के आधीन है; इसी से कालिदास ने कहा "शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्"। आजकल के ज्ञान ने इन्द्रिय, मन, आत्मा को छोड़कर भौतिक-शरीर को ही सीखा-जाना जैसा कि एनोटोमी इस शब्द के अर्थ से ही स्पष्ट है। यह ज्ञान उसी प्रकार का है, जिस प्रकार कि हाथी को पहिचानने में अन्धों में हाथी के जिस ओर को जिसने पकड़ा उसने उसी को हाथी समझा। इसी प्रकार इस शव को चीर कर जो ज्ञान प्राप्त होता है वह शरीर ज्ञान है, आयुर्वेद नहीं। आयुर्वेद तो शरीर के साथ इन्द्रिय, मन और आत्मा का ज्ञान है। इससे कश्यप का यह वचन सत्य है कि जिस प्रकार हाथ में अंगूठा शेष चारों अंगुलियों पर शासन करता है उसी प्रकार आयुर्वेद भी चारों वेदों पर शासन करता है, हाथ में रहता हुआ अंगूठा शेष अंगुलियों से नाम और रूप में भिन्न होता हुआ भी महत्वपूर्ण है उसी प्रकार यह आयुर्वेद शेष वेदों से नाम-रूप में भिन्न होता हुआ भी मुख्य है—उसी की यह संक्षिप्त झांकी है।

———

सचित्र लघु द्रव्यगुणादर्श (द्वितीय परिवर्धित संस्करण)

मूल्य ३॥) डाक व्यय ॥)

निघण्टु (द्रव्यगुण) तथा रस शास्त्र—चिकित्सा में सफलता की कुंजी है। इन दोनों विषयों के तत्कालज्ञानार्थ (Ready Reference) तथा आयुर्वेद की परीक्षाओं में उत्तीर्णता प्राप्त करने के लिए अनुपम ग्रन्थ है। लेखक हैं उक्त दोनों विषयों के अधिकारी तथा परीक्षक विद्वान् कविराज श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री B.A., D Sc.(A) आयुर्वेदाचार्य। आयुर्वेद के सभी विद्वानों द्वारा प्रशंसित।

नोटः—(१) ६ या अधिक पुस्तकों पर डाक व्यय नहीं लिया जाता।
(२) थोक विक्रेताओं को कमीशन।
(३) स्थानीय पुस्तक विक्रेता से प्राप्त करें।

पताः—**आयुर्वेद निकेतन**, १२१, सुपारी बाग रोड, बम्बई १२.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ ८ का शेषांश)

उदर में वायु, अम्लता, अनिद्रा, रक्तालपता, सुस्ती, मस्तिष्क का चकराना, आंत्रों में शोथ आदि रोगों में गाजर का बायोगोल्ड अर्थात् सूखा स्वरस दिया जाता है। (मुरब्बा गाजर व हलवा गाजर का दूसरा रूप है)। कोष्ठबद्धता में पालक का बायोगोल्ड, फोड़ा-फुंसी, मोटापा, एग्ज़ीमा, खारिश, चम्वल आदि में खीरे का बायोगोल्ड। ऐसे ही बायोगोल्ड ... बनाये हैं। (त्रेता युग मे अर्क प्रकाश में जो कुछ लंकापति रावण ने लिखा था उसका कुछ भाग, इस बीसवीं शताब्दी में, इंग्लैंड में प्रकाश में आ रहा है।)

इंग्लैण्ड में वनस्पतियों को कूट पीस कर चूर्ण करके, इसी तरह पर बेचा जाने लगा है, जैसे आयुर्वेदिक फार्मेसियाँ अश्वगन्धादि चूर्ण, तालासादि चूर्ण, त्रिफला चूर्ण, निम्बादि चूर्ण, पुष्यानुग चूर्ण, बिल्वादि चूर्ण, मूसल्यादि चूर्ण, लवण भास्कर चूर्ण, सितोपलादि चूर्ण, सुदर्शन चूर्ण, हिंग्वाष्टक चूर्ण आदि पचास प्रकार के चूर्ण बेचती हैं। इंग्लैण्ड में इन्हें (Herb formulae) के नाम से पुकारा जाता है। इंग्लैण्ड में ऐसे चूर्ण बेचने वाली २४८ दुकाने हैं और अकेले लन्दन में ४५ हैं। यह चूर्णों की बिक्री एण्टी बायोटिक्स, सल्फाड्रग्ज और एस्प्रीन योगों के विरुद्ध खुला विद्रोह है। यूरोप में दिनों दिन होम्योपैथी और प्राकृतिक चिकित्सालयों का प्रसार जीवित प्रमाण हैं कि ऐलोपैथिक औषधियों और चिकित्सा विज्ञान से युरोपियन जनता का विश्वास उठ गया है।

पैरिस के एक स्वास्थ्य संघ की रिपोर्ट है कि प्रति २०० अमेरिकनों में एक व्यक्ति और फ्राँसीसियों में प्रति ३०० में एक व्यक्ति पागल होता है। अमरीका में पागलों के हस्पतालों की भरमार है, अमरीकन मैडिकल जर्नल ने ऐसे ४०-५० हस्पतालों की सूची छापी है।

भारत सरकार के पास ऐसे कोई आंकड़े नहीं जिनसे मालूम हो कि यहाँ पागलों की प्रतिशत संख्या क्या है? और गत वर्षों में उनकी संख्या में कितनी वृद्धि हुई है? पत्रों में जो सूचनायें छपती हैं, उनसे ज्ञात होता है कि गत कुछ वर्षों में सौराष्ट्र और यू० पी० में पागलों की संख्या अधिक बढ़ी है। पत्रों की एक सूचना के अनुसार उत्तर प्रदेश के पागलपन के तीन हस्पतालों में १९५६ में ६३ नवीन रोगी प्रविष्ट हुए। इन तीन पागलखानों में कुल १३६१ रोगियों के लिए प्रबन्ध था, परन्तु गत वर्ष इनमें १९०६ रोगियों को रखा गया। अब एक प्रस्ताव किया जा रहा है कि गोरखपुर में एक और बड़ा पागलखाना खोला जाये ताकि पागलपन के रोगियों को प्रवेश मिल सके।

क्या एक और पागलखाना यू० पी० में खुलने से यू० पी० राज्य के पागलों की समस्या हल हो जायेगी। हमारा उत्तर है नहीं, क्योंकि पागलों की संख्या बहुत अधिक है। यू० पी० में पागलों की संख्या का क्या अनुमान किया जाये इसके लिये प्रताप में प्रकाशित तिः १३-१०-५७ की इस सूचना को पढ़िये।

"पश्चिमी बंगाल में तपेदिक के २ लाख रोगी। पश्चिमी बंगाल के हस्पतालों में केवल ३००० बिस्तर यक्ष्मियों के लिये हैं, वहाँ रोगियों की संख्या २ लाख है, फिर इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिस्तरों में से भी काफी संख्या पुलिस, फौज तथा अन्य आवश्यक सरकारी कर्मचारियों के लिये सुरक्षित है। इस बात की चर्चा कलकत्ता कार्पोरेशन के कौंसलर डा० अमीर बोस ने एक स्कीम में की।

यू० पी० के पागलखानों में भी अवश्य फौज पुलिस और अन्य सर्विसों के लिये सुरक्षित बिस्तर होंगे। और अगर उनमें २००० के लगभग पागलों को रखा गया है तो यू० पी० में लगभग १, ५०,००० पागलपन के रोगी समझने चाहियें और इनमें वह पागल जो थोड़े पागल हैं भी सम्मिलित कर लिये जायें तो यू० पी० में पागल ३००,००० समझने चाहियें। यदि यू० पी० में सभी प्रकार के पागल मिलाकर ३००,००० हों तो समस्त भारत में पागलों की संख्या कितनी है ? इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं। यू० पी० की ही एक अन्य सूचना भी पढ़िये।

यू० पी० ऐसम्बली में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए होम मिनिस्टर ने बताया कि पिछले २८ मास में ४००० व्यक्तियों ने आत्महत्या की है। यह आंकड़े सरकारी हैं। सरकार के ज्ञान के बिना जिन लोगों ने आत्महत्यायें कीं, और उनकी आत्महत्या की सूचना को हैजा व अन्य किसी व्याधि का नाम देकर छुपा दिया गया, यदि वह आंकड़े भी प्राप्त हो सकें तो पागलों की संख्या वृद्धि की यह रोमान्चकारी कहानी है।

अमेरिका में यह पागलपन क्यों बढ़ रहा है, भारत में इसके प्रसार में क्या कारण हैं ? यह समझना कठिन नहीं। वेदनाहर ऐस्प्रीन के योग, सल्फाड्रग्ज तथा विषैले इंजैक्शनों का इसमें बहुत अधिक हाथ है। शुद्ध आयुर्वेद द्वारा ही इस पागलपन से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है और राज्य पागलखाने खोलने के सिरदर्द से बच सकता है। ता० ६-९-५७ को पत्रों में एक सूचना छपी, जो इस प्रकार थी—

"सीलोन रेडियो ने एक युवक की जान ली। चम्बल, गांधी सागर में एक युवक नित्य प्रति सीलोन रेडियो से सुना करता था कि शिर पीड़ा और ज्वर में प्रत्येक ३ घण्टे के बाद.....नाम की टिकियां खाओ दर्द गायब हो जायगा, उस ने ४-५ दिनों में ८० गोलियां खा लीं, इससे उसकी अवस्था बिगड़ गई। यकृत में घाव पड़ गया और हस्पताल में १५० रु० व्यय करने पर भी वह न बच सका।"

एक सीलोन रेडियो क्या, ऐस्प्रीन के योगों के इश्तहार प्रत्येक भाषा के पत्रों में छप रहे हैं। इनके प्रभाव से प्रत्येक व्यक्ति इन आना दो आना के पैक्टों को खरीद कर खा रहा है, एक गांधी सागर का युवक क्या लाखों और करोड़ों की संख्या में लोगों का स्वास्थ्य नष्ट हो रहा है। परन्तु राज्य इनकी रोक-थाम के लिये कुछ नहीं कर रहा।

ऐस्प्रो, अनासीन, ऐस्प्रीन आदि के योग आमाशय के घावों को घटाते हैं। शिर व मूत्राशय की रक्त नलिकाओं से रक्त जारी करते हैं। यह हृद रोग, हाई ब्लड प्रैशर, लो ब्लड प्रैशर, कौरोनरी थ्रम्बोसिज, सब इनकी उपज हैं। स्नायविक रोग और मस्तिष्क के रोग इन ही के प्रयोग से बिगड़ते हैं। नव रोग दबते और कष्ट साध्य रोग उत्पन्न होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

० स्ट्रैप्टोमाइसीन किस प्रकार आठवीं नर्व को खराब करती है। रक्त और कफ जमने से रोगी किन असह्य कष्टों में उलझ जाता है, इसपर अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं। टैरामाइसीन से क्या व्याधियां उत्पन्न होती हैं, इसे भोली भाली भारत की जनता नहीं जानती। जनता एक ही बात जानती है कि नगरों में डाक्टरों की दुकानों और औषधियों में वृद्धि होती जा रही है।

यदि हम ऐलोपैथिक औषधियों के दुष्प्रभावों का वर्णन करें तो पूरी एक किताब लिखी जा सकती है। भारत के नगरों में रोगी संख्या के बढ़ने में ऐलोपैथिक पेटेंटो का बहुत अधिक हाथ है। भारत के स्वास्थ्य विभाग को इस ओर ध्यान देना चाहिये। अगर स्वास्थ्य विभाग चाहता है कि जनता का स्वास्थ्य सुधरे, उसे हस्पतालों की आवश्यकता न रहे तो उसे आयुर्वेद के आरोग्यशास्त्र को स्कूलों में पढ़ाना चाहिये। डाक्यूमैंट्री फिल्मों द्वारा इस आयुर्वेद शास्त्र के प्रभावों को जनता के सामने लाना चाहिये। आयुर्वेद का आरोग्यशास्त्र और आयुर्वेदिक औषधियों में ही वह शक्ति है जिस के द्वारा यह बढ़ते हुये कष्टसाध्य रोग रुक सकते हैं। आयुर्वेदिक रसायने ही जीवन को दीर्घ और रोग रहित बना सकती हैं। कहा जाता है कि महाराणा प्रताप और वीर शिवाजी इन्हीं आयुर्वेद रसायनों का प्रयोग किया करते थे।

—हरिकृष्ण सहगल

औषधियाँ
और
मशीनें

हर प्रकार की विधिपूर्वक विनिर्मित रस, रसायन, आसव, अरिष्ट भस्म, अवलेह आदि औषधियां और औषधि निर्माण संबंधी कुटाई, पिसाई, घुटाई व गोलियाँ आदि बनाने की बिजली तथा हाथ दोनों प्रकार से चलने वाली मशीनें आदि मिलने का एक मात्र विश्वसनीय स्थान—

दयालु फार्मास्युटिकल वर्क्स
बीकानेर
राष्ट्रीय स्वास्थ्य-सप्ताह

प्रताप आयुर्वेदिक फार्मेसी प्रा० लि० के
आशुफलप्रद आयुर्वेदीय इन्जैक्शन

हिमाचल के अंचल देहरादून में सरकार द्वारा लायसैन्स प्राप्त लेबोरेटरी में आयुर्वेदीय औषधों के मूलतत्वों का पूर्ण अनुसन्धान करने के उपरान्त प्राचीन और आधुनिक विज्ञानवेत्ता, सिद्धहस्त वैज्ञानिकों की देखरेख में इन्जैक्शन तैयार किये जाते हैं जो पूर्णतया निरापद विशुद्ध प्रामाणिक हो चुके हैं। प्रत्येक वैद्य का कर्त्तव्य है कि इन आशुफलप्रद पूर्णतया विशुद्ध एवं चमत्कारिक गुणकारी इन्जैक्शनों को प्रयोग में लाकर लाभ उठावें।

प्रताप आयुर्वेदिक फार्मेसी लि०
इन्जैक्शन ब्रांच
१६७ राजपुर रोड़, देहरादून (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्ध एवं शास्त्रोक्त आयुर्वेदीय

औषधियां

शुद्ध एवं उत्तम शास्त्रोक्त विधि से बनी आयुर्वेदिक औषधियां रस, भस्में, वटी, अवलेह, पाक, चूर्ण, घृत, कूपीपक्व रस तथा खनिज द्रव्य, वज्राभ्रक, मुक्ता, शंख, सीप, स्वर्ण माक्षिक, प्रवाल, शुद्ध शिलाजीत, केशर, कस्तूरी, अम्बर व दुर्लभ वनस्पतिवर्ग जैसे अष्ट वर्ग, प्रियंगु, सर्पगन्धा, त्रायमाण आदि खरीदते समय निम्न पते पर पत्र व्यवहार अवश्य करें।

विशेष जानकारी के लिये वृहद् सूची पत्र मंगवायें।

हमारी औषधियों का व्यवहार कर आप सदैव के लिये हमारे स्थाई ग्राहक बन जायेंगे।

देशरत्नक औषधालय

कनखल (हरिद्वार)

यू० पी०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद लोक

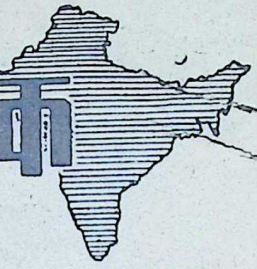

बिहार प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन

संयुक्त समितिके प्रस्ताव

बिहार प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन की स्थायी समिति तथा कार्यकारिणी समिति की संयुक्त बैठक गत २१ दिसम्बर, शनिवार को ८ बजे रात्रि में मखदुमपुर (गया) में प्रतिनिधिवासस्थान एच० ई० स्कूल में सम्मेलन के सभापति श्री वैद्यनाथ मिश्र, शास्त्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। सरकार ने १ अप्रैल १९५७ ई० से "मेडिसिन एण्ड टायलेट प्रिपरेशंस एक्साइज ड्यूटीज" एक्ट १९५७ के नाम से एक कानून प्रचलित कर सम्पूर्ण भारत में आयुर्वेदीय आसव-अरिष्टों पर जो प्रतिबन्ध लगाया है, उस पर अत्यन्त क्षोभ प्रगट करते हुए सरकार से अनुरोध किया गया कि वह आसव-अरिष्टों के निर्माण पर लगाये गये प्रतिबन्ध को अविलम्ब हटाले क्योंकि मद्य के अन्तर्गत आयुर्वेदीय आसव अरिष्ट नहीं आ सकते। कच्चे पानी में या किसी द्रव्य के क्वाथ में रोगनाशक औषधियां डालकर जो औषधि प्रस्तुत की जाती है, उसे ही आसव-अरिष्ट कहा जाता है, जैसे कुमार्यासव, द्राक्षारिष्ट, कुटजारिष्ट आदि। इस विधि से तैयार की गई औषधि गुण में अधिक प्रभावकारी और टिकाऊ हो जाती है। किसी भी आसव-अरिष्ट में मद्य के समान नशा नहीं होता। ऐसी दशा में इन्हें मद्य की श्रेणी में लाना आयुर्वेद के प्रभाव और प्रचार पर रुकावट डालने जैसा है, यह जनता के साथ घोर अन्याय और वैद्यकेके साथ जबर्दस्ती है।

बैठक में निश्चय किया गया कि गत अप्रैल मास में खगड़िया में सम्पन्न बिहार प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन के २० वें अधिवेशन में पारित प्रस्ताव पुस्तिकाके रूप में प्रकाशित कराकर उन्हें आगामी बजट अधिवेशन के पूर्व ही विधायकों में वितरित किया जाय और उनके द्वारा इन प्रस्तावों के शीघ्र कार्यान्वयन के लिए सरकार पर जोर डाला जाय।

यह भी निर्णय किया गया कि बिहार प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन के प्रतिनिधि निर्वाचन के लिए मोती-झील, मुजफ्फरपुर कार्यालय से प्रेषित सदस्य सूची को बिहार राजकीय गजट में यथा शीघ्र प्रकाशित कराने के लिए बिहार राज्य आयुर्वेद युनानी कौंसिल के सभापति जस्टिस श्री वशिष्ट नारायण राय से अनुरोध किया जाय कि वे प्रतिनिधि निर्वाचन के लिए उचित कार्रवाई करें। बिहार प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन की वास्तविक परिस्थिति से परिचित कराने के लिए एक प्रतिनिधि मण्डल श्री वैद्यनाथ मिश्र, शास्त्री के नेतृत्व में चिकित्सा मंत्री श्री वीरचन्द पटेल के पास भेजने का निश्चय किया। निश्चय किया गया कि सदस्यों को वैद्य सम्मेलन तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद की रीति-नीति से परिचित रखने के ध्येय से बिहार प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन का एक त्रमासिक मुखपत्र १९५८ से प्रकाशित किये जाए। बिहार प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन के संविधान नियमावली के निर्माण के लिए श्री जगदीश नारायण शर्मा, प्रधान सचिव के संयोजकत्व में एक उपसमिति का निर्माण किया गया। बिहार प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन के मोहनियां (शाहाबाद) में आगामी मार्च मास में होने वाले २१ वें वार्षिक अधिवेशन के सभापति का निर्वाचन कार्य सम्पन्न करने के लिए एक निर्वाचन समिति का निर्माण किया गया और उसे सभापति का निर्वाचन सम्पन्न करने के लिए पूर्ण अधिकार दिया गया।

राजस्थान में आयुर्वेद का श्री गणेश

राजस्थान राज्य द्वारा राजकीय आयुर्वेद विभाग के आधीन शीघ्र ही जनवरी में आयुर्वेद अनुसंधान का श्री गणेश हो रहा है। इस योजना के अन्तर्गत स्नायुक (नेहरू) तथा बाल पक्षाघात रोग पर अनुसंधान का निश्चय किया गया है। योजना के प्रारंभ हेतु केन्द्रीय सरकार ने चालू वित्तीय वर्ष में प्रथम अनुदान स्वरूप ४०,०००) रु० चालीस हजार रुपया प्रदान किया है। अनुसंधान के लक्ष्य को पूर्ण करने हेतु द्वितीय पंच-वर्षीय योजना में तीस लाख की धन राशि रखी गई है जिसका उपयोग चार रोगों के अनुसंधान पर होगा।

इस अनुसंधान शाला का सम्बन्ध राज्य के चलने वाले आयुर्वेदिक कालेजों से रहेगा और प्रत्येक रोग पर १०-१० शैयाएं होंगी। शाला की विस्तृत योजना तैयार हो चुकी है और संम्भवतः इसका उद्घाटन राज्य के मुख्य मन्त्री जी करेंगे। योजना की सफलता के हेतु राज्य आयुर्वेदांविभाग के संचालक, वैद्य प्रेम शंकर जी भिषगाचार्य पूर्ण प्रयत्नशील है।

इस योजना के सम्बन्ध में एक वक्तव्य देते हुए राजस्थान प्रदेश वैद्य सम्मेलन के प्रचार मंत्री वैद्य मिश्री प्रसाद शास्त्री ने इस बात की ओर संकेत किया है कि आयुर्वेद अनुसंधान का यह कार्य अति असाधारण और महत्वशाली है जिसमें नितांत सतर्कता और जागरूकता की आवश्यकता रहेगी। भारत में बनारस, त्रिवेन्द्रम्, जामनगर, बम्बई, लखनऊ, हैदराबाद आदि स्थानों पर होने वाले आयुर्वेद अनुसंधान की चर्चा करते हुये शास्त्रीजी ने कहा कि इन स्थानों में चलने वाली अनुसंधान योजनाओं का कोई खास परिणाम अभी तक प्रकाश में नहीं आया है।

शोक समाचार

वैद्य समाज में यह समाचार बड़े दुःख के साथ सुना जायगा कि विद्यापीठ के माननीय अध्यक्ष वैद्यराज श्री वी० बी० नटराज शास्त्री जी तथा विद्यापीठ मंत्री श्री पं० सीताराम मिश्रजी की माताएं गत दिसम्बर मास में इस नश्वर संसार को त्याग कर परलोकवासी हो गईं। श्री शास्त्री जी एवं श्री मिश्र जी के इस महान् शोक में हम हृदय से उनके साथ हैं और पत्रिका परिवार की ओर से संवेदना और सहानुभूति प्रकट करते हुए भगवान् धन्वन्तरि से प्राथना करते हैं कि उन्हें इस महान् आघात को सहन करने की शक्ति एवं दिवंगत आत्माओं को चिरशान्ति प्रदान करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतः राजस्थान के अनुसंधान कार्य को अधिक क्रियाशील बनाना आवश्यक और अनिवार्य है ताकि भारत में प्रचलित आयुर्वेद विज्ञान के विवाद सम्बन्धी प्रश्न को अधिक सतर्क वैज्ञानिकतापूर्वक निपटाया जा सके। इस कार्य में अपने विभाग के अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि राजस्थान में विद्वान वैद्यों और क्रियाशील चिकित्सकोंका सहयोग रहा और अनुसंधान का कार्य विधि पूर्वक अच्छे तरीके से किया गया तो सफलता निस्सन्देह है।

आपने विभाग के संचालक से आशा की कि वे इस कार्य को अति सतर्कता और सहयोग से करेंगे जिससे राजस्थान के कार्यों की उज्ज्वल परम्परा आयुर्वेद के अनुसंधान द्वारा भी अन्य स्थानों के लिए प्रेरक बन सके।

किशनलाल जालान धर्मार्थ औषधालय की रजत जयन्ती सम्पन्न

किशनलाल जालान धर्मार्थ अस्पताल भिवानी एवं किशनलाल जालान धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय मालाड (बम्बई) का रजत जयन्ती समारोह दिसम्बर १९५७ में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कार्य-विवरण पुस्तिका द्वारा अस्पताल के द्वारा दो वर्ष की सेवाओं पर प्रकाश डाला गया।

भिवानी का अस्पताल १९३३ और बम्बई का १९४९ में संस्थापित किया गया था। भिवानी अस्पताल को चालू हुए २५ वर्ष होने को आए। इस अवधि में इस अस्पताल से लाखों रोगियों ने स्वास्थ्य लाभ उठाया,

श्री सी० पी० एन० सिंह राज्यपाल पंजाब, श्री जगजीवन राम केन्द्रीय रेल्वे मंत्री, श्री राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन, राजकुमारी अमृतकौर, ज्ञानीगुरुमुखसिंह मुसाफिर आदि सम्भ्रांत व्यक्ति इस अस्पताल को अब तक देख चुके हैं और भूरि-भूरि की है।

ग्राम्य ज्योति-केन्द्र सरदारशहर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

ग्राम ज्योति केन्द्र सरदारशहर का तृतीय वार्षिकोत्सव २८ दिसम्बर १९५७ को राजस्थान के मुख्य मंत्री श्री मोहन लाल सुखाडिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

यूनानी, आयुर्वेदीय वनौषधि और खनिज द्रव्य सस्ते मूल्य पर शुद्ध व उत्तम

हमारी दुकान से दुर्लभ केसर, कस्तूरी, विविध प्रकार की काष्ठौषधि, मुक्ता, सीप, शंख, शुद्ध शिलाजीत, सुवर्ण-माक्षिक, प्रवाल, पारद, गंधक आदि सब प्रकार के खनिज तथा वनौषधि द्रव्य थोक व परचून भाव पर प्राप्य

हमारी विशेषता-वास्तविक और शुद्ध सामान

विस्तृत विवरण के लिए पत्रव्यवहार करें और बड़ा सूचीपत्र मंगवायें।

तार का पता : आयुर्वेद फोन : ३१७९६

पता : शा० जादवजी लालूभाई एण्ड को०
२४५, कालवादेवी रोड़, बम्बई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

079409

अमृतसर वैद्य मण्डल के पदाधिकारी

वैद्य मण्डल अमृतसर का वार्षिक चुनाव वैद्य विष्णुदत्त जी की प्रधानता में २९-१२-५७ को हुआ। प्रद्युम्नसिंह धर्मार्थ औषधालय के निम्न वैद्य सर्व सम्मति से १९५८ के लिए पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान—वैद्य देवराज शास्त्री,

उपप्रधान—वैद्य मदनमोहन पाठक, आयुर्वेदाचार्य, शास्त्री प्रभाकर, और वैद्य धर्मचन्द आयुर्वेदाचार्य, प्रधान मन्त्री—वैद्य बाबूराम शर्मा, बी० ए० वैद्य विशारद, प्रभाकर, उपमन्त्री—वैद्य देसराज, बी० ए० कविराज, कोषाध्यक्ष—वैद्य जैदेव प्रभाकर, आय-व्यय निरीक्षक—वैद्य ज्ञानचन्द्र जोशी कविराज।

दिल्ली में विद्यापीठ मंत्री श्री सीताराम मिश्र का सम्मान

५ दिसम्बर १९५७ को दिल्ली की विभिन्न संस्थाओं की ओर से पं० सीताराम मिश्र आयुर्वेदाचार्य मन्त्री नि० भा० आ० विद्यापीठ का सम्मान किया गया। इस अवसर पर एक मान पत्र भी दिया गया।

इस स्वागत समारोह की अध्यक्षता दिल्ली के वयोवृद्ध वैद्य पं० मनोहरलाल ने की। वैद्य श्री घनानन्द पन्त, कवि०उपेन्द्रनाथ दास वैद्य श्री केदार नाथ आदि ने मिश्र जी के कार्य कलाप की प्रशंसा की। और कहा कि मिश्र जी विद्यापीठ को उन्नति की ओर ले जा रहे है।

मान पत्र का उत्तर देते हुए मिश्र जी ने कहा कि यह सम्मान मेरा नहीं विद्यापीठ का है। यदि ईश्वर की कृपा रहे तो शीघ्र ही विद्यापीठ की ओर से दिल्ली में एक आयुर्वेद महाविद्यालय की स्थापना की जायेगी।

नवरत्न रस

स्त्री, पुरुष और बालकों के लिये महौषधि

यह नवरत्न रस हीरा, पन्ना, मोती, माणिक आदि नौ रत्नों की भस्म और सुवर्ण आदि के संयोग से तैयार किया जाता है। शरीर में स्थित रस, रक्त आदि धातुओं की उत्तरोत्तर वृद्धि और पोषण तथा वीर्यधातु की शुद्धि और पुष्टि करना इसका विशिष्ट कार्य है। शुक्र स्थान को पुष्टि मिलने से वीर्य में स्थित निर्बलता दूर होकर नपुंसकता, क्लैव्य, ध्वजभंग, वीर्यपात, स्वप्नदोष आदि नष्ट होते हैं और शरीर नवयौवन प्राप्त करता है।

यह गर्भावस्था में पांडु, रक्त की कमी, हाथ और पैरों में शोथ तथा श्वास आदि रोगों की उत्पत्ति को रोकता है। अल्पसत्वयुक्त प्रजा होती हो या बालक जन्मते ही मर जाता हो तो नवरत्न रस प्रथम मास से प्रसव काल तक सेवन कराने से प्रसव सुख पूर्वक होता है। बालक भी तन्दुरुस्त जन्मता है। इसके सेवन से अकाल प्रसूति और रक्तस्राव नहीं होता।

इसके उपरांत किसी भी कारण से पांडु, क्षय, जीर्णज्वर, कास, श्वास, वातव्याधि, मधुमेह, रक्तस्राव, मगज की निबलता, वीर्यविकार आदि में बाल, वृद्ध, युवा, स्त्री, पुरुष सबको नवरत्न रस देने से शक्ति प्राप्त होती है। निरोगी शरीर के लिये यह रसायन है रोगी शरीर के लिये औषध।

मूल्य २८ गोली का रु. ५), तोला १०)

ऊंझा फार्मेसी ऊंझा

ऊंझा (उ० गु०).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेत्रों की अनेक व्याधियों और नेत्रों की सुरक्षित रखने के लिये

श्री हरि
जीवदया
नेत्रप्रभा
रजिस्टर्ड

अत्यंत लाभदायक है

नेत्रप्रभा—नेत्रकण्डु, कुकरे, धुन्ध, जाला, फूली, नेत्रस्राव, लाली रतोंधी, नेत्रों का दुखना, कम दिखाई देना, आदि के लिए अनुपम है।

जीवदया नेत्रप्रभा—अधिक परिश्रम, वेल्डिंग, गाड़ी चलाना, धुआँ, सिनेमा, लिखना-पढ़ना, धूप, टाइफाइड, सूर्यावर्त और जागरण के कारण होने वाले सिर दर्द और आँखों के दर्द में लाभदायक है। सोते समय अंजन करने से बढ़िया नींद आती है। दिमाग स्फूर्ति पाता है।

नेत्रप्रभा—की बड़े-बड़े वैद्य डाक्टर, विख्यात संस्थाओं, संत महात्माओं तथा समा-प्रचार पत्रों ने प्रशंसा की है। जैसेः—श्री बंबई आयुर्वेद चिकित्सक मंडल, सूरत वैद्य सभा, श्री राजकुमार सिंह आयुर्वेद कालेज इन्दौर। राज कोट के ग्रामों में आयुर्वेदिक बक्स में इसे स्थान प्राप्त हुआ है।

नेत्रप्रभा—नित्य व्यवहार से कोई हानि नहीं होगी—बालक तथा वयस्क दोनों ही दिन में एक से तीन बार दर्द के अनुसार इसे लगा सकते हैं। अधिक विवरणके लिये लिखिये—

जीवदया नेत्रप्रभा कार्यालय
(निर्माताः—आर. एम. शाह)
जूनी विक्टोरिया मिल्स कम्पाउण्ड,
गांमदेवी रोड, बंबई ७

सभी जानते हैं

प्रामाणिक वस्तुओं का उचित मूल्य पर
मिलने का एकमात्र स्थान

नेपाली ड्रग्स

२१२, बड़गादी, बम्बई-३

- नेपाली कस्तूरी
  जंगबारी अम्बर
- बसरा मोती
- स्पेन केसर
- सूर्यतापी शिलाजीत
- विशुद्ध गोरोचन

के अतिरिक्त

प्रवाल शाख, प्रवाल मूल, प्रवालकांडी, बंसलोचन, भीमसेनी कपूर, जहर-मोरा खटाई, केहरुवा, जुन्द वेदस्तर, हरडें, अकीक, सीप, कौड़ी, शंख, शिंगरफ, वर्की हड़ताल तथा सब प्रकारकी खड़ें (जवाहिरात) आदि।

विशेष विवरण के लिये सूचीपत्र मंगाएँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय का परिशिष्ट

८-११-५७ की स्थायी समिति की सभा में उपस्थिति का यथार्थ विश्लेषण

स्थायी समिति के कुल १२० सदस्य सभा में उपस्थिति हुये, जिनमें से ५८ सदस्य दिल्ली के थे, जिनके बाहर से आने का प्रश्न ही नहीं उठता और जो प्रायः दिल्ली की सभाओं में भाग लेते ही हैं। ६ महानुभाव महासम्मेलन-विद्यापीठ के दिल्ली से बाहर के प्रमुख पदाधिकारी थे जिनके निर्देशानुसार स्थायी समिति के अधिवेशन का आयोजन किया गया था और जिन्होंने अपने पदाधिकार और कर्तव्य से बाध्य होकर इस सभा में भाग लेना ही था। संदर्भाधीन झांसी के पत्रक ता० १०-१२-५७ के लेखानुसार पेप्सू और इर्द-गिर्द के ३१ व्यक्ति श्री पं० शिवशर्मा जी द्वारा "पटियाला से तदर्थ लाये गये" थे। पं० शिवशर्मा जी द्वारा वे लाये गए होंगे, हम ऐसा नहीं मान सकते क्योंकि श्री कान्तिनारायण मिश्र तथा वैद्यराज श्री मुंशीराम जी, भटिण्डा, जैसे व्यक्ति किसी के आग्रह पर आने वाले नहीं और दूसरे मतदान में उनकी स्वतन्त्रता ही इस बात का प्रमाण है कि वे अपने अधिकार और कर्तव्य से बंधे हुये ही सदैव की भांति वहाँ पधारे न कि किसी के खैंचने से। सबसे अधिक स्पष्ट बात यह है कि कम से कम झांसी के लेखक ने पटियाला के लोगों को तो बुलाया ही नहीं था। कटक के वैद्य श्री बनमाली दास निखिलोत्कल वैद्य सम्मेलन के प्रधानमन्त्री के नाते ४३ वें अधिवेशन को श्री जगन्नाथपुरी में करने का निमन्त्रण लेकर पधारे थे। भूतपूर्व विद्यापीठाध्यक्ष श्री पं० मणिराम जी शर्मा, रतनगढ़, अपनी इस संस्था को अपना अमूल्य "धन्वन्तरि मन्दिर" भेंट करने के लिये उपस्थित हुये थे और पधारने के लिये उन्हें विशेष पत्र भी लिखा गया था, इसी विषय को लेकर २९ अक्तूबर की भी एक अनौपचारिक सभा में दिल्ली में वे पधारे थे। आयुर्वेद पितामह श्री पण्डित जगन्नाथप्रसाद जी शुक्ल, प्रयाग, को श्री विद्यापीठ मन्त्री तथा श्री विद्यापीठोपाध्यक्ष ने एक्सप्रेस डाक द्वारा प्रेषित विशेष निमन्त्रण देकर पधारने की प्रार्थना की थी। श्री स्वामी जयरामदास जी, जयपुर, श्री स्वामी मंगलदास जी, जयपुर, श्री विरंची लाल जी शर्मा, इस्लामपुर, श्री कृष्णगोपाल जी, बारां, आचार्य श्री नित्यानन्द जी, पिलानी, श्री देवराज जी शास्त्री, अमृतसर, आदि महानुभाव दिल्ली में होने वाले अधिवेशनों में प्रायः भाग लेते ही हैं और किसी के खैंचने से वे आने वालों में से नहीं हैं। यदि कोई सन्देह हो तो उनसे पूछा भी जा सकता है कि क्या वे किसी व्यक्ति विशेष के कहने से इस सभा में पधारे थे। विद्यापीठ के भूतपूर्व अध्यक्ष और मन्त्री श्री पं० दुर्गादत्त जी शास्त्री, बनारस, और उत्तरप्रदेशीय वैद्य सम्मेलन के प्रधानमन्त्री वैद्य श्री अमरनाथ जी शास्त्री, देहरादून, आगे भी समय २ पर दिल्ली की सभाओं में भाग लेते रहे हैं और वे संस्था के निमन्त्रण के अतिरिक्त किसी अन्य के निवेदन पर आये हों यह भी मान्य प्रतीत नहीं पड़ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यापीठ के बैंक अकाउण्ट के भूतपूर्व संचालक वैद्य श्री सागरदत्त जी, हरिद्वार, की विद्यापीठ के आधीन महाविद्यालय की स्थापना में विगत ४ वर्ष से विशे रुचि रही है, अतएव वे दिल्ली पधारे। श्री लक्ष्मीनारायण जी मिश्र, मेरठ, विशेषतया और गाजियाबाद के श्री लक्ष्मीनारायण जी तथा श्री लीलाधर जी साधरणतया दिल्ली के समीप [illegible] के कारण स्थायी समिति की सभा में प्रायः पधारते हैं। श्री चिमनलाल शर्मा, रतनगढ़, [illegible] हैं ५७ को ही आजीवन सदस्य बने हैं और सभा में पधारने के लिए झांसी वाला निवेदन उन्हें मिला ही नहीं था। वैद्य श्री कमलाप्रसाद मणि त्रिपाठी, पटना, भी दिल्ली तथा दूरवर्ती स्थानों के अधिवेशनों में समय २ पर पधारते रहे हैं। वैद्य श्री कन्हैयालाल जी भेड़ा, तथा वैद्य श्री प्यारेलाल जी शर्मा, बम्बई, भी समय समय पर स्थायी समिति की सभाओं में भाग लेते हैं। इसी प्रकार वैद्य श्री रमेशचन्द्र व्यास, अजमेर, श्री रामप्रकाश स्वामी, जयपुर, श्री रामप्रसाद यादव, छपरा, श्री रामजीलाल शास्त्री, फिरोजाबाद, तथा श्री रामकिशोर शर्मा, जयपुर, भी साधारणावस्था में ही संस्था के सम्मानित सदस्यों के नाते अपने अधिकार से सभा में पधारे होंगे, हम तो यही मान सकते हैं क्योंकि हम तो किसी भी सदस्यको किसी अन्य द्वारा बंधा हुआ नहीं मानते। यदि हम ऐसी अनुचित बात मान लें तो यह तो हमारे सदस्यों की स्वतन्त्रता और बुद्धि का घोर तिरस्कार होगा क्योंकि आखिर सभी विद्वान हैं, चिकित्सक हैं, लोगों की नाड़ियां पहिचानने वाले हैं। अब इन १२० महानुभावों में से शेष रहे—बम्बई निवासी एक वैद्यरत्न श्री पं० शिवशर्मा जी। वे झांसी के लेखक महानुभाव के "निवेदन" पर दिल्ली की सभा में पधारे होंगे अथवा अपने आप ही, इसका निर्णय हमारे सुयोग्य पाठकगण स्वयं करें। वैसे उनको तो कविराज श्री कुन्दनलाल जी खेतल के ही चार निमन्त्रण थे—एक सद्भावना सम्मेलन के लिए, दूसरे प्रीतिभोज के लिए, तीसरे प्रेस कान्फ्रेन्स के लिए और चौथे सार्वजनिक आयुर्वेदिक भाषण के लिए जो दिल्ली की प्रसिद्ध पब्लिक लाइब्रेरी में हुआ। और सभी अन्य निमन्त्रण तो उनको थे ही।

इस प्रकार हमारे झांसी के लेखक महानुभाव देखेंगे कि स्थायी समिति का शायद ही कोई एक-आध सम्मानित सदस्य उनके "निवेदन" से दिल्ली पधारा होगा और उनका (झांसी के लेखक का) यह समझ लेना कि उनके निवेदन से इतने लोग दिल्ली पधारे एक महान् भ्रम है।

—प्रधान सम्पादक

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नम्र निवेदन

अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन की स्थायी समि
के दिल्ली के अधिवेशन में एक ऐसे स्थानीय आदर्श आयुर्वेद म
का निर्णय किया गया है जिसमें अध्यापन के साथ साथ चिकि
विद्यालय से आयुर्वेद जगत में एक महान् अभाव की पूर्ति होग
धन और वैद्य-महानुभावों के हार्दिक सहयोग की परम आवश्य
दानी महानुभावों से मैं सम्मेलन के प्रतिनिधि रूप से विनम्र
महानुभाव इस कार्य को सफल बनाने के लिये शक्ति के अनुसार
अपनी उदारता का सच्चा परिचय दें। आपका धन अध्यापन कार्य
परिचर्या में लगाया जायगा, जिससे आपको ऐहलौकिक और पारलौकि
पुण्य की प्राप्ति होगी।

धन, मन्त्री, निखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद विद्यापीठ, महालक्ष्मी मार्केट, दिल्ली, के पते पर भेजें।

वैद्य महानुभावों से भी प्रार्थना है कि स्वयं भी श्रद्धापूर्वक दान दें और अन्य सज्जनों से भी दिलायें।

भवदीय
अनन्त त्रिपाठी शर्मा
सभापति
अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन

विनीता प्रार्थना

अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद महासम्मेलनस्य स्थायिसमित्या गते, २८-११-५७ दिवसस्याधिवेशने देहल्यामादर्शस्थानीयमायुर्वेदविद्यालयमेकं स्थापयितुं निर्णयः कृतो वर्तते। अध्यापनेन साकं चिकित्सा अपि क्रियेत। विद्यालयेनानेन स्थापितेन आयुर्वेदजगतः सुमहान् अभावः प्रतिक्रियेत। एतदर्थं सुमहदर्थजातं महानुभावानां वैद्यमहोदयानां च हार्दिकी सहानुभूतिरपेक्ष्यते। अतोऽहं तत्र भवतां वदान्यवराणां पुरतो महासम्मेलनस्य प्रतिभूरूपेण विनीतां प्रार्थनामुपस्थापयामि—ते कार्यमिदं साधयितुं यथाशक्ति आर्थिकसाहाय्यं वितीर्य चरितार्थयन्तु। विनियुक्तश्चार्थो ऽध्यापनायामातुराणाञ्च रोगनिवृत्तये साधु उपयुज्यमानः दातृणामैहिकामुष्मिकपुण्यजाताय सम्पद्येत। दित्सितमर्थमधोलिखितसंकेतेन प्रेषयन्तु—

मन्त्री—निखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद विद्यापीठ, महालक्ष्मी मार्केट, चांदनी चौक, दिल्ली।

वैद्यमहोदया अपि अर्थदाने दापने च बद्धश्रद्धा भवेयुरिति सप्रश्रयमाशास्ते।

तत्रभवतामाश्रवः
अनन्त त्रिपाठी शर्मा,
अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन सभापतिः

Editor-in-Chief—Swami Chetnanand.
अ० भा० आयुर्वेद महासम्मेलन के लिए कविराज स्वामी चेतनानन्द द्वारा प्रकाशित
मुद्रक—नया हिन्दुस्तान प्रेस, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यापीठ के बैंक अकाउ
पीठ के आधीन महाविद्याल
वे दिल्ली पधारे। श्री लक्ष्
लक्ष्मीनारायण जी तथा श्री
स्थायी समिति की सभा में प्र
५७ को ही आजीवन सदस्य
मिला ही नहीं था। वैद्य श्र
स्थानों के अधिवेशनों में
वैद्य श्री प्यारेलाल
लेते हैं। इसी प्रकार
रामप्रसाद यादव,

परिणाम
खोज का आश्चर्यजनक
परिणाम

खोज का क्रम आज नया नहीं-किन्तु युग युगान्तर
चला आ रहा है। खोजके ऊपर किसी कवि के ये शब्द स्व
क्षरोंमें लिखे हुए हैं कि :-"जिन खोजा तिन पाइयां
पानी पैठ" त्रेतायुग में जब रावण के लड़के मेघन
शक्तिबाण से श्री लक्ष्मणजी मूर्च्छित पड़े हुए थे और
चन्द्र जी की व्याकुलता का अन्त नहीं था, उस समय ल
णजीमें पुनः जीवन लानेके लिये हनुमान जी को सञ्जीव
बूटी की खोज में जाना पड़ा था। हनुमान जी अपनी खोज में सफल हुए। परिणाम स्व
लङ्का के युद्धमें श्रीराम लक्ष्मण की विजय हुई।

आज का यह वैज्ञानिक युग भी मानवता और रोगों के
महायुद्ध में, रोग द्वारा त्रस्त मानव को मुक्त करने के लिये नयी नयी खोज में लगा
है और अपनी खोज में सफल हो नये अन्वेषणों द्वारा
मानवजाति की रक्षा में सफल होता जा रहा है।

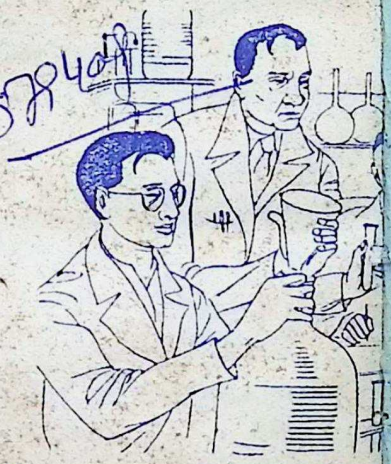

डाबर कार्यालय भी गत ७२ वर्षों से सऔषध
सेवारत हो लगातार खोजों द्वारा आयुर्वेदिक, पेटेण्ट
दवाओं के निर्माण क्षेत्र में दूसरों का पथ प्रदर्शक
बनता जा रहा है। डाबर कार्यालय की बनी हुई आयु-
र्वेदिक तथा पेटेण्ट दवाएं इत्यादि आज जिस प्रकार
लोकप्रिय बनी हुई हैं उसका एक मात्र कारण है-
डाबर कार्यालयका निरन्तर खोज का परिणाम। साथ
ही स्वच्छता और सर्वाङ्ग पूर्णता से औषध निर्माण
की क्रिया !! इसी खोज के परिणाम स्वरूप डाबर कार्यालय आज भारतीय जनता के सम
औषध निर्माण करने वाला एक श्रेष्ठ कार्यालय बना हुआ है।

डाबर (डा॰ एस॰ के॰ बर्मन) लि॰ कलकत्ता-२९
अपूर्व गुणकारी आयुर्वेदिक तथा पेटेन्ट दवाओं के निर्माता
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

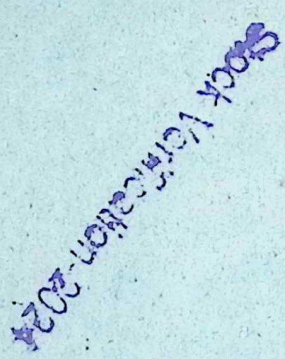

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2008

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar